कलकत्तेका चमत्कार

मनुबहन गांधी



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद



लेखिका बापूके साथ

कलकत्तेका चमत्कार



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

पहली आवृत्ति २०००, १९५२
पुनर्मुद्रण ३०००, १९५६

अेक रुपया

जुलाओी, १९५६

प्रकाशकका निवेदन

श्री मनुबहन गाधी दिसम्बर १९४६ मे गाधीजीके साथ जुडी और अन्त तक — यानी ३० जनवरी १९४८ तक — अुनकी शिष्याकी तरह अुनके साथ रही। यह सारा समय हमारे राष्ट्रके और गाधीजीके जीवनमे कितना महत्त्व रखता है, यह कहनेकी जरूरत नही। अिस अर्सेमे कुछ समय तो केवल श्री मनुबहन ही गाधीजीके साथ थी। अुन्होने अिस समयकी डायरी रखी है। अुनकी शिक्षाके अेक भागके रूपमे गाधीजी अुनसे डायरी लिखवाते और रोज अुसे पढकर नीचे सही कर देते थे। अिस तरह यह डायरी अुस समयके गाधीजीके कामकाजकी, दिनचर्याकी और अुनके मनोमथनकी अनोखी नोध कही जा सकती है। अिसमे से कुछ भाग टुकडो-टुकडोमे गुजराती पत्रोमे छपा है। और 'बापू — मेरी मा' नामसे कुछ भाग पुस्तक रूपमे भी सस्था द्वारा प्रकाशित किया गया है। अिस दूसरी पुस्तकमे ता० १–८–'४७ से ८–९–'४७ तककी डायरी आ जाती है।

डायरीका यह भाग क्रमश 'शिक्षण अने साहित्य' नामक गुजराती मासिकमे छपा था। अुसे पुस्तक रूपमे देते समय विशेष अितना ही किया गया है कि प्रकरणवार जमाकर अेक नाम दे दिया गया है।

नोआखालीसे गाधीजी काश्मीर गये। वहासे अुन्हे फिर नोआखाली जाना था। अिसलिअे वे काश्मीरसे वहा जानेके

लिअे रवाना हुअ। अिस पुस्तककी वस्तु यहीसे शुरू होती है। कलकत्ता पहुचते ही वहाकी हालत देखकर गाधीजीको रुक जाना पडा, नोआखाली जाना बन्द रहा। अीश्वरकी गति न्यारी है · पूर्वमे जानेके बजाय पश्चिममे पजाब जानेकी परिस्थिति खडी हुअी। अिसलिअे पजाब जानेके लिअे गाधीजी ७ सितम्बरको कलकत्तेसे रवाना हुअे। दिल्ली पहुचे। वहा जानेके बाद पजाब जाना रहा सो रही गया, और ३० जनवरी १९४८ को वे दिल्लीमे ही शहीद हुअे। दिल्लीके अिस निवासकी डायरी पिछले कुछ समयसे 'शिक्षण अने साहित्य' मे छप रही है। डायरीका यह भाग भी आगे पुस्तक रूपमे देनेका विचार है। यह चीज अब सबको दीयेकी तरह स्पष्ट हो जानी चाहिये कि भारत और पाकिस्तानका भविष्य कौमी अेकता और मित्रता पर ही आधार रखता है। दोनो देशोके सुख-शातिकी कुजी अिसी अेकता और मित्रतामे है। अिस कुजीको प्राप्त करनेका मत्र सिखानेवाली गाधीजीकी जीवन-यात्राका वर्णन अिस डायरीमे दिया गया है। यह चिरकाल तक मननीय सिद्ध होगी, अिसी आशासे अुसे पुस्तक रूपमें यहा दिया गया है।

१५–२–'५२

अनुक्रमणिका

कलकत्तेका चमत्कार

१

काश्मीर-यात्रा

शुक्रवार, १–८–’४७

३-४५ को प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद बापूने कुछ लिखा और ५-१५ को रावलपिंडीसे मोटरमें श्रीनगरके लिअे रवाना हुअे। सारा रास्ता हरियालीसे भरपूर था। कहीं भी गरमीका नाम नहीं था। सडकके दोनों किनारों पर लगे हुअे बडे-बडे पेड़ोंके बीचमें बापूकी मोटर गुजर रही थी। बापू पहली ही बार काश्मीर जा रहे थे। और रास्ता अैसा घुमावदार था कि ड्राअिवरको बहुत ही सम्हालकर गाडी चलानी पड़ती थी। रास्ता कहीं अूंचा था, कहीं नीचा और दोनों ओरके हरेभरे पेड़ ज्यों-ज्यों मोटर आगे बढती थी त्यों-त्यों अपने पत्ते हिलाकर अुससे पैदा होनेवाले संगीतसे मानों बापूका स्वागत करते थे। बारह बजे हम रामपुर गांवमें थोड़ी देर ठहरे। यहां नहा-धोकर बापूजीने कुछ फल खाये और हमने भोजन किया। अेक बजे रामपुरसे रवाना हुअे।

रामपुरसे श्रीनगर तकके रास्तेमें कुदरतकी शोभा देखते ही बनती थी। पहाड़ोंके अूंचे-नीचे मार्ग पर मोटर आगे बढ रही थी। लिखना-पढना छोडकर बापूजी भी कुदरतकी शोभा देखनेमें तल्लीन थे। गांवके गांव बापूजीके दर्शनके

लिअे अुमड पड़े थे। अनेक जगहो पर मोटर रुकी। अूचाअी तो अितनी थी कि अगर अूपरसे नीचेकी तरफ देखे, तो सिर घूमने लग जाय। नीचे हरीभरी घासके दिल लुभानेवाले मुलायम कालीन, अुन पर अिधर-अुधर चरती हुअी पहाडी गाये, खेतोमे काम करती काश्मीरकी खूबसूरत औरतें और छोटे-छोटे सुन्दर बच्चे — अिन सबको मोटरमे से देखकर हृदयमे अीर्ष्या पैदा होती थी। अुनकी झोपडिया भी अुन हरे-भरे कालीनोमें फैली हुअी थी। आजकल हम हजार दो हजारके कालीन खरीदकर और अुन्हे कमरेमे बिछाकर सन्तोष कर लेते है। पर कुदरतकी सच्ची शोभा काश्मीरमें है। बादल भी अैसी ही दौडधूपमें लगे थे। अैसा लगता था मानो अभी बादल आकर बापूजीको पकड लेंगे। अैसे सुहावने दृश्योके बीच होकर हम ठीक साढे चार बजे श्रीनगरकी सीमामे आ पहुचे। यहा बहुत भीड़ थी। लोग नारे लगा रहे थे 'शेख अब्दुल्ला जिन्दाबाद!', 'गाधीजी जिन्दाबाद!' काश्मीरमें मुसलमानोंकी आबादी ज्यादा है, फिर भी अजनबीको यह खयाल तक नही आता कि अिनमे कौन हिन्दू और कौन मुसलमान है। 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगानेवाला भी अेक छोटासा समूह काले झडे लेकर हाजिर था। लेकिन गांधीजी और शेख अब्दुल्लाके प्रचण्ड जयनादमे अुनकी कमजोर आवाज सुनाअी नही देती थी।

जब शहर तीन मीलकी दूरी पर था, तब बेगम अब्दुल्ला वहा आअी और बापूजीकी मोटरमे बैठ गअी।

अुस समय शेखसाहब जेलमे थे। लेकिन अुनकी तरफसे सारा कारोबार बेगमसाहिबा सम्हालती थी। बेगमसाहिबा बड़ी विदुषी और मायालु हैं। बापूने मेरी और आभाबहनकी बीमारीकी बात करके विनोदके साथ कहा "आप अिन दोनों बेसमझ लडकियोंको अपनी गोदमें ले लीजिये और अच्छी होने पर वापस भेज दीजिये। अिन दोनोंको आपकी देखभालमें रखनेके लिअे ही लाया हू।" बेगम अब्दुल्लाने भी हमारे साथ अपनी बेटियोंका-सा बर्ताव किया और वैसा ही प्रेम हम पर बरसाया।

श्रीनगरमें हम श्री किशोरलाल सेठीके यहा ठहरे थे। लेकिन मकान अैसा था कि लोग चारो ओरसे आ सकते थे और बापूजीको परेशान करते थे। अिससे अुनका सारा पुराना बगीचा अुजड गया। अितना बडा मकान और लबाचौडा अहाता होने पर भी बापूजीके आनेसे जगहकी बेहद तगी पडने लगी, जिससे मकान छोटासा मालूम होता था। बापूजी भी सारे दिनकी मुसाफिरीसे बहुत ज्यादा थक गये थे।

बापूजीको शाति मिले, अिस खयालसे बेगमसाहिबा शामको अुन्हे बाहर घुमाने ले गअी। राज्यको गिलगिट मिलनेकी खुशीमें सारा शहर रोशनीसे जगमगा रहा था। पहाडकी अेक चोटी पर हमने शकराचार्यका मदिर और बोट हाअुस देखा। मदिर चोटी पर था, अिसलिअे दीया बादलमें टिमटिमा रहा था। अधेरी रातमें यह दृश्य बहुत सुहावना लगता था।

रातको दस बजे मुकाम पर लौटे। सफरमें तथा मोटरमें जो कुछ लिखा-पढ़ा जा सका अुतने ही काममें वापूजीने अगस्तका पहला दिन विताया। अुस दिन खास-खास लोगोंसे वापूजी न मिल सके। और अिस धांधलीमें जितने लोग मिल गये, अुनकी नोंध भी नहीं रखी जा सकी। आज वापूजीने सिर्फ फल ही लिये।

शनिवार, २–८–'४७

३-३० वजे दातुनके वाद प्रार्थना। वापूने कुछ लिखा। अितनेमें लोगोंकी भीड़ जमा होनी शुरू हो गअी। शामको प्रार्थनाके वक्त आनेका समझाकर सबको रवाना किया। घूमनेके लिअे वापूजी वाहर नहीं गये। अहातेमें ही घूमे। घूमते-घूमते मुझसे और आभावहनसे कहा: "तुम दोनों यहां ठहर जाओ, तो मैं बहुत खुश होअूंगा और सुशीलासे भी ठहरनेके लिअे कहूंगा।" हम दोनोंने कहा: "वापूजी, हम नहीं ठहरेंगी। जहां आप, वहां हम।" आभावहनसे तो रुकनेके लिअे वापूने ज्यादा आग्रह नहीं किया। लेकिन मुझ पर वापूसे भी ज्यादा दवाव डॉक्टरोंने ठहर जानेके लिअे डाला। मैं भी अिस वातसे तंग आ गअी। पर वापूजीके पास लोगोंका आना-जाना अितना ज्यादा वढ़ गया कि मुझे अुनसे वात करनेका मौका ही न मिला। आखिर रातको वापूजीने हमेशाकी तरह मुझसे पूछा: "आज तेरी तबीयत कैसी है?" मैंने कहा: "टेम्परेचर नहीं है। लेकिन डॉक्टरोंका यहां ठहरनेका आग्रह टेम्परेचर

जरूर पैदा कर देगा। पर मै आपके बिना यहा नही रहूगी। आपने ही मुझसे कहा है न कि 'मै तुझे कभी अपनेसे अलग नही करूगा?' तो फिर आप डॉक्टरोसे क्यो नही कहते कि मै अिसको अिसकी मरजीके खिलाफ अपनेसे अलग नही करूगा? अुलटे आप तो यो कहते है कि तू चाहे सो कर। और आप डॉक्टरोसे यह क्यो कहते है कि अिस लड़कीको रुकनेके लिअे ललचाअिये?" मेरी अिस झुझलाहटसे बापूको हसी आ गअी और वे कहने लगे "मै तो तेरी परीक्षा करता था।" आखिर कह भी दिया, "लडकियोकी मरजीके खिलाफ मै कुछ नही करना चाहता। जरूरत पड़ने पर मै सख्त हो जाता हू। पर अिन लडकियोके साथ मुझे सख्त नही बनना है।"

अिस तरह घूमते समय बात करनेका हमे अच्छा मौका मिल गया। घूमकर मालिश और स्नान। बादमे नौ बजे पडित काक मिलने आये। करीब घटे भर रुके होंगे।

बापूजीने खास करके फल ही खाये। यहाके फलोमें अमरूद जैसा अेक फल होता है, जिसका नाम बबुगोशा है। यह बहुत मीठा और मुलायम होता है। सेब भी बड़े मीठे और लाल-लाल होते है। अिनके अलावा कच्चे अखरोट, बादाम और पिस्ते अितने स्वादिष्ट होते है कि हम खाया ही करे। बगीचेमें अिनको चुनते-चुनते बापूजी कहा करते है "अैसी कुदरतके बीच जो लोग खाना पकानेकी झझटमे पडे, साग और दालमे मसाला डालकर स्वास्थ्यको

बिगाड़े और वक्तकी बरबादी करे, वे निरे मूर्ख हैं। कुदरतने कैसे सुन्दर और पौष्टिक फल दिये हैं।"

बापूजीने हमसे श्रीनगरकी सैर करनेको कहा: "यों तो मैं तुमको अनेक शहरोंमें ले गया हूं। लेकिन मैंने कभी तुमसे अुन्हें देखनेको नहीं कहा। लेकिन अगर श्रीनगर देखनेको न कहूं, तो मैं पापी ठहरूंगा। मैं तो नहीं जाअूंगा, पर तुम जरूर देख आओ।"

अितना कहने पर मैं और आभाबहन खानसाहबके पुत्र वलीभाअीके साथ श्रीनगर देखनेको रवाना हुअी। यहांके कुदरती दृश्य और कला वगैरा सब कुछ देखा। अनपढ़ लोग और बिलकुल छोटे बच्चे भी यहां बेकार नहीं बैठते। कुछ न कुछ अुद्यम किया ही करते हैं। कोअी रेशमके कीड़ोंको पालते हैं, तो कोअी अखरोटकी लकडीसे तरह-तरहकी पेटियां, तश्तरियां, टेबल और कुर्सियां वगैरा बनाते हैं। यहांके लोग अलमस्त होते हैं। अुनके गुलाब-से गाल अैसे खूबसूरत होते हैं, मानो अभी अुनमें से लहू फूट निकलेगा। बड़े हंसमुख और मिलनसार। लेकिन आजकलके फेशनेबल लोगोंने यहां आकर अिस सच्ची खूबसूरतीको बिगाड़ दिया है। जहां देखो, लिपस्टिक लगाये ओठ नजर आते हैं। जो लोग दुबले-पतले होते हैं अुनके गाल लाल नहीं होते, अिसलिअे वे लाली लानेके लिअे पाअुडर लगाते हैं। अैसी मनोहर कुदरतमें अैसा कृत्रिम रंगढंग बेहूदा लगता है। साथ-साथ दुःख भी होता है कि हम शहरवाले काश्मीरकी हवाखोरीके लिअे बाहरसे आकर अिन बेचारे भोलेभाले लोगोंको गलत

रास्ते ले जाते है। अिसके बारेमे बापूजीने भी कहा : "पश्चिमसे जो चीज हमे लेनी चाहिये थी, वह हमने नही ली। मगर जो नही लेनी चाहिये थी, अुसे तो हमने अिस तरह हठपूर्वक अपनाया, मानो वह हमे माताने बचपनमे घुट्टीके साथ पिलाअी हो, और हमने दूसरोको भी बिगाडा है। यह कोअी कम पाप नही है।"

पडित काक, नेशनल कान्फरेन्सके कार्यकर्ता, हिन्दू नौजवान सघवाले और स्टुडेन्ट्स फेडरेशनवाले आज बापूजीसे मिले। बापूजीकी सबको अेक ही सलाह थी "भीतर और बाहरसे शुद्ध बनो, शुद्ध रहो और अिस कुदरतको शोभा देनेवाला जीवन बिताओ, तो आपकी जीत होगी।"

चार बजे राजगुरुसे मिलनेके लिअे बापूजी शाही-चश्मा गये। वहासे पाच बजे लौटे।

आजसे सार्वजनिक रूपमे प्रार्थना करनेकी अिजाजत मिल गअी। अब तक अिस तरहकी प्रार्थनाकी मनाही थी। प्रार्थना हुअी। अिसके बाद जवाहरलालजीकी सास और कर्नल चोपडा मिलनेको आये। अिस तरह सारा दिन मुलाकातमे ही बीता। साढे दस बजे बापूजी सो सके।

श्रीनगर, रविवार, ३–८–'४७

३-३० को प्रार्थनाके लिअे जागे। मुह-हाथ धोनेके बाद प्रार्थना की। अिसके बाद 'हरिजन' का लेख पूरा किया। फलका आठ औंस रस पिया। बादमे घूमनेको निकले। लौटनेके बाद नहा-धोकर बापूजी नौ बजे फारिग हुअे। अितनेमे पडित काक आये। अुनके साथ

करीब अेक घंटे तक बातें की। अुनके जानेके बाद बापूजी आधे घंटे तक लेटे रहे। सोये नहीं लेकिन लेटे-लेटे लिखते रहे। ग्यारह बजे नेशनल कान्फरेन्सके कार्यकर्ता आये। अुनके साथ कातते-कातते बातें की। अुन्होंने जोर देकर कहा कि हमें तो (भारतीय) 'यूनियन' में ही शामिल होना है और शेखसाहबको रिहा करवाना है। बापूजीने कहा : "अगर आप अपने फैसले पर कायम रहेंगे, तो खुदा आपकी मदद ही करेगा।" सारी बात-चीतका सार यह था। बारह बजे बापूजी महाराजासे मिलने गये। वहांसे डेढ बजे लौटे। आकर पेट पर मिट्टीकी पट्टी रखी। बेगमसाहिबाके साथ बातें करते-करते आधे घंटेकी नींद ले ली। तीन बजे नेशनल कान्फरेन्सके दफ्तरमें गये। लेकिन वहां बड़ी भीड़ थी। अिसलिअे चंद मिनटके बाद ही लौट आना पड़ा। पांच बजे प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद बापूजी पंडित स्त्रियोंकी सभामें गये। अुस समय वे मौन ले चुके थे। सोमवारका मौन रविवार शामसे ही शुरू हो जाता था। बहनोंकी सभामें बड़ा शोरगुल था। अिससे बापूजी कानमें अुंगली डाल कर बैठ गये। स्त्री-समाजने बापूजीको हरिजन-फंडके लिअे पांच सौ अेक रुपये दिये। वहांसे आठ बजे लौटे। जरा घूमकर आज जल्दी ९-३० को सो गये।

श्रीनगर, सोमवार, ४-८-'४७

३-३० को प्रार्थना। आज ५ बजे श्रीनगर छोड़ देना था, अिसलिअे प्रार्थनाके बाद हम सामान वगैरा बांधनेमें लग गये। प्रार्थनाके बाद आखिरी बिदा देनेके लिअे बापूजीके

पास लोगोकी भीड़ बढने लगी। पाच बजे हम रवाना हुअे। रास्तेमे वेरीनाग झरना देखा, जहासे झेलम नदी निकलती है। वह बडा रमणीय और भव्य है। वहा अेक छोटासा शिवालय है। अनन्तनागमे हिन्दू-मुसलमान कधेसे कधा मिलाकर खडे थे। यह सुन्दर दृश्य देखकर बापूजी मद-मद मुसकराने लगे। बारह बजे हम बीजव्यारामे रुके। यहा बापूजीने स्नान करके दूध पिया। अुन्हे बहुत सर्दी हो गयी थी, अिसलिअे थोड़ा आराम भी लिया। दो बजे जम्मूके लिअे रवाना हुअे।

श्रीनगर-जम्मू मार्ग रावलपिडी-श्रीनगर मार्गसे भी ज्यादा सुदर है। रास्तेमे चिनाब नदी तेज गतिसे बह रही थी। तिस पर आज अुसमे पूर आया था, मानो बापू जैसे महापुरुषके दर्शन करके अुसमे आनन्दकी हिलोरे अुठने लगी हो — वह आनन्दविभोर हो गअी हो! रास्ता भी सर्प जैसा टेढा-मेढा था।

ठीक साढे चार बजे हम जम्मू पहुँचे। यहाकी मानव-मेदिनीको चीरकर घर पहुचनेमे आधा घटा लग गया। घर पहुंचने पर स्नान करके बापूजीने काता। जोरोकी सर्दीसे बापूजीके सिरमे दर्द था। फिर भी अुन्होने काता और सात बजे प्रार्थना-सभाके लिअे चल दिये। बहुतोने बापूजीसे मोटरमे जानेका आग्रह किया, क्योकि वहा बहुत भीड थी। बापूजीने कहा . "बहुत भीडमे पैदल जानेमे ही हिफाजत है। लेकिन बहने मेरी रक्षा कर सकेगी। रास्तेके दोनो ओर बहनोकी कतार बना ली जाय। अिस तरह बहनोंके आगे

रहनेके कारण सभ्य लोग अुन वहनोको हटाकर न तो भीड़ करेगे, न प्रणाम करनेके लिअे आगे वढेगे और मै अच्छी तरह बच जाअूगा। अिस तरीकेसे वहनोने मुझे कअी जगहो पर वचाया है। मै यह प्रयोग कर चुका हू।"

अिस तरह चारो ओर वहनोने कतार वना ली और अुसके वीचसे वहुत अच्छी तरह तो नही, परन्तु किसी तरह वापूजी प्रार्थनाकी जगह पहुच गये।

प्रार्थनामे वापूजीने मौन छोडा। आज लाअुड-स्पीकरने काम नही दिया और सभामे अितनी अशाति थी कि हम रामधुन गाकर ही लौट आये।

साढे सात वजे वापूजी, आभावहन और मै घूम रहे थे। वापूजी हम दोनोसे कहने लगे "आखिर तुम दोनो नही रुकी न? लेकिन अबसे तुम दोनो अपनी तवीयतके वारेमें वेदरकार रही, तो ठीक नही होगा।"

मैने और आभाबहनने जवाब दिया. "वापूजी, अगर अैसा हुआ तो हम खुद ही चली जायेगी। लेकिन यहां नही ठहरेगी। हमे यहा छोड़कर आप नोआखाली चले जायं, तो यहाकी हवाखोरीसे हमें क्या फायदा होगा?"

वापूजी दस बजे सोये। वारिश रिमझिम वरस रही थी।

मगलवार, ५-८-'४७

३-३० को प्रार्थना। वादमे कुछ लिखा। जम्मूके कार्यकर्ता वापूसे मिल गये। अितनेमे पाच वजे और हम रावलपिडीके लिअे रवाना हुअे। सुरदामा गेस्ट हाअुसमे थोडा आराम किया।

अब भी बापूजीकी सर्दी ज्योंकी त्यों थी। अुन्होंने दूध पिया और वहासे सीधे वाह् केम्प गये।

अिस केम्पमे आठ हजार निर्वासित थे। अिनके कमाण्डर-अिन-चार्ज रायसाहब मनमोहनराय थे।

अिस केम्पमे कअी अैसी भी बहने थी, जिन्हे अपने प्यारे बच्चे, पति और घरबार सब-कुछ खो देना पडा था। कितने ही अनाथ बालक थे। सब मैले-कुचैले थे। बापूजीको देखकर सब घड़ी भर अपने दु ख और अपनी मिलकियतको भूल गये। सब कोअी अपने बापूके पास अपनी दर्दभरी कहानी सुनाने आते थे। बापूजी शांतिसे सबको ढाढ़स बधाते थे।

वहा अेक छोटा अस्पताल है। सगदिल भी पसीज जाय, अैसा अिस अस्पतालका हृदयद्रावक दृश्य था। यह स्त्रियोका अस्पताल था। किसी बहनकी छातीसे गोली निकाली गअी थी, तो किसी बहनका अेक पाव ही कटा हुआ था। कोअी बहन अपने अेक दिनके बच्चेको साथ लेकर भाग निकली थी। कअियों पर खजरके घाव थे! यह करुण दृश्य देखा नही जाता था। हरअेक मरीजके बिछौनेके पास बापूजी गये। कुछ मरीज अैसे थे, जिनसे बदबू निकलती थी। फिर भी बापूजी अुनके पास जाते और अुनके सिर पर वात्सल्यसे हाथ फेरकर कहते "सब कुछ भूलकर रामनामका स्मरण करो। वही तुम्हारा सर्वस्व है। अुसके आगे मै भी कुछ नही हू।" अितना कहकर मरीजों परसे मक्खिया अुडाते और कबल ठीकसे ओढा देते थे। बापूजी कापते हुअे यह सब कर रहे थे और ठंडी आह

भरकर मन ही मन बोलते थे . "कैसी हैवानियत! क्या मनुष्य अितना क्रूर हो सकता है?" यह सब देखनेमे दो घंटे लगे ।

बादमे कस्तूरबा ट्रस्ट द्वारा सचालित वर्ग देखा । अिस वर्गमे सीने, काढने, कातने और गूथने वगैराका काम सिखाया जाता था । अिस प्रवृत्तिसे बेचारी दुःखकी मारी बहने अपना दुःख घड़ीभरके लिअे भूल जाती थी । यह देखकर मेरे दिलमें प्रश्न अुठता था कि सिर्फ औरतो पर ही अैसे जुल्म क्यो होते है ? बापूजी कहते · "अिसीलिअे तो मै औरतोको सहनशीलताकी मूर्तिया कहता हू ।"

वहासे डेढ़ बजे हम पंजासाहबकी तरफ बढ़े । यह पजाबियोका बड़ा तीर्थधाम है । गुरुद्वारामे जाकर दर्शन किया । जगह सुन्दर और शात है ।

गुरुद्वारामे अेक छोटी सभा हुअी । अुसमे सिक्ख भाअियोने कहा कि यूनियन सरकारको पजासाहबकी मदद करनी चाहिये । बापूजीने जवाब दिया · "अेक अकाली (सिक्ख) सवा लाखके बराबर है । अुसे किसीके सामने मददके लिअे हाथ क्यो फैलाना चाहिये ? जब तक सिक्खोमे ताकत रहेगी, तब तक कोअी पजासाहबकी ओर आख अुठाकर भी देख नही सकता । लेकिन आजकल सिक्ख लोग मौज-शौक और नाच-तमाशेमे पड गये है । यह बुराअी सिर्फ आप लोगोमें ही है और दूसरोमें नही, अैसा मेरा कहना नही है । हमारे गुजरातकी ओर भी बहने फैशनमे सराबोर हो गअी है, लेकिन कुछ कम मात्रामे । मगर यह कहकर मै अुनका बचाव नही

करता । कोअी आदमी कम शराब पिये और कोअी अधिक, तो कम शराब पीना कोअी सद्‌गुण नही । अिस तरह कम फेशनेबल होना सद्‌गुण नही है । लेकिन जब तक सच्चे सिक्ख (गुरु नानकसाहबके सच्चे अनुयायी) जिन्दा है, तब तक कोअी आपका बाल भी बाका नही कर सकेगा ।"

यहासे हम वापस वाह केम्पको गये । वहा प्रार्थनाके पहले कुछ कार्यकर्ता आये और बापूजीसे बोले · "अिस १५वी अगस्तको अगर हम पर हमला हो तो? अिसलिअे अुस दिन तक आप यही ठहरे या १५वी के पहले सरकार हमे यहासे हटानेका अिन्तजाम करे ।"

बापूजीने जवाब दिया "आपको तो यही रहना होगा । डॉ० सुशीलाबहन आपके साथ है। वह पजाबकी है, पजाबी भाषा जानती है और अेम० डी० है। वह यहा रहेगी और सबसे पहले मौतकी भेट करेगी — अगर हमला हुआ तो । अिस पर मुझे पूरा विश्वास है ।"

बापूने आगे कहा "१५वी के पहले आप सब यहासे हटना चाहते है और कहते है कि हम पाकिस्तानमे नही ठहर सकते । लेकिन अैसा डर अगर आप लोगोमे है, तब तो १५वी के रोज आपको हटानेकी कोअी कोशिश करेगा तो मै अुसे मना करूगा । क्योकि डरकी कल्पनासे पहलेसे डरना नही चाहिये । सबको मार डालनेके लिअे पाकिस्तानका निर्माण नही हुआ है। फिर भी शायद आप पर हमला हो जाय और समूचे केम्पका खात्मा हो जाय, तो अिसके पहले पाकिस्तान ही नेस्तनाबूद हो जायेगा । सारे सिक्खो और

हिन्दुओंको निकालकर पाकिस्तान अकेला क्या करेगा, यह तो जरा सोचिये। मतलब यह कि आप सब पूरी तरह निर्भय हो जाय। अिस पर भी मुसलमान अगर मारेंगे, तो यह कत्ल अेक भाअीके हाथ ही होगा न? हम सब अीश्वर पर भरोसा रखें। भगवान सबको सन्मति दे।"

अिस तरह कुछ अुलाहना और कुछ तसल्ली देकर बापूजीने सबसे भावपूर्ण विदा ली, और सुशीलाबहनको वाह केम्पमें छोड़ा। बापूके प्रतिनिधिके रूपमें सुशीलाबहन वहां ठहरीं, जिससे लोगोंको खूब खुशी हुअी।

हम रावलपिंडीकी ओर चले।

यहां अेक घंटा रुके। बापूने अंगूर और गरम दूध लिया। हमने खाना खाया और नौ बजे रावलपिंडी स्टेशन पर पहुंचे।

स्टेशन पर कुछ हिन्दू महासभावादी विद्यार्थी नारे लगा रहे थे: 'हिन्दकी जबान हिन्दी', 'हिन्दूका नारा हिन्दू'। लेकिन किसीने अुनकी ओर ध्यान नहीं दिया। जिससे सब लोग शांत हो गये।

९-२५ को हमारी गाड़ी लाहौरके लिअे छूटी। हम सारी रात जागते रहे। स्टेशन-स्टेशन पर लोग खूब परेशान करते थे।

अिस तरह काश्मीरकी सैर पूरी करके हम नीचे अुतरे।

२

काश्मीरसे कलकत्ता

बुधवार, ६–८–'४७

ट्रेनमें ही दातुनके बाद ३-३० को प्रार्थना की। अिसके बाद पढते-पढते बापूजी सो गये। सवेरे सात बजे हम शाहदरा स्टेशन पर अुतरे। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू और श्री ब्रजलाल नेहरू बापूजीको लेनेके लिअे स्टेशन पर आये थे।

रामेश्वरीबहनके यहा हम ठहरे थे।

रामेश्वरीबहन तो देहातमे गअी थी। मगर जब अुन्होंने रातको बारह बजे सुना कि बापूजी लाहौर आनेवाले हैं, तो अुन्होंने अेक अर्सेसे बन्द घरको रात ही रातमे साफ-सुथरा बना दिया था।

बहुत दिनोके बाद आज हमको शाति मिली। क्योकि यह मकान शोरगुलसे दूर बहुत शात स्थल पर है। बापूजीने भी आराम पाया। अितने दिनोके बाद आज बापूजीको कडाकेकी भूख लगी। बारह औंस दूध, दो रोटिया (खाखरे) और साग लिया। शामके चार बजे तक बापू किसी मुलाकातीसे नही मिले। अिससे बापूजी 'हरिजन' के लिअे लेख लिख सके और आराम भी ले सके। आज सर्दी भी कुछ कम थी। प्रवास-रिपोर्ट भी तैयार की।

सरदार वल्लभभाओी, जवाहरलालजी, राजेन्द्रबाबू और राजकुमारीबहनके नाम महत्त्वके पत्र लिखे।

चार बजेसे लोग मुलाकातके लिओे आने लगे। कांग्रेस कार्यकर्ताओंसे मिलनेमें ही अेक घंटा बीता। अिन सबसे बापूजीने कहा, "अब आपकी कसौटीका समय है। यथा-शक्ति शुद्ध होना और बलिदान देना।"

शामको सात बजे लाहौरसे पटनाके लिओे रवाना हुओे। धूप कडी थी और भीड भी खूब थी।

जब हम काश्मीर जा रहे थे, तब कुछ छोटे लड़के अुत्तेजित होकर हाथमें काले झंडे लेकर 'गांधी गो बैक' चिल्लाते हुओे अमृतसर स्टेशन पर आये थे। बापूजीने कुछ नहीं किया। वे कानोंमें अुंगलियां डालकर और आंखें बन्द करके रामनाम लेते रहे। जिन लडकोंने अमृतसर स्टेशन पर अैसा किया था, अुन्होंने हमारे लौटते समय हरिजनोंके लिओे चंदा अिकट्ठा करके तैयार रखा था। हमारी गाड़ी जब अमृतसर पहुंची, तब वे लडके शांतिसे खडे थे। अुन्होंने बापूजीसे माफी मांगकर थैली भेंट की। बापूजीसे अुन्होंने कहा "हमारी गलती थी। हमने आपको नहीं पहचाना। आपके सिर्फ चार दिनके यहांके दौरेमें लोगोंका मानस बदल गया है। हमें आप माफ कर दें।"

अिस दृश्यकी हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं। प्रेमकी यह कैसी अनोखी जीत थी! जिन्होंने चार रोज पहले काले झंडे दिखाये थे, वे ही आज माफी मांगते थे और हरिजनोंके लिओे चंदा अिकट्ठा करके बापूके कदमोंमें सिर

झुकाते थे। अगर अुस दिन बापूने गुस्सा किया होता या पुलिसने काले झंडेवालोंको गिरफ्तार किया होता, तो अुसका कितना अुलटा परिणाम होता!

बापूने सबसे प्रेममय वाणीमें कहा : "जो हो चुका अुसे भूल जाओ। 'जब जागे तभी सबेरा' यह कहावत याद करके हम सबको फिरसे जाग्रत हो जाना चाहिये।"

और स्टेशनों पर भी भीड तो अुतनी ही थी। रास्तेमें बारिश होने लगी। अूपरसे पानी गिरनेके कारण हमारा डब्बा तर हो गया था। गार्डने आकर बापूजीसे डब्बा बदलनेको कहा। बापूजीने पूछा : "बादमें आप अिस डब्बेका क्या करेंगे?"

गार्डने कहा : "आपके लिअे जो डब्बा खाली कराया है, अुसके पैसेंजरोंको यहां बैठा दूंगा।"

बापूजीने कहा : "अगर अिस डब्बेमें दूसरोंको आप बैठाना चाहते हैं, तो मैं खुद ही क्यों न बैठूं? मेरे सुखके लिअे और लोग मुसीबत अुठायें, यह बात ठीक नहीं।"

गार्ड अेक शब्द भी न बोल सका। बादमें अुसने बापूजीसे पूछा : "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

बापूजीने कहा : "आपके लायक तो अनेक सेवायें हैं। लोगोंको परेशान न करना और रिश्वतसे दूर रहना। अितना आप करेंगे, तो यह मेरी ही सेवा होगी।"

गाडीमें रात शांतिसे कटी। सहारनपुर स्टेशन पर ब्रजकृष्णजी अुतर गये और दिल्लीकी तरफ गये। हम नीचे

पटनाके लिअे रवाना हुअे। बापूजीने सारा वक्त 'हरिजन' के लिअे लेख लिखनेमें बिताया।

लखनअू स्टेशन पर गोविन्दवल्लभ पंत आये। भीड़ चीरकर बड़ी मुश्किलसे वे आ सके। आकर मुझसे कहा : "यहां अुतर जाओ। महात्माके साथ रहनेमें कितनी तकलीफ अुठानी पड़ती है?"

मैंने जवाब दिया : "अगर महात्माके साथ रहना है, तो सब कुछ बरदाश्त करना चाहिये।"

मैं और आभाबहन हरिजन-फंडके लिअे चंदा अिकट्ठा करती थीं। लोग बापूके दर्शनके लिअे अूपर चढ़ जाते थे। आभाबहन अुन्हें रोकती थी। अिस तरह हरअेक स्टेशन पर थोड़ी-बहुत भीड़ तो रहती ही थी।

रातको नवा दस बजे बनारस आया। हमारी ट्रेन दो घंटा लेट थी। बापू सो गये थे। लेकिन लोगोंने दोपहरके तीन बजेसे बापूके दर्शनके लिअे स्टेशन पर अड्डा जमा दिया था। अुन्होंने जयनाद करके बापूजीको जगा दिया। बापूजीको जयनादसे अेतराज था, अिसलिअे वे बाहर न निकले। बनारसमें लोग बहुत निराश हो गये।

८-८-'४७

३-३० को हम पटना स्टेशन पर आ पहुंचे। डॉ० सैयद महमूद स्टेशन पर आये थे। बापू, आभाबहन और मैं पहली मोटरमें गये। सामान वगैरा किसेनभाओी और कल्याणम्‌जीने सम्हाला। हमने घर पहुंचकर मुंह-हाथ धोनेके बाद प्रार्थना की। हम दोनों रातभर नींद नहीं ले सकी

थी, अिससे बापूजी नाराज हुअे कि तुम क्यो नही सोयी। अिसलिअे प्रार्थनाके बाद हमे कुछ काम नही करने दिया और सो जानेके आग्रहसे हम आधे घटेके लिअे सो गअी।

नोआखालीके बाद बापूका मुख्य केन्द्र पटना था। हमारे साथ जो अधिक सामान और किताबे थी, अुन सबको यही छोड देनेमे सुविधा रहती थी। अिसलिअे जो चीजें अधिक थी, अुनको यहा छोड़कर पुराना सामान हमने ठीक किया। और आज ही रातको कलकत्तेके लिअे रवाना होना था, अिसलिअे जरूरी सामान तैयार किया। क्योकि वहासे हम नोआखाली जानेवाले थे। पटनामे बापूजी बहुत दिन रहे थे, अिससे असख्य मुलाकाती आते थे। मृदुलाबहन (वह तो बिहारमे बापूजीकी रहस्य-मत्री ही थी), पटना काग्रेस कमेटीके कार्यकर्ता, पीस कमेटीके कार्य-कर्ता, बिहार रिलीफ मुस्लिम डेप्युटेशन, केदारबाबू, गगाबाबू, सहजानन्द सरस्वती, असारी साहब, अनुग्रहनारायण सिह और पोलिस डेप्युटेशन — ये सब ११ से ५ बजेके बीच मिल गये।

पाच बजे प्रार्थनाके लिअे रवाना होते वक्त बापूजी डॉ० सैयद महमूदकी बेगमसाहिबाकी तबीयत देखनेके लिअे अूपर गये। अिसके बाद मोटर पर सीधे सिनेट हॉल गये, जहा प्रार्थना होनेवाली थी। सभामे बापूजीने १५ वी अगस्तका कार्यक्रम समझाया .

"अुस दिन अुपवास रखना और सबको अपने-अपने धर्मका पालन करना चाहिये। १५वी तारीख तो हमारी

परीक्षाका दिन है। कोअी दगा-फसाद न करे। सिवा अिसके, यह स्वराज्य अैसा नही कि हम रोशनी करे, खुशी मनाये। आज हमारे पास अनाज, कपडे, घी, तेल कहा है? अिसलिअे हम अुत्सव कैसे मनाये? अुस रोज तो अुपवास, कताअी और अीश्वर-प्रार्थना — अितना ही कार्यक्रम ठीक होगा। ६ अप्रैलको हमने कब रोशनी की थी? अुस घोषणाके दिन तो हमने अुपवास करके ६ से १३ अप्रैलका सप्ताह मनाया था न? फिर वह दिन तो आजकी आजादीसे ज्यादा सुनहला था, क्योकि अुस वक्त आजकी तरह भाअी भाअी पर गुर्राकर नही दौडता था, भाअी भाअीका गला नही काटता था। सब लोग अपने मदिर और मस्जिदमे खुशी-खुशी जा सकते थे।

"चरखेकी नीव पर विहार खडा है और आज भी अिस क्षेत्रमें विहार सबसे आगे है। अैसे विहारको क्या हम जलाकर खाक कर देगे? विहारको अपनी जरूरतका कपडा आप ही पैदा कर लेना चाहिये।"

अिस तरह विहारवासियोसे कहा। यहांसे हम सीधे स्टेशन पर गये। रातको करीब ९-३० बजे बखतियारपुर स्टेशन आया। विहारके बेचारे भले और भोले देहाती बापूके दर्शनके लिअे आये थे। लेकिन जयनाद अितनी जोरसे करते थे कि स्वस्थ आदमीके कानका भी परदा फट जाय। बापूजी यह आवाज न सह सके। तपाकसे अुठकर खिडकीके पास आये और चिल्लाये - "अिस बूढेको क्यो सताते हो?"

बापूको खिडकीके पास देखकर लोग और खुश हुअे और बापूजीको छूकर अपनेको पावन करनेके लोभमे पडे।

और बापूजीको ही हाथोहाथ पैसा देनेकी सबकी अिच्छा थी, अिससे जोरसे धक्के-मुक्के लगाकर लोग आगे बढ़े। अिनमें से अेकको बापूजीने तमाचा लगा दिया। थर-थर काप रहे बापूजीका हाथ मैंने और आभाबहनने थाम लिया। यह गुस्सेका तमाचा होने पर भी अुस आदमीने तो यही सोचा कि किसी भाग्यशालीको ही महात्माका अैसा तमाचा मिलता है। अिस खयालसे अेक दूसरा आदमी भी तमाचा खानेके लिअे आगे बढ़ा। आभाबहन समझ गअी। अुन्होंने अिशारेसे मुझसे कहा "ये लोग मार खानेमें अपनी खुशकिस्मती समझते हैं। चलो हम बापूको अदर ले जाय।" हमने बापूजीसे कहा "बापूजी, आप अदर जाये। हम अुनको शात कर देंगी।"

हमने रामधुन लगाअी। थोडी शाति कायम हुअी, अितनेमें हमारी गाडी चल दी।

बिहारमें तो यह हाल है कि अगर लोगोंको बापूजीके किसी रास्तेसे गुजरनेका पता चल जाय, तो दूर-दूरसे भी लोग आकर रेलकी पटरी पर खडे हो जाते हैं। वे लट्ठ-धारी होते हैं और जब चाहे तब जजीर खीचकर गाडी ठहरा देते हैं। अिस वजहसे हमारी गाड़ी बहुत लेट हो गअी।

९–८–'४७

अिस बार मेरी अेक गलतीसे मुझे अच्छा सबक मिला। लाहौर छोडते समय हम बापूजीका 'यूरिनल' और 'चेम्बर पॉट' साथ लेना भूल गयी थी। पटना

पहुचने तक अुनकी जरूरत न पडी। पटनामें आभावहनने बापूजीसे कहा कि हम 'यूरिनल' भूल आयी हैं। अिसलिअे मैंने बापूजीसे पूछा . "बापू, क्या नया खरीद लूं ?" बापूजीने मजाकमें कहा . "हा, तेरे पिताने तेरे रुपये मेरे पास जमा कर रखे हैं और अुसका ट्रस्टी भी मुझे बनाया है। अगर अुन रुपयोमें से तू 'यूरिनल' और 'चेम्बर पॉट' खरीद ले तो मेरी अिजाजत है। वैसे मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नही है।" मैं समझ गयी थी कि यह मजाक है। फिर भी ये चीजे नोआखालीके प्रवासके लिअे निहायत जरूरी हैं, अैसा महसूस होनेसे मैंने दोनो चीजे खरीद ली। अिस बातकी जानकारी बापूजीको दूसरे दिन सवेरे ट्रेनमें मिली। कलकत्ता स्टेशन आनेको ही था। वर्दवान स्टेशन पर निर्मल-बाबू आ गये, अिसलिअे बापूजी अुनके साथ बाते करने लगे। स्टेशनसे सोदपुरके लिअे रवाना होते ही मोटरमें बापूजीने 'यूरिनल' की बात छेडी। मैं और आभाबहन दोनो यह बात जानती थी, अिसलिअे काप रही थी। दोषी तो सचमुच मैं ही थी। परन्तु बापूजी मुझ पर नाराज हुअे अिसलिअे आभाबहन हमदर्दीसे मेरी अिस हालत पर तरस खा रही थी।

बापूजीने कहा "मैंने तो अुस वक्त सिर्फ मजाक किया था। 'यूरिनल' के बजाय मैंने काचकी बोतलसे ही काम चला लिया होता। सात रुपये कहासे आते हैं? तू खुद तो अेक कौडी भी नही कमाती। आज तो तूने मेरे 'यूरिनल' के लिअे सात रुपये खर्च कर डाले। कल तू कोअी रद्दी चीज भी

खरीदेगी। क्या अपने पिताके रुपये अिसी तरह बरबाद करेगी? खर्च करनेमें तू बड़ी अुदार है। लेकिन तुझे व्यावहारिकता सीखनी चाहिये। अर्थका अनर्थ करनेवालेको तेरे अिस कार्यमे घमडकी बू मिल सकती है। मै अिस बातका अनर्थ नही करता। आम तौर पर लोग कहेगे कि अिस बातमे क्या दम है? जब हमारे पास पैसे है, तो हम जरूरी चीजे खरीदकर शरीरको जरा भी तकलीफ नही पहुचायेगे। अैसे खयालसे अिन्सान गिरता है। यह बात मै रातको दो बजे कहना चाहता था, लेकिन अुस वक्त मैने जाने दिया और बिसेनको ही अुलाहना दिया। भविष्यमे तुझे खयाल रहे, अिसलिअे मैने यह सब तुझसे कह दिया है।"

अिस तरह कलकत्तेसे सोदपुर तकके सारे रास्तेमें बापूजीने मुझे प्रवचन दिया।

पहुंचनेके बाद नहा-धोकर बाहर आने पर मुलाकाती लोग आने लगे।

कलकत्तेमें

सोदपुर, ९-८-'४७

डॉ० प्रफुल्ल घोष, सतीशबाबू दासगुप्ता, बाळभाअी कालेलकर, भणसालीभाअी — अिन् सबने बापूसे मुलाकात की। फिर डॉ० घोष बापूजीसे अेक घटेके लिअे अकेले मिले। ३-३० को गवर्नरसे मिलनेके लिअे बापूजी गये। ४-३० को निर्मलबाबूने कअी पत्र पढ कर सुनाये। रेणुका रायके साथ बापूजीने बाते की। ५-३० को प्रार्थना हुअी।

कलकत्तेमें साम्प्रदायिक दंगा चालू था। असका बोझ बापूके मन पर था। बापूजीने कहा "खरी कसौटीका समय तो अब आया है। सारे ससारको हमे अपनी ताकत दिखा देना है। अगर हिन्दुस्तान फिरसे गुलाम बना, तो वह हालत देखनेके लिअे मै जिन्दा नही रहूगा। मेरी आत्मा वह देखकर रो अुठेगी। पर अैसा समय न आये, यही अीश्वरसे मेरी प्रार्थना है।"

प्रार्थनासे लौटकर बापूजी कुछ समय घूमे और कामकाज पूरा करके १० बजे सो गये।

सोदपुर, रविवार, १०–८–'४७

३-३० को मुह-हाथ धोनेके बाद प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद बापूजी अपने दैनिक कार्यक्रममे लग गये। दिनभरमे अेक यही समय अैसा था, जब बापूजी 'हरिजन' के लिअे शातिसे लिख सकते थे।

छः बजे घूमनेके लिअे निकले। साथमे सिर्फ मै और आभाबहन ही थी। बापूजीने विनोद किया. "आभा बड़ी है या तू?" आभाबहन बोली. "मै बड़ी हूं।"

"तब तो अगर तू मनुको डाटना चाहे तो डाट सकती है।"

मैने कहा "लेकिन बापूजी, मै तो अिनकी ननंद हू। काठियावाडमे रिवाज है कि ननद चाहे कितनी ही छोटी क्यो न हो, अपनी भाभीको डाट सकती है।"

बापूजीने हंसकर कहा· "यह तो मै भूल ही गया था। मै भी देवरकी हैसियतसे मेरी भाभीको कभी-कभी

तग किया करता था। भाभी बननेसे यह हाल होता है। लेकिन तुम दोनोको आदर्श ननद-भोजाओी बनना चाहिये।"

लौटनेके बाद बापू स्नानसे फारिग हुअे कि हमेशाकी तरह मुलाकातियोका ताता बध गया। अुनमे लीगके अेक सेक्रेटरी अुस्मानखा साहब भी थे। अुन्होने कलकत्तेकी कठिन हालतका बयान किया और दो दिन ज्यादा ठहर जानेका बापूजीसे आग्रह किया "आप पर जितना अधिकार हिन्दुओका है, अुतना ही मुसलमानोका भी है। क्योकि आप ही ने तो कहा है कि मै मुसलमान भी हू।"

बापूजीने कहा "लेकिन अिस बातकी जिम्मेदारी आप ले कि नोआखालीमे कुछ नही होगा, और अगर कुछ हो जाय तो मुझे नोआखालीके लिअे अुपवास करनेका अधिकार मिल जायेगा। और अिसका साक्षी आपको बनना पडेगा।"

अुनके साथके बीस मुसलमान भाओी बेचारे सहम गये कि अितनी बडी जिम्मेदारी कैसे ली जाय? "लेकिन गुलाम सरवर और कासम, जो जेलसे रिहा हुअे है, अुनको हम तार करते है और आदमी भी भेजते है। पर हम गवाह बननेके लिअे तैयार नही।"

बापूजीने कहा "तो भी मै दो रोज यहा रहनेके लिअे तैयार हू।" और तेरह तारीखको नोआखाली जानेका तय हुआ।

बाकी प्रार्थना वगैराका दैनिक कार्यक्रम ज्योका त्यो रहा। प्रार्थनामे बापूजीने अपना हृदय अुडेलते हुअे कहा: "कलकत्तेमें हिन्दुओके हाथ कोओी अैसा काम न हो, जिससे

हमें शरमिन्दा होना पड़े। अगर हम अैसे घमडमे रहे कि राज्य हमारा है और हम जो चाहे सो कर सकते है, तो हम जैसे कोअी मूर्ख नही। और हिन्दुस्तानकी आजादी चन्द रोज ही रहेगी। अगर लड़ना चाहते हो, तो सच्ची वीरतासे लड़ो। अिस तरह टट्टीकी ओटसे शिकार क्यो? यह सब मै अिसलिअे कहता हू कि हिन्दू मुझे अपना दुश्मन नही समझते।"

बापूके मुलाकाती खास करके आज मुसलमान ही थे। मत्री लोग भी आये थे। ७ बजे बापूने मौन लिया।

बापूजी आजकल दूध, साग और खाखरा रोटी खाते है। वजन ११३ पौंड हुआ।

सोमवार, ११-८-'४७

प्रार्थनाके बाद बापूने पत्र लिखे — मणिबहन पटेल, पी०आर० दास, बालकोबा, मेहताब और चिमनलालभाअीको। गवर्नरको भी पत्र लिखा। ६ बजे बापू घूमने निकले। मालिश और स्नानके बाद खाते वक्त अखबार सुने और ग्यारह बजे सो गये। कोअी आधे घटे तक सोये। ११-३० को काकासाहब आये। कातते-कातते अुनसे कुछ बाते हुअी। अितनेमें अेक बजा और प्रफुल्लबाबू और अन्नदाबाबू आये। ढाअी बजे बापूजी कलकत्तेकी तबाहीकी जगह देखने गये। वहासे ४-४५ को लौटे। बादमें मुलाकातियोका ताता बंध गया, जो रातके दस बजे तक जारी रहा। अिस बीच प्रार्थना तो हमेशाकी तरह ही हुअी।

बापूने कहा : "चद रोजमे जो आजादी आनेवाली है, अुसके लायक हम बने। और आज हम ओीश्वरका अहसान माने कि हमारी गरीब हालत होते हुअे भी हमारे दिये हुअे बलिदानोका अुसने यह बदला दिया है। अगर भारतके चालीस करोड लोग अुस दिन अुपवास करके अितना अनाज बचा ले, तो कितना सुन्दर काम हो! अुपवास, मौन और कताअीमे जो अनोखी शक्ति पडी है, अुसे हम समझ ले।"

रातको दस बजे सुहरावर्दी साहब आये। वे करीब डेढ घटे तक बाते करते रहे। बापूजी बोले "आप और मै मिल-जुलकर काम करेगे। अगर आप सच्चे होगे, तो मेरे साथ शामिल हो जायगे। तब मै नोआखाली नही जाअूगा। यह तो फकीरीका रास्ता है। अिसलिअे घर पर सलाह-मशविरा करके आअिये।"

बी० बी० सी० ने दोपहरमे 'स्वतंत्र भारत और अुसका ससारके साथ सबध' विषय पर तीनेक मिनट तक बोलनेके लिअे बापूजीसे अनुरोध किया। लेकिन बापूने जवाब दिया. "मुझे यह लोभ छोड देना चाहिये और लोगोको भूल जाना चाहिये कि मै अग्रेजी जानता हू।"

बापूजीका नोआखाली जाना मुलतवी रहा।

मगलवार, १२-८-'४७

आज भी ३-३० को प्रार्थनाके बाद लेखन, सैर, स्नान, भोजन और मुलाकातका कार्यक्रम हमेशाकी तरह चला। दोपहरको कलकत्तेके भूतपूर्व मेयर अुस्मानसाहब सदेशा लाये

कि सुहरावर्दी साहबने कहला भेजा है कि हम दोनो साथ रहेंगे और अैसे मकानमे साथ रहेंगे, जहा मुसलमान नि सकोच आ सके। दोनोको दिल साफ रखने चाहिये और दोनोमे से कोअी भी छिपी मुलाकात नही कर सकेगा। दोनो साथ मिलकर निवेदन करेंगे। दोनोका खाने-पीनेका अिन्तजाम साथमे होगा। और नोआखालीकी जिम्मेदारी हमारे सिर पर रहेगी, यह तय रहा।

बापूजीने गजबकी हिम्मत दिखाअी। क्योकि जिस मुहल्लेमे बापूजी ठहरनेवाले है, वह बडा खतरनाक माना जाता है। वहा अेक भी मुसलमान दगेमे बच नही सका था। देखे, अीश्वर क्या करता है।

आजके मुख्य मुलाकाती ये थे काकासाहब, हॉरेस अेलेक्ज़ेडर, स्टुअर्ट, चन्द्रनगरके प्रतिनिधि, रमेशचद्र मजूमदार, गोपीनाथ राय, प्रफुल्लबाबू, अन्नदाबाबू, अुस्मानसाहब और सुहरावर्दी साहब।

३

पहला चमत्कार

कलकत्तेकी पंद्रहवी अगस्त, १९४७

बुधवार, १३–८–'४७

३-३० को हमेशाकी तरह जाग अुठे। प्रार्थना वगैरा रोजकी तरह। सोदपुरमें यह हमारा आखिरी दिन था। अिस तरह प्रोग्राम अचानक बदल जानेसे बापूजीने कनुभाअी गाधी, प्यारेलालजी, अमतुस्सलाम बहन, सतीशबाबू (नोआखालीमें), राधाकृष्णजी, आर्यनायकम्‌जी, बलवतसिंहजी, राजेन्द्रबाबू, सरदार वल्लभभाअी, मणिबहन और पेरीन बहन केप्टनको अिसकी सूचना करनेके लिअे खत लिखे। 'हिन्दुस्तानी' के बारेमें अेक छोटीसी मीटिंग भी थी। काम अितना था कि सुबहके ३-३० से लेकर दोपहरके १२-३० तक अेक मिनटका भी बापूजी आराम न पा सके। अितनेमें सुहरावर्दी साहबके प्रतिनिधि आ गये। वे सब डेढ बजे गये। बापूने शहीद साहबसे कहा था "मैं ठीक ढाअी बजे सोदपुरसे निकल जाअूगा, अिसलिअे आप ठीक वक्त पर आ जाअिये।" लेकिन २-२५ तक शहीद साहब नही आये। बापूजी तो २-२८ के निश्चित समय पर मोटरमें जा बैठे। और जहा हिन्दुओने सब मुसलमानोको साफ कर दिया था, असी बेलियाघाटाके हैदरी मेन्शनकी ओर मोटर चली।

बापूकी टोलीके कुछ लोग पहलेसे ही हैदरी मेन्शनको साफ-सुथरा बनानेके लिअे चले गये थे। मकान बहुत गंदा था और सुविधाका नाम भी नहीं था। चारों ओर खुला था, जिससे लोग कहींसे भी आ सकते थे। दरवाजे और खिड़कियां भी टूटी-फूटी थीं। पाखाना अेक ही था, जिसको करीब ५०० लोग अिस्तेमाल करते थे। क्योंकि कितने ही स्वयंसेवक, पुलिसवाले और दर्शनार्थी — सब अिसी पाखानेमें जाते थे। जहां देखो वहां धूल ही धूल थी। अिसके अुपरांत बारिश भी थी, जिससे कीचड़ हो गया था। ब्लीचिंग पाअुडर तो अितना छिड़का गया था कि अुसकी बूसे सिर चक्कर खाने लगता था। बापूके सामानके लिअे, अुनके मेहमानोंके लिअे और सोनेके लिअे सिर्फ अेक ही कमरा था।

आते ही हो-हल्ला मचा। नौजवानोंका खून खौल अुठा और वे बापूसे कहने लगे "आप यहां क्यों आये हैं? मुसलमानोंका जरा-सा नुकसान हुआ कि आप आ धमके और हम पर छुरी चलती थी तब आप कहां थे?" फिर भी दरवाजेसे अंदर जाते हुअे बापूजीको किसीने रोका नहीं। पर शहीद साहबको, जो बादमें आये, रोक लिया। और अैसी दहशत थी कि कोअी अुन पर हाथ भी अुठा दे। निर्मलबाबू और अन्य मददगारोंको बापूने दरवाजे पर भेजा और दंगाअियोंके कुछ प्रतिनिधियोंको अंदर ले आनेके लिअे कहा। अुनको अंदर बुलानेसे भीड़के बाकी लोग शांत हो गये। परिणामस्वरूप सुहरावर्दी साहब अंदर आ सके।

फिर अुत्तेजित बने हुअे नौजवानोके साथ अिस तरह सवाल-जवाब हुअे ।

सवाल — पिछले साल १६ अगस्तको जब कलकत्तेमे भयकर दगा हुआ, तब मुस्लिम मुहल्लेमे हिन्दुओको बचानेके लिअे क्यो कोअी हाजिर नही हुआ? और आज जब छोटीसी धाधली हुअी तो आप मुसलमानोकी हिफाजतके लिअे निकल पडे?

बापू — आज और १९४६ की १६ अगस्तमे बहुत फर्क है। १६ अगस्तको मुसलमानोने ही कत्लेआम किया, यह मै समझता हू। लेकिन अब अुस बातका बदला लेनेसे क्या फायदा? मै तो नोआखाली ही जाना चाहता था, लेकिन वहाका काम अब यही बैठे-बैठे करूगा। मै सिर्फ मुसलमानोकी ही भलाअीके लिअे नही आया हू। मै सबका भला करना चाहता हू। मै सबका दोस्त हू। कत्ल करनेवाले और मकान जलानेवाले अपने ही धर्मकी नीव काटते है। मेरे रक्षक तुम्हे ही बनना है। अगर मेरे भक्षक बनना चाहते हो, तो भक्षक भी बन सकते हो। मै तो बूढा हू। मै कोअी ज्यादा समय जीनेवाला नही हू। मैने सारी जिन्दगी काम किया है। अगर समझा सकू, तो तुम्हे यह समझानेके लिअे आया हू। बाकी मेरा हृदय तो कहता है कि मै हिन्दू और मुसलमान दोनोका सेवक हू। मै तो बनिया हू। मेरा व्यापार चलाता हू। बिहारके हिन्दुओसे मैने साफ-साफ कह दिया है कि दुबारा कुछ भी होगा तो मेरी खैर नही। अिसी तरह यहा आनेसे नोआ-खालीके लिअे भी मुझे हक मिल गया है कि अगर वहा कुछ

तूफान हुआ, तो सबसे पहले मेरा खून होगा। और तुम सब यह क्यों नहीं समझते कि नोआखालीकी मेरी जिम्मेदारी पूरी हुअी और शहीद साहब तथा अिनकी टोलीके लोगोंने और गुलाम सरवरने वह जिम्मेदारी अपने अूपर ले ली है? यह क्या साधारण बात है? मेरा तो अैसा ही व्यापार है।

लडके — (बहुत गरम होकर) हम यहां हिंसा-अहिंसाका सबक सीखने नहीं आये हैं। आप यहांसे चले जाअिये। हम मुसलमानोंको यहां कभी पांव भी नहीं रखने देंगे।

बापू — अिसका मतलब तो यह हुआ कि तुम अिस बातमें मेरा दखल नहीं चाहते। अगर तुम सब मेरी मदद करो और मेरा काम आगे बढने दो, तो यहां बैठे-बैठे मैं हिन्दुओंके लिअे अैसा काम कर दूं कि वे सब अुस जगह सलामतीसे जा सकेंगे, जहां आज अुनका गुजर भी नहीं हो सकता। अब १६ अगस्तको याद करके हमेशाके लिअे दुश्मन बने रहनेसे क्या फायदा?

लडके — अितिहास हमें बताता है कि ये दो जातियां कभी मिल-जुलकर नहीं रहीं।

अेक १८ वर्षका लडका — मेरे जन्मसे ही मैं अिन दोनों जातियोंको लडते-झगडते देख रहा हूं।

बापू — तुम मुझसे बडे नहीं हो। मैंने तो हिन्दू-मुस्लिम कुनबोंमें अैसे बहुत रिश्ते देखे हैं, जहां अेक हिन्दू लड़का मुसलमानोंको 'चाचा-चाचा' कहकर पुकारता है। शुभ अवसरों पर अेक-दूसरेके घर वे जाते हैं और आपसमें व्यवहार करते हैं। तुम सब मुझ पर जबरदस्ती करते हो कि यहांसे चले

जाअिये। मगर मै तो किसीकी जबरदस्ती कभी मानता नही हू। यह बात मेरे स्वभावके खिलाफ है। तुम मेरा काम बद करा सकते हो, मुझ पर हाथ भी अुठा सकते हो। मैं मिलिटरीका सहारा नही लूगा और अुसके लिअे प्रार्थना भी नही करूगा। चाहो तो मुझे कैद भी कर सकते हो। वैसे तुम्हारे कहने भरसे ही मै थोडे हिन्दुओका शत्रु हो जानेवाला हू? जब तक मेरी आत्मा साक्षी है, तब तक मै कैसे अपनेको हिन्दुओका शत्रु मान लू? यहा आनेमे मैने गलती की है, अैसी अगर मुझे प्रतीति करा दो, तो मै अिसी वक्त लौट जाअूगा।

अिस तरह रातको आठ बजे तक बाते चलती रही। आखिर दो लड़कोसे बापूने कहा. "तुम अितना तो खयाल करो कि मै जब कर्मसे, धर्मसे और नामसे हिन्दू हू, तो हिन्दुओका दुश्मन कैसे हो सकता हू? यह तुम्हारी सकुचित मनोवृत्ति है।"

अिस बातका लडको पर मानो जादूका-सा असर हुआ और सब लडकोने बापूकी बात मान ली तथा सारी रात अुन्होने स्वयसेवक बनकर पहरा दिया। वे सब कहने लगे: "न जाने अिस बूढेमे क्या जादू है कि सबके सब मत्रमुग्ध बन जाते हैं। कोअी कभी अुनको हरा ही नही सकता।"

नौ बजे प्रार्थना भीतर ही हुअी। बापूजी बहुत थक गये थे। यो तो हम भी थक गये थे, लेकिन मेरे और आभाबहनके पेटमे चूहे दौड रहे थे। खानेको कुछ था ही नही। बापूने हमसे कहा: "अितनी देरसे खानेके बजाय

तुम दोनो भूखी रहो, यही मुझे ज्यादा पसद होगा।" लेकिन भूख किसीके साथ रिश्ता नही पालती। हम दोनोने दस बजे खाना खाया।

बापू ग्यारह बजे सो सके। अुनके सोनेके लिअे हमने खाट रखी और हम दोनोने जमीन पर बिस्तर बिछा लिये। बापूने कहा "तुम नीचे सोओ और मै अिस छत्रपलग पर सोअू, यह कैसे हो सकता है? मेरा बिस्तर भी नीचे बिछा दो।" बापू जिसको छत्रपलग कहते थे, वह दरअसल अेक सीधी सादी खाट ही थी। फिर भी बापू नीचे ही सोये। सुहरावर्दी साहब आज यहा नही सोये। अुनको कुछ काम था, अिसलिअे अुन्होने दूसरे दिनसे यहा सोनेका अपना अिरादा जाहिर किया।

सोदपुरके कुछ आदमी मददके लिअे यहा रहना चाहते थे, लेकिन बापूने मना कर दिया और कहा . "सब अपना-अपना फर्ज पूरा करे, तो वह मेरी ही मदद है।" बापूजीने दोपहरके अेक बजेसे रातके ११ बजे तक कुछ खाया ही नही था और आराम भी नही लिया था। ११-३० को बापू सो गये।

हैदरी मेन्शन, बेलियाघाटा,
गुरुवार, १४-८-'४७

३-२० को प्रार्थनाके बाद बापूने पत्र लिखे। बीचमे गरम पानी और शहद लिया और ५-३० को मोसबीका रस पिया। छ बजे बाहर सडक पर घूमने गये, क्योकि अहाता बहुत तंग था। आनेके बाद मालिश और स्नान। अिस वक्त कृपालानीजी आये। अुनके साथ अेक घटे तक

वाते होती रही । वादमे रेणुका राय, सुरेन्द्रमोहन घोष, तुषारकान्ति घोष, पीस कमेटीवाले लोग और दर्शनार्थियोका अेक वड़ा झुड आया । अिस झुडमे अव भी अुत्तेजित वने हुअे लोग थे । वातकी वातमें तीन वज गये । थोडा आराम करनेके लिअे वापूजी कुछ देर लेटे । लेकिन दर्शनार्थियोका शोरगुल और आना-जाना वढ जानेसे वापूजी सो न सके । नौजवानोने वापूजीको प्रार्थना करनेकी अिजाजत दे दी और ५-३० को वापूजी प्रार्थनाके लिअे गये । करीव दस हजारकी भीड थी । शायद अिससे ज्यादा होगी, मगर कम नही । प्रार्थनाके समय अच्छी शाति थी । वापूजीने अुस वक्त अेक प्रवचन किया । खुद वगालीमे वात नही कर सकते थे, अिसलिअे वापूने लोगोसे क्षमा मागी ।

वापूजीने प्रवचनमे कहा "कल हम लोग अग्रेजोकी गुलामीसे मुक्ति पा जायगे, लेकिन रातके वारह वजेसे हिन्दुस्तानके दो टुकडे हो जायगे । अिसलिअे कलका दिन खुशिया मनानेका और रजका भी है । साथ-साथ हमारे सिर वडी जिम्मेदारी भी आ रही है। हम सब मिलकर प्रार्थना करें कि यह जिम्मेदारी पूरी करनेकी ताकत अीश्वर हमें दे ।

"मै यहा ठहर गया, क्योकि सुहरावर्दी साहवने कहा कि यहा जो आग जल रही है अुसको वुझाओ । अिसके जवावमे मैंने कहा कि आपको भी मेरे साथ फकीर वनना पडेगा । जव अुन्होने कवूल किया तो मैं ठहर गया । आजादी मिलनेके बाद यहाके लोग घमडमे सोचने लगे कि अव तो हमारा

राज्य हो गया, अिसलिअे मुसलमानोको कत्ल कर डालो, तो अिसको मैं वहादुरी नही मानूगा। मेरी दृष्टिमे सब धर्म समान हैं। जब हिन्दू लडके कहते हैं कि मैं हिन्दुओंका दुश्मन हू, तब मुझे हसी आती है। अुन वेसमझ बालको पर गुस्सा होकर मैं करू भी क्या? सुहरावर्दी साहवने प्रार्थनामें शामिल होनेके लिअे अिजाजत मागी, पर मैंने मना कर दिया। अगर कोअी अुनका अपमान करे, तो मैं अुसे अपना ही अपमान समझूगा। यहासे जितने मुसलमानोने हिजरत की है, अुन सबको लौटाना है। यहाके वीस लाख हिन्दू-मुस्लिम आपसमे वैर रखेंगे, तो मैं नोआखाली जाकर वहाके हिन्दुओको किस तरह समझाअूगा? और अिस तरह हिन्दुस्तान भरमे आग फैल जाय, तो अिस आजादीसे क्या फायदा? अिसलिअे हमें अीश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिये कि वह हम सबको सन्मति दे।"

प्रार्थनाके वाद सब लोग पूछताछ करने लगे, कि सुहरावर्दी कहा हैं? अुनके आनेके वाद ही हम जायगे। सुहरावर्दी साहव रोजा खोलकर खाना खा रहे थे। वापूने लोगोको समझाया "वे अभी आते है। अगर अुनके दिलमे सच्चाअी होगी, तो वे मेरे साथ टिक सकेंगे। पर मुझे यकीन है कि अगर वे घमड करते होगे, तो अेक दिन भी मेरे साथ नही टिक सकेंगे।"

अितनेमे सुहरावर्दी साहव आ पहुचे। अुन्होने कहा "यह वगालकी खुशनसीवी है कि महात्माजीने यहा कदम रखे हैं। लेकिन अिसका महत्त्व आप सवको समझ लेना चाहिये। गाधीजी जैसे महापुरुष हमारे घर पधारे है, अिसलिअे

अब तो झगडा छोड दो । हम सब शाति चाहते है । और हम यह दिखाना चाहते है कि हिन्दू-मुसलमान मिल-जुलकर साथ रह सकते है । यहांके हिन्दू अगर अैसी गारन्टी दे कि अब अेक भी मुसलमानकी हत्या नही होगी, तो मै यकीन दिलाता हू कि हिन्दू लोग वहा बेरोक-टोक जा सकेंगे, जहा वे आज नही जा सकते ।"

अिस वक्त अेक भाअीने कहा "लेकिन १६ वी अगस्त १९४६ के दिन जो हत्याकाड हुआ, अुसके लिअे क्या आप जिम्मेदार नही है ? "

अिस पर शहीदसाहबने कहा "अुसके लिअे तो हम सब जिम्मेदार है ।"

अुस नौजवानने कहा "सो तो ठीक, मगर मै पूछता हू अुसका जवाब दीजिये ।"

आखिर सुहरावर्दी साहबने अिकरार किया "हां, अुसके लिअे मै ही जिम्मेदार हू ।"

लोग तालिया बजाने लगे ।

अिस बहसमे रातके आठ बज चुके थे । अुस वक्त किसीने खबर दी कि पाच हजार मुसलमान और पाच हजार हिन्दुओका अेक जुलूस निकला है और हिन्दू-मुसलमान अेक-दूसरेको गले लगा रहे हैं। सुहरावर्दी साहबने यह जाहिर करते हुअे कहा "आप सब देख सकते है कि महात्माजीकी तपश्चर्याका अेक ही दिनमें कितना शुभ परिणाम आया है । शहरमे अितनी शाति है मानो कुछ हुआ ही न हो । अरुणाबहन आसफअली और राममनोहर लोहियाने अेक ठोस काम किया है ।"

रातको नौ वजे सुहरावर्दी साहव वापूजीको 'लेक' पर घूमनेके लिअे ले गये। वहासे मारवाड़ी क्लवमें गये। 'लेक' अितनी दूर थी कि मोटरमे आने-जानेमें भी अेक घंटा वीत गया। अिससे वापूजी नाराज होकर वोले: "तीस मिनट घूमनेके लिअे अिस तरह अेक घंटा वरवाद करना ठीक नही। यह तो घाटेका व्यापार है। दस तो वज चुके। ये लड़कियां खाना कव खायेंगी?"

सुहरावर्दी साहव वोले: "अभी तो सिर्फ दस ही वजे हैं न?"

वापूने जवाव दिया: "आपके लिअे सिर्फ दस वजे हैं, पर मेरे लिअे तो आधी रात हो चुकी है।"

घर पहुंचे तव १०-४५ हो चुके थे। वापूजी ग्यारह वजे सो सके। हम देरसे खानेको गयी, अिससे वे वड़े चिन्तित थे।

कल १५ अगस्त होनेसे वहुतसे लोग अिधर-अुधर जा रहे थे, और मुहल्ले-मुहल्लेमें सारी रात जागकर झंडियां लगा रहे थे। अुनके शोरगुलसे हम रातभर नहीं सो सके।

शुक्रवार, १५-८-'४७

रातको २ वजेसे वापूजी अुठ वैठे। रमजानके दिन होनेसे कितने ही मुसलमान भाअी अैसे थे, जो आजादी दिलानेवाले राष्ट्रपिताके दर्शनके वाद ही खानेवाले थे। अिसीलिअे मकानके वाहरी भागमें वे जमा हुअे थे। हिन्दू तो थे ही। वापूजी अुठकर अुनके सामने गये।

पूज्य महादेवकाकाकी सवत्सरी होनेके कारण प्रार्थनाके समय गीता-पारायण भी हुआ। ३-४५ को गीता-पारायण समाप्त हुआ। सुबहसे ही हिन्दू और मुसलमान लोग लीग और काग्रेसके झडे मोटर लारियोमे साथ-साथ रखकर और 'हिन्दू-मुस्लिम अेक हो' का नारा लगाते हुअे शहर भरमे घूम रहे थे। कहा आजका दृश्य और कहा दो दिन पहलेका! तपश्चर्याका कैसा शुभ फल!! बापूके चेहरे पर आज ज्यादा गाभीर्य था। सवेरे जब हम सडक पर घूमने निकले, तब हजारो स्त्री, पुरुष, बाल-बच्चे दर्शनके लिअे खडे थे। हम आठ बजे घर वापस आये। मैंने कहा "बापूजी, लोग तो आज अुत्सव मनायेंगे और आप क्या अुपवास, मौन व कताअीकाम करायेंगे? आज तो खुशीका दिन है न?"

बापूने कहा: "लोग चाहे सो करे, अुससे हमे क्या मतलब? ब्याहके दिन और बच्चेके जन्म-दिनकी खुशाली पर भी मै तो अुपवास ही करवाता हू न? आज हमारी जिम्मेदारी कितनी बढ गअी है, अिस पर हम शात भावसे मनन करे। चरखेने ही आजादी दिलवाअी है। अुसे हमे नही भूलना चाहिये। और अुपवास करनेसे हमारा शरीर शुद्ध होता है। अिस तरह शुद्ध होकर हम अीश्वरसे प्रार्थना करे कि हम आजादीके लायक बने।"

आज तो बापूजी कुछ भी काम न कर सके। आधे-आधे घटेसे बापूजीको बाहर जाना पडता था। हजारोकी तादादमे लोग दर्शनके लिअे आते थे और कहते थे: "गाधी बाबाकी वजहसे ही यह सब हुआ है।"

कलकत्तेके मंत्री बापूको प्रणाम करने आये थे। अनमे बापूजीने कहा: "आप सब आजसे कांटोका ताज सिर पर रखते है। सत्ताकी कुर्सी बुरी चीज है। असलिअे शासनमे विवेकपूर्ण व्यवहार करना। आप सबको ज्यादासे ज्यादा सत्यपरायण, अहिंसापरायण, नम्र और सहनशील होना चाहिये। अंग्रेजोकी हुकूमत चलती थी, तब आपकी कसौटी थी, फिर भी वह अितनी कड़ी नही थी। पर अब तो लगातार आपकी कसौटी ही कसौटी है। वैभवके जालमे न फसना। अीश्वर आपकी मदद करे। आपको देहातो और गरीबोका अुद्धार करना है।"

दो घंटेमे कलकत्तेका सारा वायुमंडल ही बदल गया। स्त्री-पुरुष हाथमे हाथ मिलाकर 'हिन्दू-मुस्लिम भाअी भाअी' का नारा लगाते थे।

बापूजीकी अिजाजत मिलने पर हम भी अुत्सव देखनेके लिअे बाहर गयी, लेकिन बापूजी नही आये। हिन्दू-मुस्लिम दोनो कौमके लोग आपसमे मिलकर मंदिरो और मस्जिदोमे गये।

५-३० की प्रार्थनामे बेशुमार भीड थी। हिन्दू-मुस्लिम सब आये थे। बापूकी मोटर बहुत मुश्किलसे अिनके बीच होकर अंदर जा सकी और मंच पर पहुचनेमे काफी मुसीबत अुठानी पड़ी। बापूजीने प्रार्थनामे कहा:

"आज हमारी आजादीका पहला दिन है और लोग समझ बैठे कि अब तो राजाजी गवर्नर बन चुके है, असलिअे गवर्नर-हाअुस हमारा ही है। अिस खयालसे लोगोंने सारे बंगले पर कब्जा कर लिया। यह अच्छी बात है और बुरी भी। अच्छी अिसलिअे कि जनता साबित करती है कि अंदर जानेका सब

लोगोको अेकसा अधिकार है। मगर दु खकी बात यह है कि लोगोने मान लिया कि अंग्रेजोके जानेसे हम मनमानी कर सकते हैं और सब कुछ तोडफोड सकते हैं। अिसलिअे मेरा कहना है कि अैसे जगलीपनसे हम बाज आये। खिलाफतके जमानेमे हमने जो अेकता दिखाअी थी, वह आज भी अगर दिखा सके, तो जहरके बदले हमे अमृत ही अमृत मिलेगा।"

बादमे सुहरावर्दी साहबने भी भाषण दिया

"अगर कलकत्तेमे शान्तिकी स्थापना नही होगी, तो हिन्दुस्तानमे किसी भी जगह शाति नही होगी। महात्माजीके कहे मुताबिक हम दोनो अगर साफ दिलसे और शातिसे अपना काम करे, तो बहुत ही फायदा होगा। आपने अिन चौबीस घटोमे देखा भी सही। आज मुहल्ले-मुहल्लेमे हिन्दू-मुसलमान मिल-जुलकर घूमते हैं। अिसमे महात्माजीकी कृपा, अल्लाहकी मेहरबानी और अीश्वरकी दया है।

"आजसे नअी जिन्दगी शुरू होती है। और अुसमें अगर अैसे झगडे होते रहेंगे, तो हम आजादीके लायक नही ठहरेंगे। हमारा देश सबसे बढा-चढा रहे और अुसमे कही दीनता या गरीबी न रहे, अैसी अीश्वरसे मेरी प्रार्थना है।"

फिर जय-हिन्दके बारेमे कहा "मुसलमानोको जय-हिन्द बोलनेके लिअे मजबूर किया जाता है, लेकिन हम मजबूरन कभी नही बोलेंगे। हमारी मर्जीसे हम खुद बोलने लगेंगे। क्योकि हम भी हिन्दुस्तानके ही वतनी हैं।" अितना कहकर अुन्होने खुद ही जय-हिन्दके नारे लगवाये। सारी सभा जय-हिन्दके नारोसे गूज अुठी। बापूके चेहरे पर मद-मद मुस्कान खेल रही थी।

प्रार्थनासे आठ वजे लौटने पर वापूजी प्रफुल्लवावूसे मिले और सुहरावर्दी साहवके अत्याग्रहसे घूमने गये। कलकत्तेकी आजकी रोशनी और हेलमेल दिखानेके अिरादेसे ही सुहरावर्दी साहव वापूको वाहर ले गये। सव लोग वापूकी मोटरको पहचान गये। मुस्लिम मुहल्लेसे गुजरते समय सव मोटरके आसपास अिकट्ठे हो गये। सव लोग जय-हिन्दके नारेसे वापूका सत्कार करते थे और छोटे-छोटे वच्चे तो वापूसे प्रेमसे 'शेकहेन्ड' करते थे। कितने ही लोग वापूजी पर गुलावजल और अित्र छिडकते थे।

९-४५ को घर लौटे। वापूजीको वेहद थकान थी। थोडा कामकाज निवटाकर १०-३० को विस्तर पर लेट गये।

४

'हिन्दू-मुस्लिम भाअी भाअी'

हैदरी मेन्शन, वेलियाघाटा,
शनिवार, १६-८-'४७

हमेशाकी तरह ३-३० वजे अुठकर प्रात कार्योसे फारिग होकर प्रार्थना की। अिसके वाद डाक पढकर कुछ पत्र लिखे। ६-३० को सड़क पर घूमने निकले।

वापूजी घूमते-घूमते भी लोगोको सवक सिखाते थे। हजारोकी मेदिनी दर्शनार्थ आयी हुअी थी। सवको दरवाजेके पास विठाकर वापूजीने समझाया कि तुम शोर मचाते हो, लेकिन मुझसे यह सहा नही जाता। लोग शात हो गये। वापू नगे पैर घूमने जाते थे, क्योकि लोगोने थूक-थूक कर रास्ते

गदे कर दिये थे। अैसा करनेमे बापूजीका अिरादा यह था कि अगर खुद नगे पैर चले, तो सब लोग रास्ते पर गदगी करनेमे हिचकिचायेगे। और सचमुच परिणाम भी अैसा ही आया। बापूने कहा "देखा न? मेरे अिन दोनो सबकोका लोगोने स्वागत किया।"

घूमनेके बाद मालिश और स्नान तथा ९-३० बजे भोजन वगैरा हमेशाकी तरह चला।

मुलाकातियोमे आज ११-३० को मुख्यत राजाजी आये थे। गवर्नरके नाते राजाजी आज पहली ही बार बापूसे मिलने आये। पहलेके जमानेमें जब गवर्नरोसे मिलना होता था, तो बापूको अुनके यहा जाना पडता था। लेकिन आज यह पहला ही दिन था जब हिन्दके पहले गवर्नर स्वय बापूके पास आये थे। दोनो बूढे बहुत प्रसन्न थे। अैसी गदी जगह होने पर भी राजाजी अपने चप्पल ठेठ अहातेमे छोडकर नगे पैर बरामदा पार करके बापूके कमरेमें गये। बहुतेरे लोग बापूके कमरे तक चप्पल पहनकर ही आते थे। फिर भी राजाजीने अैसा नही किया। राजाजी करीब अेक घटा यहा ठहरे।

१२-३० से ५ तक अेकके बाद अेक लगातार डेप्युटेशन आते रहे और सब अेकता और राहतकी ही योजना सामने रखते थे। ५-३० बजे प्रार्थना-सभामे गये। पहले शहीद साहबका भाषण हुआ "अिन दो-तीन दिनोमे हमने जो शाति महसूस की, अुसके लिअे हमे महात्माजी, ओश्वर और अल्लाहका अुपकार मानना चाहिये। अुन्हीके प्रतापसे अैसे भयं-कर हत्याकाडकी जगह अैसी शाति कायम हो सकी है। स्त्रियां

भी आपसमे मिलती है। पर अिस शातिको अब स्थायी बनानेकी जिम्मेदारी हमारी है। अब तो दोनों जातियोके भाअियोको मिलकर देशकी खिदमत करनी चाहिये। मुसलमानोंको भी अैसी प्रतिज्ञा लेनी चाहिये कि अबसे हम अेक भी हिन्दूको नही मारेंगे। व्यापार-रोजगारमे हिस्सेदार बनकर कारोबार करेंगे। यह हिन्दुस्तान सिर्फ हिन्दुओका नही, हम सबका है। सबके मुहसे जय-हिन्द निकलना चाहिये। गाधीजीकी कृपासे आज तकके सब पाप नष्ट हो रहे है। और अब यही कामना करे कि गरीबोकी तरक्की हो।"

अिसके बाद बापूका प्रवचन हुआ। बापूने भी अैक्यके लिअे ही अनुरोध किया और कहा कि अगर हम स्थायी शाति रखेंगे, तो सारे भारत पर असका अच्छा असर होगा। गवर्नर हाअुससे कुछ चीजे तोडकर कोअी ले गये थे, असके बारेमें बापूने कहा : "हिन्दुस्तानकी अैसी ख्याति है कि यहा पहले किसी भी घरको ताला नही लगाया जाता था। रामराज्यमे कभी अैसी चोरी नही होती थी। तब हम अितने सच्चे और प्रामाणिक थे। अैसे देशके लिअे यह घटना लज्जास्पद है। अिसलिअे मै आपसे विनती करता हू कि जो कोअी ये चीजें अुठा ले गये हो, वे वापस लौटा दे।"

प्रार्थनासे लौटनेके बाद बापू घूमे। स्कॉटिश चर्च कॉलेजके श्री कैलासजी मिले। अुन्होने धर्म और राष्ट्रके परस्पर सबधके बारेमे सवाल पूछा। बापूने कहा : "राष्ट्र किसी खास धर्म या संप्रदायका नही होता। वह अिससे सर्वथा

स्वतन्त्र रहेगा। हरअेक आदमीको मनपसंद धर्म अपनानेका अधिकार रहेगा।"

१०-३० को बापूजी बिछौने पर लेटे।

१७-८-'४७

३-३० से नित्यका कार्यक्रम शुरू हुआ। आजका सारा दिन कार्यकर्ताओंसे मिलनेमें, अुन्हें सलाह-सूचना देनेमें और लेख भेजनेका आखिरी दिन होनेसे 'हरिजन' के लिअे लेख लिखनेमें बीता। प्रार्थना नानकुडगामें हुअी थी। खूब लोग अिकट्ठा हुअे थे। प्रार्थनामें पहले सुहरावर्दी साहबका भाषण हुआ. "जिस जगह हिन्दू और मुसलमान अेक-दूसरेके यहां मोटर पर भी नहीं जा सकते थे, वहां आज अेक छोटासा बच्चा भी निर्भयतासे जा सकता है। आपको हमेशा याद रखना चाहिये कि अिसके लिअे हम गांधीजीके कितने अहसानमन्द हैं।" अैक्यके बारेमें भी अुन्होंने कहा। फिर बापूजी बोले : "आप सब मुझे मुबारकबाद देते हैं, लेकिन मुझ जैसा अेक अल्प आदमी क्या कर सकता था? हमारे दिलमें घमंड न होना चाहिये। हिन्दू 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' और मुसलमान 'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद' पुकारते हैं। अिसमें कितनी मिठास है! लेकिन ये नारे कोअी आदमी सिर्फ मुझे खुश करनेके लिअे और किसीके डरके मारे न बोले। सब अपने अिष्ट-देवको साक्षी रखकर सच्चाअीसे ये नारे लगाये।"

तदुपरांत अैक्यके बारेमें और चन्द्रनगरके सत्याग्रहके बारेमें भी कहा : "अगर हरअेक आदमीको बार बार अिस

तरह सत्याग्रह ही करना हो, तो फिर जवाहरको प्रधान मंत्री बनानेकी कोओी जरूरत नही। सत्याग्रहका भी कोओी नियम होता है।"

आगे चलकर बापूजी अपने निवासस्थानके बारेमें कहने लगे "अब लोगोका यह खयाल हो गया है कि किसीका हुक्म माना ही न जाय। मेरे डेरे पर लोग आते है, शोरगुल मचाते है और पुलिसको गालिया देते है। बेचारे पुलिसवाले तोबा पुकारते है। पुलिस हमारी नौकर जरूर है, पर सरकार ही अुसको हुक्म दे सकती है, हम नही। हरअेक आदमी अगर अिस तरह पुलिसवालेको हुक्म देने लगे, तो बेचारे पुलिसवालेका दम ही टूट जाय। अगर हम अैसा करेंगे, तो आजादी खो देंगे। हा, अगर पुलिस नौकरसे मालिक बनना चाहे, तो आप शिकायत कर सकते है। लेकिन अुसका तो यही फर्ज है कि गुनहगारको पकड़ा जाय। अिसलिअे आजसे मैंने पुलिसको हटा देनेके लिअे कहा है। यह बडे दुखकी बात है कि हमारे खातिर अुन लोगोको आपकी गालिया बरदाश्त करनी पडती है। अब आपको हमें मारना हो तो मारना और हमारी हिफाजत करनी हो तो हिफाजत करना। आप मुझ पर प्रेम रखते है यह ठीक है। लेकिन सोडा वाटरकी बोतलकी तरह हदसे ज्यादा अुमड़ना ठीक नही।"

प्रार्थनाके स्थान पर बहुत कीचड़ था। सुहरावर्दी साहबको तो अुठाकर ले गये, लेकिन बापूने अिनकार कर दिया। बापू दलदलमें घुटनो तक फस गये थे।

प्रार्थनासे नौ बजे वापस आकर बापूने अेक घटा सुहरावर्दी साहबसे बाते की। १० बजे सो गये।

सोमवार, १८-८-'४७

आज तो बापूका मौन दिन था। प्रार्थनाके बाद साढे छ बजे लेखन-कार्यसे फारिग होकर बाहर घूमने गये। शाति ठीक-ठीक मालूम होती थी। आज मिलिटरीको छुट्टी दे दी। स्वयसेवक अच्छी मदद करते है। ग्यारह बजे बराकपोरके लिअे प्रस्थान किया। पहुचनेमे अेक घटा लगा। भीड बहुत थी। जयनादसे बापू हैरान हो गये। बराकपोरमे जुलूस निकालनेके बारेमे कुछ झगडा हो गया था। आखिर समाधान हुआ और हिन्दू-मुसलमान दोनोने अेक-दूसरेको गले लगाया। डेढ बजे बापूने सबको अीदकी मुबारकबादी दी और लिखित सदेशा दिया।

अेक मुस्लिम भाअीने कहा: "हमसे कोअी भी गलतिया हो गअी हो तो माफ कीजिये। हमने अब तक बहुतसी गलतिया की है। लेकिन अब हम भाअी-भाअीकी तरह प्रेमसे रहना चाहते है।" अिसके बाद हिन्दू-मुस्लिम अेक-दूसरेको गले मिले।

शहीदसाहबने कहा "सबसे पहले हमको यही सबक सीखना चाहिये कि हम आपसमे कभी झगडा ही न करे। अेक-दूसरेके घर पर जायेंगे, खायेंगे, पीयेंगे और झडा लहरायेंगे। जो कुछ हो गया है, अुसको भूल जायेंगे। दो दिन बराकपोरमे कुछ झगडा हो गया, लेकिन अब हम कलकत्ते जैसी शाति बढायेंगे।"

मुस्लिम भाअियोने वापूसे विनती की कि "अव हमारी मा-वहने आपका दर्शन करना चाहती हे। अिसलिअे आप अुनको दर्शन देकर जाअिये।" वापूने मजूर किया।

हिन्दू भाअियोने कहा "हम मुसलमानोंके दिलको नाखुश करके वाजे नही वजायेगे, और मस्जिदके पाससे गुजरते वक्त वाजे वंद रखेगे।"

वापूका लिखित सदेश. "मै अुम्मीद रखता हू कि जो फैसला हुआ है, अुसको सव कवूल रखेगे। अैसा न हो कि यहा जितने आदमी हाजिर है, अुतने ही कवूल रखे और गैरहाजिर आदमी चाहे जो करे। हिन्दुओको खयाल रखना चाहिये कि मस्जिदमे नमाज पढते वक्त वाजा नही वजाया जाय। आप सव साफ हृदयसे वात करे। लीग और काग्रेसके वीच अैसा तय हुआ है कि कोअी भी प्रश्न हल न हो सके, तो पंच द्वारा अुसका निकाल किया जाय, जवरदस्तीसे नही। अगर हम क्रोधमे आकर लड़ेंगे, तो हमे कभी शाति नही मिलेगी।"

यहाके वाजारोके वीच मुस्लिम वहनोके घर थे। सव वहने वापूके दर्शनके लिअे वहा खड़ी थी। हमारी मोटर अुधरसे होकर गुजरी।

चार वजे वेलियाघाटा वापस आनेके वाद वापूने काता और दूध पीकर प्रार्थनाके लिअे रवाना हुअे। आज अीद होनेके कारण वहुतसे मुसलमान आते थे। वापूजी सवको फल देते थे।

प्रार्थना ‘मोहमेडन स्पोर्ट्स’ मे हुअी। करीब चार-पाच लाखकी भीड होगी। बडी मुश्किलसे मच तक पहुचे। दो बार बापू गिरते-गिरते बचे। हिन्दू-मुस्लिमोकी विराट सभा देख-कर बापूके चेहरे पर आनदकी आभा फैल गअी। जो रास्ता हमारी मोटरके लिअे दो मिनटका था, अुससे दरवाजेके भीतर आने-जानेमे आधा घटा लग गया। लोग बापूके चरण छूनेके लिअे तरस रहे थे। बेचारे शहीदसाहब पसीनेसे तरबतर हो गये। यहा अुनकी घडी टूट गअी।

हमेशाकी तरह शहीदसाहबका भाषण हुआ .

“ अीदका दिन मुसलमानोके लिअे बडे आनन्दका दिन है। लेकिन आजका आनद अनोखा है। क्योकि जहा करीब अेक सालसे कत्लेआम चलता था, वहा आज अैसा पहला ही दिन अुगा है, जब अिस तरह हिन्दू-मुसलमान भाअियोकी तरह बहने भी निर्भय बनकर बैठ सकती है। अल्लाह और बापूका लाख-लाख शुक्र है।”

कलकत्तेके मेयर अुस्मानसाहबने कहा “आजका दिन अितिहासके लिअे बडा अमूल्य है। जो दृश्य १९२०-२१ मे देखा था, वही आज हम देख रहे है। आज सारा झगडा दूर हो गया है। जब हिन्दुस्तान आजाद हो रहा था, तब मै बहुत परेशान था कि अब क्या होगा। लेकिन अल्लाह और गाधीजीकी बडी कृपा है कि आजादी मिलनेके आधे घटे पहले ही सारा झगडा शान्त हो गया। अब आजादीकी हिफाजत कैसे की जाय, यह देखना हमारा फर्ज है। आजादीके जगमे

जितने बलिदान हमने दिये हैं, अुनसे दुगुने बलिदान भी आजादीकी रक्षाके लिअे देने पडे, तो हम सब खुशीसे दे।"

बापूका प्रवचन

"मेरा सबसे पहला फर्ज तो यह है कि यहा जितने मुस्लिम भाअी आये हैं, अुन सबको मैं अीदकी मुबारकबादी दू। अेक अैसा जमाना भी था, जब दोनो अीद मुबारक कह-कर अेक-दूसरेको गले लगाते थे। फिर भी आज हमें कबूल करना पडेगा कि कअी सालोके बाद पहली दफा यह दृश्य हमने देखा है। यहा मुस्लिम लीग, नेशनल गार्ड और कांग्रेसके स्वयसेवकोको देखकर मैं फूला नही समाता। लेकिन अिस अैक्यको स्थायी बनाना चाहिये। क्योकि अब अंग्रेजोकी जगह हमें देशका सारा काम करना है। आजके दिनका यह दृश्य मैं कभी नही भूल सकूगा।"

प्रार्थनाकी भीडसे मुश्किलसे बचकर बापू मोटरमें बैठे। रास्तेमें अुन्होने हमसे खिलाफतके दिनोकी बात कही "खिलाफतका मतलब यह है कि खलीफाका शासन कायम रखना। अुस वक्त अलीभाअियोने खास तौरसे मदद की थी। वह हलचल सालो तक जारी रही। अुस वक्त कुछ झगडे होने लगे, अिसलिअे मुझे १९२१ में अुपवास करने पडे। अुस जमानेका दृश्य आज आखोके सामने तादृश खडा हो जाता है। अुस वक्त मैंने जो वक्तव्य प्रकाशित किया था, अुसके बारेमें अलीभाअियोने कुछ विरोध अुठाया था और तबसे हमारे सबधोमे थोडी खटास आ गअी थी।"

प्रार्थनाके बाद बापूने फल और दूध लिया। ९-४५ को घूमने गये। बाहर बहुत शोरगुल होता था। अिसलिअे लोगोंसे कहा "अिस तरह शोरगुल मचाते रहोगे तो मेरी जान ले लोगे। पर मैं यों ही व्यर्थ मरनेकी अिच्छा नहीं रखता। अिसलिअे आपको जो शोभा दे वैसा ही वर्ताव करो।"

१०-३० को बापूजी सो गये।

५

शांतिका सप्ताह

बेलियाघाटा,

मंगलवार, १९-८-'४७

हमेशाकी तरह ३-३० को प्रार्थना हुअी। नित्यकर्मसे फारिग होने पर ९-३० बजे बापूजीका नित्यका कार्यक्रम शुरू हुआ। शहीदसाहब सबसे पहले मुलाकाती थे। वे अेक घंटा बैठे, फिर बंगालके मंत्रीगण आये।

१२ बजे हम कचरापाडा जानेके लिअे रवाना हुअे और दो बजे वहां पहुंचे। वहां भी लोगोंको शान्त करनेमें सब परेशान हो गये। वहांके हिन्दू मुसलमानोंसे [illegible] अैसी शिकायत थी। वहां २५,००० हिन्दू और ८००० मुसलमान रहते हैं। हिन्दुओंमें [illegible] है। सभामें बापूने कहा, आजको [illegible] तो मैंने [illegible]। जिन्दगीमें मैंने बहुत सेवा की है और [illegible]

आज्ञाकारी भी हैं। वे सब आज क्या पागल हो जायगे? जिनकी आबादी ज्यादा है, अुन्हें होशमें रहना चाहिये।"

सुहरावर्दी साहबने कहा "यह तिरंगा झंडा राष्ट्रका प्रतीक है। चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, सबको अिस झंडेकी शान रखकर अिसीको लहराना चाहिये।" अिसके बाद अैक्यके बारेमें भी बहुत कुछ कहा।

आखिर दोनोंके बीच मेल हो गया और दोनों जातियोंके लोग हिलमिलकर तिरंगा झंडा लहराते जुलूसमें निकले।

यहांसे तो हम ३-३० को रवाना हुअे, लेकिन मोटरमें हमको जगह-जगह ठहरना पड़ा। अिसलिअे प्रार्थनामें पहुंचनेमें बहुत देर हो गअी। सात बज गये।

बापूने कचरापाड़ाकी सभामें जो कहा था, वही प्रार्थना-सभामें भी कहा। यह भी कहा कि "अंग्रेजोंके शासन-कालसे अैसी प्रथा चली आअी है कि मस्जिदके सामने कभी बाजा न बजाया जाय। जब तक कांग्रेस या लीग अथवा जवाहर या लियाकतअली कोअी नअी प्रथा शुरू न करे, तब तक अुसी पुरानी प्रथाको निभाना चाहिये। अत. मस्जिदके पास बाजा बजानेसे मुसलमानोंका दिल दुखे, तो अैसा नहीं करना चाहिये।"

९ बजे प्रार्थनासे आकर बापूने काता, दूध पिया और घूमनेके बाद ग्यारह बजे सो गये।

२०-८-'४७

सुबह ३-३० के बाद रोजका कार्यक्रम चला। प्रात-कार्य समाप्त होने पर मुलाकाती आने लगे। साढ़े ग्यारहको

राजाजी आये। अुनके साथ बापूजीने अेक घटा बात की। तीन बजे प्रेस कान्फरेन्स थी।

प्रेस कान्फरेन्समे अेक व्यक्तिने बापूजीसे पूछा कि कुमारी चद्रलेखा पडित अमेरिकामे राजदूत बनेंगी, अैसा लोगोका खयाल है। अठारह सालकी छोटीसी लडकी राजदूत बनकर क्या करेगी?

बापूने कहा "यह प्रश्न जवाहर पर अिलजाम लगानेवाला है। अिसका मै सचोट जवाब दे सकता,हू। लेकिन अिस वक्त मै राजनैतिक क्षेत्रमे पडनेका अिरादा नही रखता। मै तो अिस समय सिर्फ हिन्दू-मुसलमानोमे अेकता कायम करनेके प्रयत्नमे लगा हू। अिसके बारेमे अगर कुछ प्रश्न पूछने हो तो खुशीसे पूछे। मै प्रेसवालोको अनुपयोगी और निकम्मे नही समझता। मै अुनका अुपयोग हिन्दू-मुस्लिम अैक्यके प्रयत्नमे करना चाहता हू। आप अैसा वातावरण पैदा कर दीजिये कि पाकिस्तान या हिन्दुस्तानकी सरकार पागल बन जाय, तो भी हिन्दू-मुस्लिम जनता अुच्छृखल बनकर अेक-दूसरेका खून न करे। अिसे देखनेको मै तरस रहा हू। मै जो भी कुछ प्रार्थनामे बोलता हू या लिखता हू, वह सब हमेशा सोच-विचार कर ही करता हू।"

अिस तरह बापूजीने आधा घटा प्रवचन किया। प्रेस कान्फरेन्ससे आकर बापूजीने दूध और फल लिये। अितनेमे प्रार्थनामे जानेका वक्त हुआ। आज प्रार्थनाका स्थान कैनिंग स्ट्रीट, पोलाक स्ट्रीट, मुरघीहाटा और कोलू टोलामे नियुक्त किया गया था। बापूकी बैठक जिस जगह रखी

गअी थी, अुसके अेक ओर मदिर, दूसरी ओर मस्जिद और तीसरी ओर गिरजाघर था ।

अिसी जगह १६ अगस्त १९४६ के दिन खूरेजी शुरू हुअी थी । और यहीसे १५ अगस्त १९४७ के दिन हिन्दू-मुस्लिम अेकताका प्रारभ हुआ था । वहुत वड़ी तादादमे लोग अिकट्ठे हुअे थे । यहाके रहनेवाले लोगोका खयाल था कि सभामे करीव सात लाख आदमी होगे । शोरगुल भी वहुत ही था । प्रार्थनाके वाद रामधुन पूरी होने पर तालिया वजी । वापूने कहा " प्रार्थना कोअी नाटक-सिनेमाका तमाशा नही है, और न वह कोअी प्रदर्शन जैसी चीज है । यह तो अीश्वरका स्मरण करनेका रास्ता है । अिसलिअे तालिया नही वजानी चाहिये ।"

फिर अुन्होने कहा . "मै तो अव नोआखाली जाना चाहता हू । यहा जो अैक्य हुआ है, अुसके लिअे मै आपको वार-वार धन्यवाद देता हू । फिर भी आपको असावधान नही वनाना चाहता । आप सभी सावधान रहना, जगह-जगह पर शाति-कमेटीकी स्थापना करना और शातिका वातावरण फैलाना ।"

झडेके वारेमे कहा : "मै सच्चा हिन्दू हू, अिसलिअे मै तो दोनो झडे लहराअूगा । क्योंकि अव हम दोस्त वन गये हैं । भले पाकिस्तानमे यूनियनका झडा न लहराये । यह अुनके लिअे शर्मकी वात होगी । अमेरिका और अिग्लैड दोनो साथ मिलकर त्यौहार मनाते है और झडे लहराते है,

क्योंकि दोनोंमें मैत्रीभाव है। दूसरे लोग क्या करते हैं, अुस पर ध्यान न रखकर हम सब अपना फर्ज बजायेंगे, तो अुसका अच्छा असर होगा ही।"

गोरक्षाके बारेमें अुन्होंने कहा "मुझ जैसा गायका पुजारी शायद ही कोअी होगा। अखबारमें मैंने पढ़ा है कि डालमियाने कहा कि यूनियनकी सरकार कानूनके जरिये गोमांस खाने पर प्रतिबंध लगा सकती है। परंतु अैसा कानून कैसे बनाया जा सकता है? गाय पर जितने सितम हम गुजारते हैं, अुसकी अपेक्षा अुसे अेकदम कत्ल करके खा जानेमें कम पाप होगा। मैं तो मानता हूं कि शायद अिससे पुण्य भी होता होगा। अतः गोवधको रोकनेका कानून बनानेसे पहले हमें यह सीखना चाहिये कि गायको किस तरह पाला जाय। अिससे गोवध अपने-आप बन्द हो जायगा।"

सुहरावर्दी साहबने अैक्यके बारेमें बहुत ही समझाया। मुसलमानोंको अैसी राय दी कि आपको भी कांग्रेसका झंडा लहराना चाहिये। अंतमें कहा "अिसी जगहसे खूंख्वार झगड़ा शुरू हुआ था और अिसी जगहसे हिन्दू-मुस्लिम अैक्यकी घोषणा हुअी है। आज सात लाख हिन्दू-मुसलमानोंकी मेदिनीके बीच आग बुझानेवाले, अमृतकी धारा बहानेवाले महामानव गांधीजीके चरणोंने अिस भूमिको छुआ है, अिस-लिअे यह भूमि चिरस्मरणीय बनी रहेगी।"

वहांसे नौ बजे आकर बंगालके मंत्रियोंके साथ मंत्रणा हुअी। दस बजे घूमने गये और साढ़े दस बजे सो गये।

मृदुलाबहनने बिहारसे फोन किया था कि यहा कलकत्तेका गहरा असर हुआ है। यह सुनकर बापूजी बहुत खुश हुअे।

हैदरी मेन्शन,
२१-८-'४७

साढे तीनको जागनेके बाद प्रार्थना वगैरा रोजका कार्यक्रम। सुबह बारिश हो रही थी अिसलिअे घूमनेका प्रोग्राम मौकूफ रहा। मालिश, स्नान, भोजन आदि सब कार्य शांतिसे हुअे। मुलाकातियोकी तादाद भी कम थी।

'हरिजन' के लिअे लेख और पत्र लिखनेमें बापूका समय व्यतीत हुआ। तीन बजे तक बापू शांतिसे काम कर सके। यहा आनेके बाद असा यह पहला ही दिन बीता।

तीन बजे बापू बहनोकी सभामे गये। सभाका स्थान युनिवर्सिटीमे रखा गया था। बहुत ही शोरगुल मच रहा था। बापू वैसे ही पौन घटा बैठे रहे। कितने ही आदमियोने सभामे शांति कायम करनेका प्रयास किया, लेकिन कोअी फल न निकला।

आखिर बापूने शुरु किया "आज तक मै बहनोकी कअी सभाओमें गया हू, लेकिन आजका शोरगुल सहा नही जाता। मै तो सिर्फ अेक सेवक हू। मुझे आदेश मिला कि तुम बहनोकी सभामे जाओ। अिसलिअे यहा आया हू। जहां तक संभव हो यहासे जल्दी ही जानेका मेरा अिरादा है। जितनी बहने यहा आअी है, वे सब मुस्लिम बहनोके पास जाये। बहनें भी बहुत अच्छा काम कर सकती है।

मेरी नोआखाली यात्रामें मेरी पोती मेरे साथ थी। अुसको मैं हमेशा बहनोंके पास भेजता था। बहनें अुसे अपनी आपबीती सुनाती थीं। वह सब सुनकर मैं हैरान-परेशान हो जाता था। बहनें मेरी पोतीकी जांच भी करती थीं। बहनें भी अस्पृश्यता-निवारणके कार्यमें मदद दें।"

प्रार्थनाका समय हो गया था, अिसलिअे वहांसे तुरन्त प्रार्थनामें गये। प्रार्थनाका स्थल पार्क सर्कसमें रखा गया था। प्रार्थनाके बाद सुहरावर्दी साहबका भाषण हुआ। हमेशाकी तरह अुन्होंने अेकताके बारेमें कहा "लेकिन अब तो जहांसे हिन्दुओंने हिजरत की है, वहां अुन्हें फिरसे लौटना है। मुस्लिमोंको भी अैसा ही करना है और अेक-दूसरेकी हिफाजत भी करनी है। जितना हक हिन्दुओंका है, अुतना ही मुसलमानोंका है। अगर यहां हिन्दुओं पर कुछ भी आफत आये, तो मुसलमानोंको अुन्हें बचानेके लिअे अपनी जान कुरबान कर देनी है। तभी वे वफादार मुस्लिम माने जायंगे। महात्माजीके अेक सेवकने अैसा संदेशा भेजा है कि कलकत्तेकी शांतिसे बिहारमें गहरा असर हुआ है। बम्बअी, अहमदाबाद, पंजाब वगैरा यूनियनके सब हिस्सों पर अिसका असर हुआ है। अिसलिअे अब हम अपनी आबरू गंवा न दें, अिसकी हमें सावधानी रखनी चाहिये। बल्कि अैसा बर्ताव करना चाहिये, जिससे सारी दुनिया कलकत्तेमें जो कुछ हुआ था अुसे भूल जाय। हमें अैसा वातावरण पैदा करना चाहिये कि सब लोग बिना रोक-टोक निडर बनकर अपने घर जा सकें। दोनों कौमोंकी

जय हो । वोलो — जय-हिन्द ।" सब लोगोने जय-हिन्द कहा ।

प्रार्थना-सभामे अेक हिन्दू लडका पाकिस्तानका झडा और अेक मुसलमान लडका हिन्दुस्तानका झडा हाथमें लेकर खडे थे । अिसके वारेमे वापूने कहा : "जिस तरह ये दोनो झडे मिलकर लहराते है, अुसी तरह हमारे दिल हिलमिल जाये, तो किसका झडा वडा है और किसका छोटा, अुससे हमारा कोअी मतलव नही । पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके लोगोके दिल साफ होगे, तो जैसे भिन्न देहोमे आत्मा अेक ही होती है, अुसी तरह दोनोका अटूट सम्वन्ध हो जायगा ।" फिर कायमी अेकताके वारेमे कहा और हिजरती लोगोसे निडर वनकर वापस आनेका आग्रह किया ।

वहासे नौ वजे लौटनेके वाद सुहरावर्दी साहवसे वाते करने लगे । ९-४५ के वाद घूमे और ग्यारहको सो गये ।

२२-८-'४७

आज वापूजी ३-१५ को जागे । पू० वा (श्री कस्तूरवा) की मासिक पुण्यतिथि होनेसे प्रार्थनाके वाद गीता-पारायण हुआ । अुसमे अेक घटा वीस मिनट लगे । प्रार्थनाके वाद रोजका कार्यक्रम चला । मालिश और स्नानके वाद दस वजे भोजन करते हुअे वगालके मन्त्रियोके साथ वातचीत हुअी । वे लोग वारह वजे गये । फिर वंगाल केमिकलके मजदूरोके साथ, जो हडताल पर अुतरे थे, वाते हुअी । वापूने अुन्हे हडताल न करनेको समझाया ।

दो बजे कस्तूरबा ट्रस्टमें काम करनेवाली बहनोकी सभामे गये ।

बहनोने सूतके हार बापूके गलेमें पहनाकर स्वागत किया। बापूने कहा "जो बहनें बुनना जानती हो, वे यह सब सूत ले जाये।"

अेक बहनने पूछा "देहातोमे सेवाका कार्य किस तरह किया जाय? भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न प्रकार बताते है। अुनमे से कौनसा प्रकार हम अपनायें?"

बापूने कहा "हमेशा काम करते रहनेसे काम सीखा जाता है। देहातोमे जाकर सेवामें जुट जाओ। जो व्यक्ति सेवा करनेकी तमन्ना रखता है, अुसको कोअी फिक्र कैसे हो सकती है? अगर तुम निडर हो गअी हो, तो देहातोमे जाकर पाच वर्षके अन्दरके बच्चोकी सेवाका काम हाथमें लेकर बैठ जाओ। अुनको स्नान कराओ, साफ-सुथरा बनाओ। फिर पढ सकनेवालोको पढाओ। गावकी सफाअी तुम भी करो और बालकोसे भी कराओ। और सेविकाके खर्चकी जिम्मेदारी देहातोके लोग अपने सिर ले। मगर वे लोग खर्च देनेसे अिनकार करे, तो मैं भूखे पेट रहकर भी सेवा करनेकी सलाह दूगा। खर्च देनेका मतलब यह नही कि तुम्हारी फैशनका खर्च भी देहाती दे। खर्चका सच्चा मतलब खाने-पीनेका खर्च है। रोटी-दाल जो भी किसान खाते हैं, वही तुमको भी खाना पडेगा। अिस तरह तुम देहातोमे रहोगी, तो ग्रामजनता तुमको अपनावेगी।"

वहन — कभी वहनोने लगातार डेढ़ सालसे गावमें अपना डेरा डाला है। सफाओी वगैराका काम वे करती है। लेकिन अुसका कुछ भी नतीजा नही निकला।

वापू — देहातियोने अव तक कुछ भी तालीम नही पायी है। अुनके लिअे काफी धैर्य और सच्चाओीसे काम करनेका जोश होना चाहिये।

वहन — लेकिन लोग कहते है कि अिसका निर्वाह और किसी जगह नही हो सकता, अिसलिअे हमारे गावमे आ गअी है।

वापू — सारी जिन्दगी अैसे गावमे वितानी पड़े और अैसी कडी वाते सुननी पडे, तो भी क्या हो गया? सव सुन लिया जाय। हमने ग्रामजनताके साथ काफी गैरअिन्साफ किया है। अव अुसका प्रायश्चित्त करना ही पडेगा। प्रेमा-वहन कटक कितने ही सालोसे अेक ही गावमें अपना डेरा लगाकर वैठी है। यशोधरावहन मैसूरमे कुछ वर्षोसे अुसी तरह वैठी है। अत सालो तक जव हम लगातार काम करते रहेंगे, तभी वह पूर्ण होगा।

वहाकी वातचीत चार वजे समाप्त हुअी। अुसके वाद वापूजीने काता और जो मुलाकाती आये थे, अुनसे कातते हुअे मिले। पाच वजे देशवन्धु पार्कमे प्रार्थना हुअी। वादमे सुहरावर्दी साहवने अेकताके वारेमे और मुसलमानोसे तिरंगे झडेके नीचे काम करनेके वारेमे कहा। राहतके लिअे चंदा देनेकी विनती भी की।

बापूने रामधुन गाने और अेकसाथ ताल देनेकी बात समझाते हुअे कहा "अुसमें से नअी ताकत पैदा होती है। मिलिटरीके सैनिक अेकसाथ तालसे चलते हैं तो कितना सुन्दर लगता है! हालांकि मैं मिलिटरीका विरोध करता हूं। अुसकी वजहसे कितने ही लोग मारे गये हैं। अगर हमको अुसका मुकाबला करना हो, तो तालबद्ध रामधुन गाना ही अुसका तरीका है। मुझे पूरा भरोसा है कि अुसके जरिये जगतको शांति मिलेगी।" फिर अेकताके बारेमें और पंजाबमें जो दंगा हुआ था, अुस पर अपने विचार बताये।

साढे सातको घर आकर दूध पिया, फल खाये और बंगालके मंत्रियोंके साथ थोडीसी बातचीत की। दस बजे घूमकर सो गये।

हैदरी मेन्शन, बेलियाघाटा,
२३-८-'४७

हमेशाकी तरह साढे तीनको जागे। प्रार्थनाके बाद कुछ खत लिखे और बाहर घूमने गये। बापूने कहा : "मैं बाहर नंगे पैर फिरता हूं, यह मुझे पसन्द है। अिससे मुझे नोआखालीकी यात्रा याद आती है।" घूमनेके बाद मालिश और स्नान हुआ और 'हरिजन' के लिअे लेख लिखनेमें लगे रहे। मौन धारण करके लेख लिखते थे। बिना मौन रखे काम नहीं हो सकता था। अिस बीच भोजनमें और आराममें आधा आधा घंटा बीता। दो बजे तक यही काम होता रहा।

दो बजेसे मुलाकातें शुरू हुआी। मैं और आभाबहन हरिजनवासमें गयी। बापू भी वहां आये, अैसी वहांके लोगोंकी अिच्छा थी। हरिजनवास पहुंचनेमें कितना समय लगता है, यह मालूम करनेके लिअे बापूने हमसे घडी ले जानेको कहा था। हरिजनोंके मकान साफ-सुथरे थे। लगातार दोसे पांच तक बापूकी मुलाकातें जारी रहीं। मुलाकातियोंमें मुख्यतः कार्यकर्ता थे।

प्रार्थना बुडलेण्ड्समें कूचविहारके महाराजाके बंगलेमें हुआी।

बापूने अैक्यके बारेमें कहा। अिसके अलावा समझाया कि 'अल्लाहो अकबर' पुकारनेमें हिन्दुओंको कोअी अेतराज न होना चाहिये। अुसी तरह मुसलमानोंको भी 'वन्दे-मातरम्' पुकारनेमें कोअी विरोध नहीं होना चाहिये। यों तो दोनोंके आदर्श भिन्न हैं। अेक सूत्र धार्मिक है और दूसरा राजकीय है। 'अल्लाहो अकबर' का मतलब है, अीश्वर महान है। यह सूत्र अरबीमें है, अुससे हमें क्या? अैसा कहनेसे हमें कोअी पाप थोडे ही लगता है? और 'वंदेमातरम्' का मतलब है, हमारी प्राणसे अधिक प्रिय भारतमाताको हमारा वन्दन। अुसमें बुरा क्या है? लेकिन आजकल हमारा दिमाग फिर गया है। जब हमारे दिल अेक हो जायंगे, तब मुझे तो यकीन है कि मुसल-मानभाअी काली माताकी पूजा करेंगे और हिन्दू भी निःसंकोच मस्जिदमें जायंगे।

शहीदसाहबके बारेमे कहा : "लोग कहते है कि शहीदसाहब तुमको धोखा देंगे। पर मैं तो मानता हू कि जो करेगा सो भरेगा। अगर शहीदसाहब मुझे धोखा देते हो, तो अुससे खोयेंगे वे, मैं नही। अीश्वर धोखेबाजोको कभी माफ नही करता। अैसा नही है कि मुझे अुन पर पूरा यकीन हो गया है। कभी अैसा दिन आयेगा, तो मैं खुद जनताको बता दूगा। वे यहा दो दिनसे सोते है। मेरे साथ रहनेवाली आभा और मनुने अुनसे कहा कि 'आप वादा करके भी यहा क्यो नही सोते?' अिन छोकरियोंने तो मजाकमे यह बात कही, लेकिन वे सब कुछ समझ गये और अब यहा सोते है। मेरा तो अैसा मानना है कि यदि कोअी आदमी हमेशा चोरी करता हो और बादमे कहे कि मुझ पर विश्वास रखो, क्योकि अबसे मैं कभी चोरी नही करूगा, तो हमें अुस पर विश्वास रखना चाहिये। और मैं तो श्रद्धा रखनेवाला आदमी हू।"

प्रार्थनासे लौटकर बापूने दूध और फल लिये। जवाब न दिये हुअे पत्रोकी जाच की और जवाब देने योग्य पत्रोंके जवाब लिखे। साढे नौ बजे घूमने गये और दसको सो गये।

हैदरी मेन्शन, बेलियाघाटा,
२४-८-'४७

साढे तीन बजे प्रार्थनाके बाद 'हरिजन' के लिअे लेख लिखे। बारिश होनेसे बाहर घूमने नही जा सके। 'हरिजन' जारी रखने या बद करनेके बारेमे पाठकोसे

अभिप्राय मागा। वापूजी भीतर ही घूमे। सब साथ-साथ घूम सके, अितनी जगह नही थी। जब बापूजी घूम रहे थे, तब मैं अेक पाट पर बैठी थी। बापूने पूछा. "क्या तू आलसी हो गअी है?"

मैंने कहा: "कैसे?"

बापूने कहा "तू घूमती क्यो नही? मेरे अुठ जानेके बाद तुम सब अिस तरह कुर्सी पर ही बैठोगे क्या? तुझ परसे मैं दूसरे सबका अनुमान लगा सकता हूं, क्योकि तू अिस महायज्ञमें मेरे साथ है। जो यज्ञ नोआखालीमें शुरू हुआ था, वह नोआखाली छोडनेके कारण पूरा नही हो जाता। न घूमनेका तेरे पास चाहे जो कारण हो, लेकिन हम प्रतिदिनका अपना कार्यक्रम कैसे छोड सकते हैं? मेरे डरसे घूमनेसे कोअी फायदा नही है। क्या अिसका यह मतलब हुआ कि मेरे सब कार्यकर्ता मेरे डरसे ही काम करते हैं? मैं तुझको हरअेक कार्यकर्ताका प्रतीक समझता हू। फिर सोचता हूं कि क्या सभी ओहदेके लालचमें पड जायेंगे और कुर्सी पर बैठ जायंगे?"

मैं समझ गअी कि अिस बातसे बापूजीको गहरा दु:ख हुआ है। बात कितनी भी छोटी क्यों न हो, बापूजीकी निगाहमें वह कभी छोटी नही होती थी।

९-३० को बापूजी गुसलखानेमें नहाते-नहाते ही जूथिका रायके मीठे भजन सुनते रहे। वे बहुत खुश हुअे। अुनकी नजरमें समयका कितना मूल्य था! वे अिस प्रोग्रामके लिअे अलग वक्त निकाल ही नहीं सकते थे। अिसलिअे

अुन्होंने कहा कि "मैं बाथमें होअू तब भजन गाया जाय। मैं 'बाथरूमसे ही सुनता रहूंगा।"

१० बजे अन्नदाबाबू (यहांके गृहमंत्री) आये। किसीने अुनको फोनसे खबर दी थी कि गांधीजीको गोली मार दी गअी है। घबराहटके मारे बेचारे चले आये। बापूजीको हाल सुनाया। बापूजी बहुत हंसने लगे — "मेरी अैसी किस्मत कहां कि कोअी मुझे गोली मारे।"

५ बजे मॉनुमेन्टमें प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके पहले बापूको चांदीके कास्केटमें अभिनन्दन-पत्र दिया गया। बापूने तुरन्त ही अुसको नीलाम कराकर हरिजनोंके लिअे पैसे अिकट्ठे किये।

प्रार्थनाके वक्त आज शहीदसाहबने अंग्रेजीमें बोलते हुअे कहा "मैं खुदासे प्रार्थना करता हूं कि बापू बहुत वर्षों तक हमारे बीच जिन्दा रहें। अिस बातमें शक नहीं कि ये महामानव हैं। चक्रके निशानवाला झंडा हम सबके लिअे है। हमारे देशको अूंचा अुठाकर अुसे अिस महापुरुषके लायक बनाना हमारे हाथकी बात है।"

अिसके अलावा, वे कायमी अैक्य — अित्तिहाद पर भी बोले।

बापूने मानपत्रके बारेमें कहा "शहीदसाहबने मुझसे मानपत्र स्वीकार करनेको कहा। मैं क्यों अिनकार करूं? मैं तो लोभी ठहरा। हरिजनोंके लिअे किसी जगह अेक पाअी भी कोअी भेंट करता हो, तो मैं वहां जरूर जाअूंगा।"

फिर म्युनिसिपैलिटीका जिक्र करके बापूजीने कहा "मैं तो चाहता हूं कि कलकत्तेका नम्बर सफाअीमें सब

शहरोसे आगे रहे और मौतका प्रमाण सबसे पीछे। कलकत्तेको बकिंघम जैसा शानदार शहर बनाना चाहिये। जब हम सचमुच सब अेक हो जायगे, तब यह सब हो सकता है।" — आखिरी वाक्यमे अिस तरह अैक्य पर जोर देकर बापूजी रुक गये।

प्रार्थनासे लौटने पर बापूजीने मौन लिया। आज नौ बजे सो गये। यहा आनेके बाद यह पहला ही दिन है, जब बापूजी अितनी जल्दी सो सके।

६
तूफानकी आगाही

हैदरी मेन्शन, बेलियाघाटा,
२५-८-'४७

३-३० को प्रार्थनाके बाद बापूजीने डाक देखी और फिर सो गये। आज बारिश थी अिसलिअे मकानके भीतर ही घूमे। मालिश और स्नानके बाद मुलाकाती आते रहे। बापूजीने तो मौन लिया था। बहुतसे पत्र लिखे और दोपहरको अेक घंटा सोये। बहुत दिनोकी थकान आज दूर हुअी।

शामको पाच बजे बापूजी प्रार्थनामे गये। प्रार्थना आज हावड़ा मैदानमें रखी गअी थी। अैक्य पर जोर देते हुअे शहीदसाहबने कहा: "मुझे अिस बातमे शक नही कि अगर महात्मा गाधी यहा नही आये होते, तो हावडा आगसे भस्मीभूत हो जाता। अब पंजाबकी खबरे सुनकर किसीको

अपना होश नही गवाना चाहिये। आप सब यहा शात रहेगे, तो पजाबमे अपने-आप शाति हो जायगी। महात्माजीने यहाके वायुमडलको पवित्र बना दिया है। ओीश्वर–खुदाकी अैसी ही मेहरबानी बनी रहे।" बादमे अुन्होने जय-हिन्दका नारा लगवाया।

बापूने भी अैक्य पर कहा . "पजाबके कअी भाअी मेरे पास आये थे। अुन्होने मुझसे कहा कि जवाहरलालजी पजाब गये है और आप भी जाय। मैने अुनसे कहा, जब मेरे दिलकी आवाज आयगी तभी मै जाअूगा। लेकिन पहले मै यहाका काम तो पूरा कर दू। मैने पजाबकी बहुत सेवा की है। सिर्फ गुजरात ही मेरा नही है। सारे प्रान्त मेरे है। यहा बैठे-बैठे भी मेरे हाथो वहाका कार्य हो रहा है। फिर भी मै पजाब तो जाअूगा ही। यह कब होगा, मै नही कह सकता। यहासे फारिग होकर अेक बार मै नोआखाली जाना चाहता हूं। हिन्दू-मुसलमान अेक-दूसरेसे अगर मेल-मिलाप नही करेगे, तो हमारा जहाज वहा नही पहुचेगा जहा कि हम अुसे पहुंचाना चाहते है।

"अेक मुस्लिम भाअीने मुझसे कहा कि हिन्दू-मुस्लिम अेक नही है, क्योकि मुसलमान अेक ही खुदाको मानते है और हिन्दू पेड, पत्थर और प्राणी — अिन सबकी पूजा करते है। अगर अैसा ही हो तब तो यह अेक सुन्दर दृष्टान्त है। क्योकि ओीश्वरने ये सब चीजे बनायी है और हम सब अिनकी पूजा करते है। मिट्टीमे भी हम जिसको पाते है, वह ओीश्वर अेक ही है। ओीश्वरकी दुनिया बहुत विशाल है।

"अिस वुढापेमें जो काम हुआ है, अुसको स्थायी वनाओ, यही मेरे दिलकी ख्वाहिश है।"

वारिश चालू थी, फिर भी लोग शांतिसे खड़े रहकर वापूकी वात सुन रहे थे। वापूने क्षमा मागते हुअे कहा "अैसी वारिशमे भी खडे रहकर आपका मेरी बातें सुनना यह वताता है कि आप सव मुझ पर कितनी मुहब्बत रखते हैं। यह देखकर मुझे शर्म आती है कि आप सव भीग रहे हैं और मैं यहा आरामसे वैठा हू। मुझे यकीन है कि सच्ची मुहब्बत कभी किसीका वुरा नही करती। आप सव मुझे माफ करना।"

प्रार्थनासे लौटनेके वाद वापूजीने काता। मुस्लिम लीगके कुछ लोगोके साथ पंजावके वारेमे वातें हुअी। दस वजे वापूजी घूमे। १०-३० को विछौने पर लेटे।

हैदरी मेन्शन,
२६-८-'४७

आज रातको वापूजी अच्छी तरह नही सो सके। वारह वजे जागे। अुन्होने वत्ती की। अितनेमे मैं भी जाग अुठी। वापूजीने मुझसे सो जानेको कहा। अुन्होंने वचे हुअे कामको पूरा करना शुरू किया। १२ से १-३० तक काममें लगे रहे। १-३० को लेटे। मैंने पाव, पीठ और सिर दवाया। वे कहने लगे - "मैं आज वहुत अुद्विग्न हू। अगर अपने ही लोगोंको समझानेमे नाकामयाव रहूंगा, तो फिर मैं किसे समझा सकूंगा? लेकिन जिन आदमीने अीश्वरको अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है, अुसको अैसी चिन्ता भी क्यो हो?

पर अब भी ओीश्वरमे मेरी श्रद्धा अितनी हद तक कच्ची है। अगर मैं अैसी अटूट श्रद्धा पा सकू कि मैं स्थितप्रज्ञ हो जाअू, तो मैं नाच अुठूगा। अिसके लिअे मेरी कोशिश जारी है। पर अिस दरजे पर पहुचनेके लिअे धीरज चाहिये।"

दो बजे बापूजी सो गये। ३-३० को प्रार्थनाके लिअे जागे। प्रार्थनाके बाद सोये नही, काममे लग गये। ७-३० को हरिजन-बस्तीमे घूमने गये। वहासे ८-३० को लौटे। मालिश और स्नानके बाद ९-४५ से मुलाकाते शुरू हुअी। प्रथम तो खाना खाते-खाते ही काकासाहबके साथ अेक घटे तक बाते हुअी। फिर बापूजीने आराम लिया। रातको वे सो नही सके थे, अिसलिअे १२ से १ तक सोये। १-१५ से फिर मुलाकाती आने लगे। बगालके सब मत्री दो बजे तक ठहरे। बापूजीने बिछौने पर लेटे-लेटे ही थोडा लिखवाया। पाच बजे मैदानमे प्रार्थना थी, वहा गये।

बापूजीने प्रार्थनामे कहा "अब तो जिन घरोसे लोग हिजरत कर गये है, अुन लोगोको वापस लौटना चाहिये। पुलिसवालोको अपने फर्ज पर मुस्तैद रहना चाहिये। 'यह हिन्दू है और यह मुसलमान'—अैसा भेद दूर हो जाना चाहिये। लोगोने मेरे पास फरियादे पेश की है। हिन्दू कहते हैं कि मुसलमान अफसर हमारी नही सुनते और मुसलमान कहते है कि हिन्दू अफसर हमारी नही सुनते। अैसा नही होना चाहिये।

"अेंग्लो-अिन्डियन फरियाद करते है कि 'अग्रेजोके जमानेमे वे सब आधे अग्रेज माने जाते थे। आज अुनकी बेअिज्जती हो रही है। क्या अब हिन्दुस्तानी अेंग्लो-अिन्डियन लोगोकी हिफाजत नही करेंगे?' हा, वे लोग अगर हिन्दुस्तान पर हमला करे तो दूसरी बात है। वे हमला करें तो भी अिसका निबटारा तो हुकूमत कर सकती है। आपस-आपसमे कोअी नही कर सकता। लेकिन अगर वे हिन्दुस्तानी बनकर रहे, तो अुनकी बेअिज्जती नही होनी चाहिये। हम अब जातिभेदको हटा दे और सब सच्चे हिन्दुस्तानी बन जाय। हिन्दुस्तानके लिअे सब साथमे जिये और साथमे ही मरे। अैसा दिन अगर हम ला सकें, तो सारी दुनियाके लोग हमारा अनुकरण करेंगे।"

शहीदसाहब भी अैक्य पर बोले। बादमे अुन्होंने कहा: "लोग प्रचण्ड जयघोषसे बापूको रास्तेमे परेशान करते है और मोटरको भी जगह-जगह ठहरानेकी जरूरत पडती है। आजादी आयी है तबसे सब लोग बुलद आवाजसे जय-हिन्दके नारे लगाते है। बात तो अच्छी है, मगर गाधीजीके कान अिन नारोको बरदाश्त नही कर सकते। अिसलिअे सबको शान्ति रखनी चाहिये।"

प्रार्थनाके बाद हम जादवपुरके क्षय अस्पतालमे गये। हरअेक मरीजके बिछौनेके पास जाना शक्य नही था। जिन मरीजोकी हालत गभीर थी अुनके पास गये। बादमे बाहरसे ही अेक चक्कर लगाया। अन्य सब मरीज, जिनमे बाहर आनेकी ताकत थी, अेक जगह पर अिकट्ठे हुअे। बापूने

अिन सबको अेक ही सदेश देकर असीस दी, "ओश्वर तुम्हारा भला करे।"

लौटनेके बाद कुछ जरूरी खत लिखे। दस बजे आधे घटे तक घूमे। १०-३० को सोये। आज बापूजीको बेहद थकान थी। सिर्फ दूध और फल ही लिये।

बेलियाघाटा,
२७-८-'४७

३-३० को जागे। प्रार्थना और खत लिखनेका दैनिक कार्यक्रम वैसा ही चला। बापू सारे दिनमे सिर्फ सुबह ही लिखनेके लिअे वक्त निकाल पाते है। बादमे तो दिनभर मुलाकातियोका ताता बंधा रहनेसे कुछ भी लिख-पढ नही सकते। सुबह १० से ५ तक मुलाकाते, आराम, खाना-पीना, मिट्टीका अिलाज, कातना — सब बाते रोजकी तरह चली। पाच बजे खिदिरपुर मैदानमे प्रार्थना हुअी। खिदिरपुरमे मजदूरोकी काफी आबादी है। अुनसे बापूजीने कहा "किसी भी मजदूरको अेक-दूसरेके साथ लडना नही चाहिये। पूजा करना या नमाज पढना, यह तो व्यक्तिगत प्रश्न है। अिस कारणसे हिन्दूको ज्यादा पैसा देना और मुसलमानको कम या मुसलमानको ज्यादा और हिन्दूको कम, अैसा भेदभाव नही रखना चाहिये। ज्यादा होशियार मजदूरको ज्यादा मजदूरी मिलनी चाहिये। लेकिन मेरी तो ख्वाहिश है कि मालिक भी मजदूर बन जाय और ट्रस्टीकी हैसियतसे काम करे। मगर यह तो अेक स्वप्न है।

"मजदूरको कंगाल और दीन बनकर नहीं जीना चाहिये। मालिकका मालिक चादीका सिक्का है, लेकिन

मजदूरका मालिक अुसके हाथ-पैर हैं। पैसेके चले जानेका डर रहता है। हाथ-पैरके कही चले जानेका डर न होने पर भी मजदूर भिखमगोकी तरह जीते है और अपने ही मनसे अपनेको गरीव, दीन मान लेते हैं। लेकिन मजदूरको समझना चाहिये कि करोडोकी जो आमदनी होती है, वह अुसीके वल पर होती है। वूद-वूदसे ही समन्दर वनता है और तभी वड़े-वड़े जहाज समन्दरकी सैर कर सकते हैं। अेक वडा अिन्जीनियर भी मजदूर है, अेक ड्राअिवर भी मजदूर है। सव मजदूर मिलकर अपनी वास्तविक जरूरतोका अेक अदाज तैयार करके अपनी मजदूरीका सच्चा मूल्य मालिकके सामने पेश करे और कहे कि हमे अच्छी खुराक और दूव-फल वगैरा मिलना चाहिये हमारे वालकोकी पढाअीका अिन्तजाम होना चाहिये और हमे हवा-रोशनीवाले मकान मिलने चाहिये। अगर अितनी सहूलियते हमे मिले, तो हम और कुछ नही चाहते। परिणाम यह होगा कि सारी दुनिया अेक हो जायगी। पर मजदूर माने कि मै हिन्दू हू, तो मेरा मालिक भी हिन्दू होना चाहिये, तव तो मजदूरकी तरक्की किसी रोज भी नही होगी, और मालिक भी वैसा ही रहेगा। मै तो अपनेको किसान, हरिजन और मजदूर समझता हू।"

सुहरावर्दी साहव अैक्य पर वोले और अुन्होने चक्रके निशानवाले झडेके नीचे ही काम करनेके लिअे लोगोको समझाया। यह मजदूर मुहल्ला गदा था। अुन्होंने अिसे कवूल किया और कहा. "यह गदगी वर्षोकी है और जव मै प्रधान मंत्री वना, तव मुझे अिस ओर देखना चाहिये था। पर अफसोसकी

वात है कि प्रधान मत्री बननेके बाद सिर्फ दो महीनोमे ही हिन्दू-मुस्लिम दगा हो गया और मै कुछ भी न कर सका। लेकिन अब सब्र रखना। सव अच्छा ही होगा।"

अिस मुहल्लेमे मुस्लिमोकी काफी वस्ती है। अुनको जय-हिन्द वोलनेके लिअे भी अुन्होने समझाया।

वहासे रातको नौ वजे लौटे। आनेके वाद वापूजीने थोडा आराम किया। वादमे दूध और फल लिये। फिर घूमे और सुहरावर्दी साहवके साथ वाते की। १०-३० को सोये।

२८-८-'४७

३-३० को प्रार्थनाके वाद 'हरिजन' के लिअे वापूजीने लेखन-कार्य किया। पत्र लिखवाये। जवाहरलालजीको अेक लम्बा पत्र लिखा। सात वजे घूमने गये। वादमे १० वजे मालिश करवाअी और स्नान किया। खानेके वक्त डाक सुनी और पत्र लिखवाये। आराम लिया। अितनेमे १२-३० हो गये। सुहरावर्दी साहवके साथ वाते हुअी। अेकके वाद अेक प्रतिनिधि-मडल मुलाकातके लिअे आते रहे। आजकी प्रार्थना सायन्स कॉलिजमे हुअी।

वापूने विद्यार्थियो और विद्यार्थिनियोसे कहा "तुम सवके जन्मके पहले मै अनेक विद्यार्थियोके संपर्कमे आया हू। अिस-लिअे मै तुम्हारे लिअे अजनवी नही हूं। तुम्हारे वाअिस-चान्स-लरने शिकायत की है कि तुम सव कावूके वाहर हो गये हो। तुम सोच-समझकर अगर किसीकी कैद वरदाश्त करो तो यह अेक वहुत अच्छी वात है। हर किसीको अपने-अपने गुरुकी

कैदमें रहना चाहिये। अिस थानमें कोअी बदनामी नहीं है। अिसमें संयम है। जो विद्यार्थी संयममें नहीं रहते, वे सब विद्यार्थी नामके लायक ही नहीं हैं। हिन्दू धर्ममें विद्यार्थी ब्रह्मचारी होता है और अुसको साधु-सन्यासीकी तरह रहना चाहिये। और चौथी अवस्था फिर सन्यासके लिअे आती है। जो आदमी अपनी अिन्द्रियोंको संयममें रखता है, वही गुरु-जनोंकी आज्ञाओंका पालन कर सकता है। तुम्हारे वाअिस-चान्सलर भी सामने बैठे हैं। महाभारतका युद्ध हुआ तब कृष्णने क्या कार्य किया था? वे प्रेमवश होकर सारथी बने थे।

"मैं आजके अिस दृश्यके लिअे तैयार नहीं था। अिस बोर्ड पर लिखकर तुमने शहीदसाहबको गालियां दी हैं। यह बोर्ड मेरे सामने रखा गया है। और तुमने लिखा भी है परदेशी जबानमें। लेकिन तुम्हें समझना चाहिये कि अुनसे चले जानेको कहना मुझसे चले जानेको कहनेके बराबर है, क्योंकि हम दोनों भागीदार बन चुके हैं। अब तो अुनकी बेअिज्जती मेरी ही बेअिज्जती है।

"वाअिस-चान्सलरने कहा कि आप यहां प्रार्थना कीजिये। लेकिन मेरे भागीदारको छोड़कर भला कैसे आ सकता हूं? तुम सबने सुहरावर्दी साहबकी बेअिज्जती की है। अिससे तुमने मेरी, वाअिस-चान्सलरकी और तुम्हारे गुरु-जनोंकी बेअिज्जती की है। किसी भी मेहमानको अेक बार बुलानेके बाद तो अुसका सत्कार करना ही विद्यार्थियोंका फर्ज हो जाता है — भले वे अुसे चाहते हों या न चाहते हों। मैंने बाअिबल, कुरानशरीफ और हमारे हिन्दू

शास्त्रोका अध्ययन किया है। सब धर्मग्रंथ यही कहते हैं कि पढानेवालोको हम शिक्षक, गुरु या मौलवी किसी भी नामसे क्यो न पुकारे, हमे अुनका कहना मानना चाहिये। न मानना हो तो शालासे हट जाना चाहिये। विद्यार्थी-अवस्थामे पहला और चौथा आश्रम अेक ही है। हरअेक विद्यार्थीको नम्र और विनयी बनना चाहिये। जिसे विद्याभ्यास ही करना है, अुसे शादी और विषयभोगसे दूर रहना चाहिये। मै मानता हू कि विद्यार्थियोके हाथमे हुकूमत आनी चाहिये। पर विषयाध, अुद्धत और शराब-तमाकूके आदी विद्यार्थियोके हाथमे अगर हुकूमत आ जाय, तो हिन्दुस्तानका क्या हाल होगा?"

बापूने आज सुहरावर्दी साहबको भाषण देनेसे रोका, क्योकि विद्यार्थी अुनको देखकर भडक गये थे। वहासे नौ बजे लौटे। बापूने प्रवचनकी नोध ली। शहीदसाहबके साथ बाते हुअी। १० बजे घूमे। १०-३० को सो गये।

२९-८-'४७

आज बापूजी २-३० को जाग अुठे। बहुतसा लिखना बाकी था, अिसलिअे लिखनेमे मशगूल हो गये। ३-३० को प्रार्थना वगैरा हमेशाकी तरह चला। १० से ५ तक मुलाकाते, लेखन-कार्य, आराम वगैराका कार्यक्रम रहा।

पाच बजे टॉलीगजमे प्रार्थना-सभा हुअी। प्रार्थनाके बाद 'वदेमातरम्' गाया गया।

बापूजीने अिस गीतके बारेमे कहा: "जब 'वदेमातरम्' गाया गया, तब सब खडे हो गये थे। सुहरावर्दी साहबने

मुझसे पूछा कि 'क्या मैं खड़ा हो जाअूं?' तब मैंने कहा कि 'हां'। क्योंकि सब खड़े हो जाय और वे बैठे रहें, तो शायद कोओी अुलटा अर्थ समझ ले।

"लेकिन यह अंग्रेजोंका निकाला हुआ तरीका है। अपने यहांकी प्रणाली तो गानेके वक्त तनकर बैठनेकी है। अिस गीतमें सिर्फ हम अपने वतनकी सराहना करते हैं। 'वंदेमातरम्' कोओी मजहबी चीज नहीं है। यह अेक बहुत गूढ़ चीज है। अिसके नशेमें अनेकोंने अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी है। लेकिन सारे हिन्दुस्तानके लिअे अिस गीतका अेक ही सुर और अेक ही ताल बांध देनी चाहिये।"

अैक्यके बारेमें भी बापूजी बहुत बोले।

कुछ औसाओी बापूके पास आये थे। अुनकी शिकायत थी: "हिन्दू लोग हिन्दुस्तानमें रहेंगे, मुसलमान पाकिस्तान चले जायंगे। लेकिन हम कहां जायें?"

बापूने जवाब दिया: "अगर आप अपनेको चालीस करोड़में ही शामिल करते हैं, हिन्दुस्तानी मानते हैं, तो फिर यह संकुचित प्रश्न क्यों पैदा होता है?"

सुहरावर्दी साहबने झंडेके बारेमें बोलते हुअे मुसलमानोंसे कहा: "आप सब अगर हिन्दुस्तानके वतनी बनकर रहना चाहते हो, तो यह तिरंगा झंडा ही आपका सच्चा झंडा है। आप सबको अिसे ही सलाम करना चाहिये। किसीने मुझसे कहा कि मैं डरसे जय-हिन्द बोलता हूं। मगर मैं तो अिस देशका बाशिन्दा हूं और अिसी हैसियतसे जय-हिन्द बोलता हूं। जय-हिन्दका नारा लम्बे अरसेसे निकला है। लेकिन पहले

मैंने किसीसे कभी जय-हिन्द नही कहा, क्योंकि हिन्दुस्तान अखड था। पर अब तो हिन्द सचमुच अलग हो गया है और हिन्द ही बन गया है। फिर, मैं हिन्दुस्तानका — यूनियनका वतनी हू। मैं औमानदारीसे जय-हिन्द बोलता हू। अिस बातमें किसीको शक नही रखना चाहिये। बोलो जय-हिन्द।"

प्रार्थनासे ९-४५ को वापस आये। आनेके बाद बापूजीने काता, क्योंकि आज वे अिससे पहले कात नही सके थे। घूमनेके बाद १०-३० को सोये।

बेलियाघाटा,
३०-८-'४७

प्रार्थनाके बाद बापूजीने 'हरिजन' के लिअे लेखन-कार्य किया। ६-३० को घूमने गये। लौटनेके बाद नित्यके अनुसार मालिश और स्नान। १० बजे खानेके वक्त हॉरेस अेलेक्ज़ेडरसे बातें हुअी। १२ बजे अुनके जानेके बाद बापूजीने मौन लिया। 'हरिजन' के लेखन-कार्यमें १२ से ३ तक लगे रहे। बीचमें थोडा आराम लिया। ३ से ५ तक मुलाकाती आते रहे। प्रार्थना आज शामको पांच बजे कलकत्तेसे सोलह मीलकी दूरी पर बसे हुअे बारासेरमें हुअी।

अैक्यके अलावा बापूके पास अेक दूसरा सवाल आया कि "हिन्दुस्तानके लोग भूखो मरते हैं, रोटीके मोहताज हैं। जो हाल लदनका है, वही हिन्दुस्तानका है। हिन्दुस्तानके पास पूरे कपडे भी नही हैं। मिल-मालिकोंको देना चाहिये।"

बापूने कहा, "मैं तो दूसरी ही बात आपके सामने रखूगा। किसीके पास भिखमगोंकी तरह हाथ क्यों फैलाया

जाय ? मै मत्री होता तो कहता कि अपनी रोटी आप ही पैदा कर लो। कपडे भी आप ही पैदा कर सकते है। मेरा अर्थशास्त्र यह है कि यज्ञ करो और यज्ञ करके ही खाओ। यज्ञका अर्थ सिर्फ हवन-होम नही है। यज्ञका अर्थ है पूरी मेहनत-मजदूरी करके ही रोटी कमाना। सब लोग अगर अुत्साहसे अेकसी मजदूरी करने लगे, तो हिन्दुस्तानकी सूरत ही बदल जाय। जहा-जहां तमाकू पैदा होती है, वहासे अुसे हटाकर अनाजकी फसल पैदा की जाय। नोआखाली सोनेका टुकडा है। वहा नारियल, मछली और चावलकी कितनी भरमार है! कराचीसे चावल आये और नोआखाली खाये, यह कैसी शर्मकी बात है? और सब लोग काते तथा अपने-अपने कपड़े तैयार कर ले, तो मिल अपने-आप खतम हो जायगी। हमारे यहा रूअी भी बहुत पैदा होती है। मगर मेरी बात मानता कौन है? हमारे पास करोडो हाथ है! मिलमे तो करीब अेक ही लाख आदमियोको मजदूरी मिलती है। दूसरे लाखो-करोडो बेकार बैठे रहते है। लेकिन यह हिसाब आज कोअी समझना ही नही चाहता।"

सुहरावर्दी साहबने भी अैक्यके बारेमे बहुत कुछ कहा। बापूको आज काफी जुकाम था, अिसलिअे घर लौटकर फौरन बिछौने पर लेट गये।

३१-८-'४७

३-३० को प्रार्थना वगैराका कार्यक्रम हमेशाकी तरह रहा। बापूको जुकाम है, फिर भी काम चालू ही रखा।

बापूजीने नोआखाली जाना तय कर लिया है । प्रवासके बारेमे चारुबाबू चौधरी और प्यारेलालजीके साथ बातें हुअी । १० से ३-३० तक लगातार मुलाकाती आते रहे । ३-३० को ग्रान्ड होटलमे गये । अब तक यहाका तरीका अैसा था कि कोअी भी हिन्दुस्तानी अिस होटलमे दाखिल नही हो सकता था । यहा बापूजीने कहा · " मैं तो अिस जगह पर भिखारीकी तरह आया हू । भिखारी भी मैं आजकलका नही हू । विलायतसे लौटा तबसे ही मैंने भिखारीपन सीख लिया है । हमारे यहा दगोंमे बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है । और पहली स्थिति लौटानेके लिअे हमे पैसेकी जरूरत तो होगी ही । आप कह सकते हैं कि सब कुछ हुकूमत करेगी । पर आज हमारी हुकूमत है । सरकारी मत्री लोगोके सेवक हैं, नौकर हैं, प्रतिनिधि हैं । भले किसी बुरे हिन्दू या मुसलमानने गुनाह किया हो, पर वह हमारे ही किये बराबर है । मतलब यह है कि हर कोअी अिसके लिअे अपनी-अपनी जेबमें हाथ डाले ।"

अैक्यके बारेमें भी बापूजीने कहा ।

शहीदसाहबने भी अेक करोड रुपयोकी अपील की और हमेशाके लिअे शान्ति रखनेको कहा ।

यहासे सीधे बागमारीकी प्रार्थना-सभामे गये । वहा बापूने कहा " आज हम दोनो आपके लिअे भीख मागने गये थे । अिरादा यह है कि जो मकान भस्मीभूत हो गये हैं, अुन सबको नये सिरेसे बधवाकर लोगोको फिरसे बसेरा दिया जाय । २ तारीख को मैं नोआखाली जाना चाहता हू । मेरे जानेके बाद यहा थोडीसी भी अशान्ति नही होनी चाहिये ।"

लौटनेके बाद अुस्मानसाहबके साथ बातें हुअी। नौ बजे बापू सोये। बापूको आज थोड़ासा बुखार था।

अिस महीनेमें बापूजी नोआखाली-प्रवासके लिअे सोच रहे थे। वे जाते तो अगस्तके शुरूमें ही, पर अितनेमें कलकत्तेमें खतरनाक दंगा शुरू हो गया। अिसलिअे बापूजीने बेलियाघाटा, कलकत्तेमें ही ठहरकर अशान्तिको मिटाकर दोनों जातियोंमें फिरसे हेलमेल स्थापित किया। शायद अब भी सख्त कसौटी बाकी होगी।

साम्प्रदायिक दंगोंको शांत करनेके भगीरथ प्रयत्नमें जबसे बापू प्राणपनसे जुटे थे, तभीसे अुनके अुपवासकी तलवार सिर पर लटक रही थी। बिहारके हत्याकांडके वक्त हमेशा यही डर बना रहता था कि अुपवास आज शुरू होगे या कल। लेकिन आदमी जो कुछ सोचता है, वह नहीं होता। अीश्वर और ही कुछ कराता है। अिसलिअे अुस वक्त तो हम अुपवासके जो बादल मंडरा रहे थे, अुनसे बच गये। लेकिन जहां हमें कल्पना भी नहीं थी, वहीं अुपवासकी नौबत आअी। सत्यकी सच्ची कसौटीकी शुरुआत अिस महीनेके आरंभमें हुअी। और अिस कसौटीमें बापूजी अितनी हद तक कामयाब हुअे कि अुनके तपके प्रतापसे फिर कभी कलकत्तेमें दंगा नहीं हुआ।

७

दंगा फूट पड़ा

हैदरी मेन्शन, कलकत्ता,
३१–८–'४७, रक्षाबंधन

आज रातको यहा अेक घायल आदमी आया। हकीकत यह थी कि वह आदमी ट्राममे से गिर गया था, अिसलिअे अुसको चोट पहुची थी। लेकिन लोगोने अुसे मार-पीटकर यह कहनेके लिअे मजबूर किया कि मुसलमानोने मुझे घायल किया है। रातको दस बजे ही जुलूस निकाल कर लोग अुसको ले आये। सब लडके ही थे। बापूजी सोये हुअे थे। शोरगुल सुनकर मै बाहर आयी। आभाबहन तो बाहर ही थी। टोलीको शान्त रखनेके लिअे वे दरवाजे पर खडी थी। हम दोनो अुन लोगोको शान्त रखनेकी कोशिश कर रही थी। मैंने कहा, "अिस तरह शोरगुल मचानेसे दोनोको तकलीफ होती है — घायल आदमीको और बापूजीको भी। यों तो कोअी कुछ सुन ही नही सकता। अत आप लोग अपने दो प्रतिनिधियोके जरिये आभाबहनको सब हकीकत समझा दे। बगाली होनेसे वे सब बाते अच्छी तरह समझ लेगी और हम दोनो गाधीजीके सामने आपकी सारी बाते पेश कर देंगी।"

लेकिन लडकोको रोकना मुश्किल साबित हुआ।

रातके दस बज चुके थे। फिर सारे मकानमे हम सिर्फ तीन ही जन थे — बापूजी, आभाबहन और मै। सुहरावर्दी

साहब बाहर गये थे। प्यारेलालजी, निर्मलबाबू और चारुबाबू, जो बापूजीको नोआखालीके लिअे बुलाने आये थे, भी बाहर गये हुअे थे। हम दोनो नोआखाली जानेकी तैयारिया कर रही थी। दूसरे रोज सुबहमे ही हम नोआखालीके लिअे रवाना होनेवाले थे। पर 'जानकीनाथ भी नही जानते थे कि प्रभात कैसा होगा'। ठीक अैसा ही हुआ।

लडकोकी तादाद बढती गयी। वे तोडफोड़ करने लगे। बत्तियो और खिडकियोके शीशो पर पत्थर फेंकने लगे। सब चूर-चूर हो गया। अिसके अलावा, अिस मकानके दो मुसलमानोको, जिनके यहा हम मेहमान थे, पकडकर अुनका काम तमाम करनेका भी अुनका अिरादा था। वे भाग-दौड करने लगे।

बापूजीको सख्त जुकाम था और अुनका मौन-दिन था। फिर भी वे अुठकर बाहर आये। अिधर मै और आभाबहन टोलीके बीचमे थी। पर अुसमे शरीफ आदमी भी थे। हमसे कहते थे कि बहनो, आप अन्दर चली जाय। वे अिसकी पूरी सावधानी रखते थे कि हमे कोअी मारे-पीटे नही। अितनेमें बापूजी दरवाजे पर आये। हम भी अुनके पास जा पहुची। हमारे साथ बिसेनभाअी थे। वह नगे बदन थे, अिससे कुछ लोग मान बैठे कि वह मुसलमान है। अुन पर हमला करनेकी कोशिश हो रही थी। आखिर लडके बापूजीको देखकर और चिढ गये। वे शान्त नही हुअे, बल्कि ज्यादा शोरगुल मचाने लगे। बापूजीने तीन बार मौन तोडा और तीन बार अूची आवाजसे

कहा, "क्या है? मुझे मारो, मुझे मारो। मुझे क्यो नही मारते?" और वे आगे बढने लगे। आगे नही जाने देनेके लिये हम बापूजीके रास्तेमे अड़ गअी। अितनेमे अिस घरमें रहनेवाले अेक मुसलमान भाअी दौडकर बापूजीके पीछे खडे हो गये। अुनको देखकर अेक-दो लडकोने अीटके ढेले फेके। सद्‌भाग्यसे अीटसे किसीको चोट न लगी। अगर अैसा होता तो बापूजीकी खोपडीमें से अेक हिन्दू लड़केके हाथ खून तो निकलता ही! शायद और भी कुछ हो जाता। लेकिन अन्तमे बापूजीकी मृत्यु जिस तरह हुअी, अुसे देखनेसे अैसा लगता है कि अेक हिन्दूके प्रहारसे अुनकी मृत्यु होनेकी आगाही ता० १ सितम्बर, १९४७ को ही मिल गअी। क्या आजकी यह घटना अेक तरहकी आगाही ही होगी?

आखिर बापूजीने अत्यन्त करुण स्वरमें कहा "मुझे मेरा अीश्वर पूछता है तू कहा है? मै बहुत दुखी हो गया हू। यही तुम्हारी १५ अगस्तकी शाति थी न?" थोडी देरमे मिलिटरीवाले आ पहुचे। सब लडकोको बाहर निकाल दिया गया। बाहर टियर गैसका अुपयोग भी करना पडा। करीब १२-३० को हम अदर गये। बापूजीने प्यारेलालजी और चारुबाबूको अदर बुलवाया। अुनसे कहा "अब तो मै कल नोआखाली कैसे जा सकता हू? अिस हालतमे जाना क्या वाजिब है? तुम ही सोचो। अब अीश्वर मुझसे क्या करवायेगा, सो तो मै नही जानता। पर नोआखाली जाना तो अब हो ही नही सकता।"

अितनेमें प्रफुल्लबाबू, अन्नदाबाबू, नृपेनबाबू वगैरा मंत्री आये। अुन्होंने बापूसे कहा . "बापू! हम हिन्दू महासभावालोंको गिरफ्तार करते हैं। . . . को अभी पकड़ लेते हैं।"

बापूने कहा "अिस तरह गिरफ्तार करना ठीक नहीं। अुन लोगों पर जिम्मेदारी डाल दो। अुनसे कहो, 'तुम लड़ना चाहते हो या शान्ति फैलाना? हमें तो तुम्हारी मदद चाहिये।' और अुन लोगोंसे जो जवाब मिले, अुस पर विचार करो।"

अिस तरह सलाह-मशविरा करके वे सब अपने-अपने मकान पर जानेको रवाना हुअे। रातके १२-३० बज चुके थे। फिर भी लोग शोरगुल मचा रहे थे। बाहरसे अब भी आवाजें आ रही थीं 'सुहरावर्दी गुंडा कहां है?' करीब १-३० बजे सब शान्त हुआ।

आज रक्षाबंधनका दिन था। हम दोनोंने कअी हिन्दू-मुसलमान भाअियोंको राखी बांधी थी। सिर्फ अेक बापू ही बाकी थे। बापूने हमसे कहा "तुम मुझे राखी बांध सकती हो। बहन या बेटीका रिश्ता अेक ही है न?" यह सुनकर हमने राखी बांधी थी। अुसी रोज तूफान भड़क अुठा। हम दोनों बातें करती थीं कि हमने अगर साफ दिलसे, अीश्वरको साक्षी रखकर राखी बांधी होगी, तो बापूजी जरूर अिस कसौटीमें से फतहमंद होकर बाहर निकलेंगे। आभाबहनने मुझसे कहा कि आज तो हमारी भी कसौटी है। हम दोनों

ओश्वरसे श्रद्धापूर्ण हृदयसे माग रही थी, 'हे ओश्वर! आज हमने जो राखी बाधी है वह फले। तू ही बचानेवाला है।' मानो ओश्वरने हमारी प्रार्थना सुनकर बापूजीको बचा लिया, भले ही दूसरी तरह।

सब करीब दो बजे सो सके। अितनेमे ३-३० बजे और प्रार्थनाका वक्त हुआ। बापूजीने सबको जगा दिया।

हैदरी मेन्शन, बेलियाघाटा,
सोमवार, १-९-'४७

कल रातको यह सारा तूफान हुआ। हमे कल्पना तक नही थी कि अब आजका दिन किस तरह गुजरेगा। क्योकि कल रातकी घटना आगे क्या रूप लेगी, यही अेक विचार सबके दिमागमे घूम रहा था।

सुबहकी प्रार्थनाके बाद बापूजीने सरदार, चिमनलाल-भाअी, प्रभाकरजी, डॉ० सुशीलाबहन नय्यर, सैयद जहीर, मणिबहन, दुर्गाबहन और सुशीलाबहन गाधीको खत लिखे। सात बजे घूमनेके लिअे बाहर गये। फिरसे मिलिटरीका पहरा लग गया। पर लोगोने घूमनेके वक्त अशाति नही पैदा की।

लौटनेके बाद मालिश हुअी और स्नान किया। रोजके कार्यक्रममे बापूजी नौ बजे फारिग हुअे। अितनेमे लोगोके झुडके झुड आने लगे। क्योकि वे सब रातकी खबरें पा चुके थे। मुलाकातियोका ताता बध गया। बापूजी बहुत ही गभीर और गमगीन दिखाअी देते थे। जवाहरलालजीका तार मिला।

जवावमें वापूजीने लिखा कि पिछली रातको जो कुछ हुआ, अुसके कारण मैं तुरत नही निकल सकूगा । मुलाकातियोंके साथ भी रातके प्रसगके वारेमे वाते हुअी । १-४५ को मिट्टी लेकर कुछ आराम लेनेकी खातिर लेटे, अितनेमें खवर आअी कि शहरभरमे कत्लेआम शुरू हो गया है । वड़ावाजार, वाअु-वाजार वगैरा मुख्य-मुख्य स्थलोमे दगा शुरू हो गया । दस-दस मिनटके वाद खवरे आती रहती थी । ज्यो-ज्यों खवरें आती गअी, त्यो-त्यो वापूजी गहरेसे गहरे आत्ममथनमें डूवते गये । हर रोज दो वजे वे सतरे या और कुछ फल लेते थे, मगर अैसी खतरनाक खवरे सुनकर अुन्होने फल खाना छोड़ दिया । कुछ मुसलमान वेलियाघाटा लौटे थे । अुन पर आक्रमण होनेसे निर्मलवावू वहा दौडे । अिन मुसलमानोको मोटर ट्रकमें वैठाया और अपने ड्राअिवरकी मददसे अुनको मुसलमान मुहल्लेमे ले जानेका अिन्तजाम किया । यह ट्रक चलने लगी अितनेमें किसीने अूपरसे वम फेंका । दो आदमी घायल हुअे और नीचे गिरे । यह खवर मिलने पर वापूजीने अुनको देखनेकी अिच्छा वताअी । आभावहन अपने मामासे मिलने शहर गअी थी । अुनके जानेके वाद दगा मच गया । अिसलिअे दो वजे तक वे नही लौट सकी । वापूजीको अुनके लिअे फिक्र होना स्वाभाविक था । वापूजीने मुझको लिखा " तू यहा ठहर जा । मैं और अन्य भाअी घायलोको देखनेके लिअे जाते है । " मैंने घर पर ठहरनेसे अिनकार कर दिया । अिसलिअे वापूजी, मैं, निर्मलवावू, अैलेनभाअी (अे० पी० के प्रतिनिधि) हम चार-पाच व्यक्ति गये ।

बड़ा भयकर दृश्य था। घायल आदमियोंके सीनेसे खून बह रहा था। मक्खिया भिनभिना रही थी। आखे फटी हुअी थी। मजदूर होगे, क्योंकि कमरमे बधे हुअे चार आने अिधर-अुधर पडे थे। फटी हुअी धोती पहनी थी। अैसे निरपराध आदमियोको अिस तरह गिरे हुअे देखकर बापूजीके मुह पर दर्दकी जो रेखाये खिच आअी, अुन्हे देखा नही जाता था। मै अुन लाशोको देख सकी, मगर बापूका करुण चेहरा न देख सकी। दो लाशे देखी और घर आये। आकर शैलेन चटर्जीने बापूसे पूछा "बापू! आप कैसे रास्ता निकालेगे? क्या अुपवास करेगे?"

बापूने लिखकर जवाब दिया "तुमने ठीक अनुमान किया। भीतर प्रार्थना कर रहा हू। देखे रातको कुछ प्रकाश मिलता है या नही।"

अितनेमे छ बजे आभाबहन आ पहुची। वे बाल-बाल बचकर आयी थी। अुनकी मोटर पर पत्थर फेके गये थे। अुन्होने भी शहरकी हालत बयान की। आजकी प्रार्थना घरमे ही हुअी। 'हरिने भजता हजु कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे'——यह गुजराती भजन गाया गया।

प्रार्थना चल रही थी अुसी वक्त शहीदसाहब, अेन० सी० चटर्जी और अन्य बहुतसे भाअी आये और सभीने शहरका हाल सुनाया। सभीने अितना स्वीकार किया कि हिन्दू पागल बन गये है। लेकिन मुसलमान भी बडी तैयारिया कर रहे हैं। अभी तक तो शात रहे हैं। अेक मारवाडी भाअीने पूछा कि हम क्या मदद करे?

वापूजीने कहा "जब तक मैं खुद कुछ न करू, तब तक कोओी भी अपदेश देनेका मुझे क्या अधिकार है? मैं तो जहा कत्ल चल रहा है, वहा अभी पहुच जाअू। लेकिन फिर लोग मेरे पीछे पडेंगे और लोगोकी दृष्टि मुझे बचानेकी ही रहेगी। कोओी भी मुझे मरने नही देगा। कल रातको जब यहा दगा हुआ, तब मैं तो जहा लाठिया चल रही थी, वही जाना चाहता था। लेकिन अिन दोनो लडकियोने मुझे जाने ही नही दिया। अिसलिअे मेरे प्रति लोगोका जो प्रेम है, वह मुझे वहा जाने नही देगा। फिर भी मैं तुमसे अितना तो जरूर कहूगा कि तुम अगर जा सको, तो जहा तुम्हारा प्रभाव पडे वहा जाओ और लोगोको शान्त रखनेकी कोशिश करो। क्योकि मैं मानता हू कि जिस मुहल्लेमें तुम्हारी अितनी बडी-बडी दुकानें है, अुसमें तुम्हारा प्रभाव जरूर पड़ेगा। और अितने पर भी अगर वे मार डाले तो मर जाओ।"

कुछ आदमी बोले "यह सब सिक्ख कर रहे है। पजाबका बदला यहा लिया जा रहा है।"

बापूने कहा "लोगोको अितना भी खयाल नही है कि बदला लेना है तो देना भी पड़ेगा। न मालूम अब क्या होगा! अीश्वर क्या कराता है, वही देखना बाकी है।"

आज बापूजी पांच वक्त पाखाने गये, क्योकि बापूजीका मन बहुत अशात था। मैंने खानेके लिअे पूछा, तो अुन्होंने लिखा कि "मेरे मनमे बड़ा अुद्वेग होनेसे मैं आज

खा नही सकता। सुबह भी मैंने जो खाया, वह अगर न खाया होता तो अच्छा होता। लेकिन मनुष्यकी मूर्खताका भी कोअी अन्त है? अिसीलिअे भोगना पडता है।"

सबके जानेके बाद बापूजी कुछ समय अिधर-अुधर टहले। फिर गरम पानी और ग्लुकोस लिया। दूसरा कुछ भी न खाया। फिर वक्तव्य निकाले गये। श्यामाप्रसाद मुकर्जीने भी वक्तव्य निकाला। अितनेमे दस बजे। राजाजी आये। रातको बारह बजे वापस गये। राजाजी, बापूजी वगैराकी खानगी मत्रणाअे चल रही थी। मैं और आभाबहन अिसी विचारमे बैठी थी कि न जाने अिसका क्या नतीजा आयेगा, और सोचते-सोचते वही सो गयी। जब राजाजी गये तब बापूजीने हम दोनोको जगाया और कहा "कलसे मेरे लिअे कुछ भी नही पकाना।" हम दोनो नीदमें से अुठी थी, अिसलिअे यह सुनकर फटी आखो देखती रही। क्षणभर कुछ समझमे ही नही आया। फिर मैंने कहा "क्यो, बापूजी?"

बापूने कहा "कलसे मेरे अनशन शुरू होते है।"

आभाबहनने पूछा "लेकिन कितने दिनोके लिअे?"

बापूने कहा "अुसकी मर्यादा नही है। शाति न हो जाय तब तक। सिवा पानीके और कुछ भी नही लूगा। जरूरत लगेगी तो नीबू या सोडेका अुपयोग करूगा। हो सके तो करना है, नही तो मरना है। या तो शान्ति कायम होनी चाहिये या मैं मरूगा।"

हम अेक-दूसरेकी ओर देखती ही रह गअी। बापूजीके अैसे अुपवासोमें अुनकी सेवा-शुश्रूषा करनेका हमारी जिन्दगीमें यह पहला ही अवसर था। और कोअी अनुभवी भी नहीं था। बापूजीने कहा - "तुम्हारी दोनोकी जिम्मेदारी है। तुम अपनी तबीयत अच्छी तरह सम्हालना। नियमके मुताबिक खाना, पीना, टहलना और सोना। और नियमित रहोगी तो मेरी सेवा कर सकोगी।" बाका दृष्टांत देते हुअे कहा कि "मेरे जितने भी अुपवास हुअे, अुनके बीच बा अपने स्वास्थ्यको खूब सम्हालती, क्योंकि अुसे मेरी सेवा करनी थी। अिसलिअे तुम दोनो खूब सावधान रहना। तनिक भी घबराना नहीं। तुम्हारी खास जिम्मेदारी है।" साढे बारहको हम सो गये।

बापूजीके आजके मुलाकातियोंमें आर्यनायकम्‌जी, बिहारके कार्यके सम्बन्धमें आये हुअे अफसर, श्यामाप्रसादजी, हिन्दू महासभाके सेक्रेटरी, मारवाडी भाअी, प्यारेलालजी, चारुबाबू और क्षितीशबाबू थे। राजाजी आखिरी थे।

८

अुपवास – १

बेलियाघाटा,
मंगलवार, २–९–'४७

३-३० को प्रार्थनाके बाद बापूजीने सरदार, मणिबहन और राजकुमारी बहनको खत लिखे। अेक खत चिमनलाल भाअीके नाम लिखवाया। फिर गरम पानी (सादा) पिया।

सुबह प्रार्थनामें 'जीवन जब सुकाअी जाय'* — गुजराती भजन गाया। बापूजी कहते थे कि बहुत करके यह भजन रवीन्द्रनाथ टागोरने यरवडा जेलमें अुपवासके वक्त लिख भेजा था।

आज हरअेक पत्रमें बापूजीकी अेक ही बात बार-बार आती थी "पद्रह दिनोंकी शांतिके बाद फिरसे यहां अशांति शुरू हुअी है। अिसलिअे अिसे छोडकर मैं पंजाब कैसे जा सकता हूं? मेरा धर्म क्या होना चाहिये, यह मैं सोच रहा था। सोचने पर मुझे साफ मालूम हुआ कि अुपवासके सिवा मेरे पास और कोअी साधन नहीं है। और अब अुसका अुपयोग करनेका अवसर आया है। अिसलिअे मैंने कल सुबह ८-१५ से अुपवास शुरू किये हैं। ये कब तक चलेंगे, वह

* कविवर टागोरका बंगला गीत, जिसका स्वर्गीय महादेव-भाअीने गुजराती अनुवाद किया था। देखिये 'महादेवभाअीकी डायरी' — भाग २, पृष्ठ ३७२।

तो मै नही बता सकता। मै तो मानता हूं कि जब तक अीश्वर अिस शरीरसे काम करवाना चाहता है, तब तक मै जिन्दा रहूगा। नही तो मेरे जीनेसे फायदा ही क्या है? किसीको घबडानेकी या दौड़कर यहा आनेकी जरूरत नही।"

शहीदसाहबने पूर्व बगालके मुसलमानोके नाम अेक वक्तव्य निकाला था, जिसका अर्थ यह था कि 'तुम्हे खामोश रहना चाहिये और यहाके मुसलमान भी अशात न हो।"

राजाजीने अेक वक्तव्य निकाला था "बापूजीको अुपवास न करनेके बारेमे समझानेमे मै नाकामयाब रहा हू। लेकिन मै अितना जरूर कह सकता हू कि अगर आप सब शात रहेंगे, तो अुनका अिरादा पजाब जानेका है ही। वहा कअी स्त्रिया और बच्चे अुनके दर्शनके लिअे आतुर हो अुठे है। लेकिन अुनको पंजाब भेजना या न भेजना आपके हाथमे है। मै चाहता हू कि अिन अुपवासोंसे हम बापूको बचा ले।"

रातको शांतिसेनाकी टोली शहरमें 'राअुण्ड' लगा रही थी। फिर भी खबरे आती थी कि शहर तो जल ही रहा है। निर्मलबाबू पहले शरदबाबूके घर और बादमें अुस जगह गये जहा दो लड़कोने दगेकी शुरुआत की थी। आठ बजे बापूजी अुठे। बादमें मालिश-स्नान वगैराका कार्यक्रम रहा। डॉ० दीनशा महेताने बापूजीकी शरीर-सम्बन्धी जाच की। हृदयकी धड़कन कभी-कभी टूटती है। १९ मिनटमे चार बार हृदयकी धड़कन नही सुनाअी दी। अिस पर डॉ० महेताने कहा कि

बापूजीको चार बोतलसे भी ज्यादा पानी पीना चाहिये । (अेक बोतलमे अेक पाअुण्ड पानी रहता था) बापूने कहा . "देखता हू मैं कितना पी सकता हू । अगर मेरे दिलमे रामनाम बस जायगा, तो मुझे कुछ भी नही करना पडेगा । आज मैं बहुत स्वस्थ हू । वरना मैं सो ही नही सकता था ।"

बारिश बहुत थी । मानो कुदरतने भी आसुओका दरिया बहाया हो । चारो ओर अुदासी छा गअी थी ।

१०-३० को अेनिमा, स्नान वगैरासे फारिग होकर बापू कमरेमें अपनी हमेशाकी जगह पर जा बैठे । ८ औस गरम पानी लिया, जिसको पीनेमे बहुत समय लगा । शरदबाबूके घरसे वापस आये हुअे निर्मलबाबूने खबर दी "यह सारा तूफान सिक्खो और बिहारियोने किया है । बादमे बगाली लोग अुसमे शरीक हुअे । अब भी लूट-मार बहुत चल रही है । लोगोंने शियालदा स्टेशन पर अेक मुसलमानकी होटल जला दी है । अिससे शरदबाबू कहते है कि अिस तूफानके पीछे खास लोगोका हाथ है । वे अुनके नाम भी जानते है । शाति स्थापित करनेके लिअे गये हुअे शचीन मित्रको हिन्दू हमलाखोरोने छुरी भोककर मार डाला । और भी बहुतेरे लोग घायल हुअे है ।" १२-३० को बापूजी सब पानी पी गये । पानी पीनेमें खासा अेक घटा निकल गया । बापूजीने हमें सूचना दी . "तुममें से अेक तो बारी-बारीसे यही रहा करे, जिससे कामकाजमें सहूलियत हो ।" (यह

कहनेके पहले ही हमने अपनी दोनोकी वारी तय कर ली थी ।)

वापूजीको अव कमजोरी लगती है । आवाज भी वहुत धीमी निकलती है । अेक वजे श्यामाप्रसाद मुकर्जीका वक्तव्य जाच गये । डेढ वजे तक कुछ आराम करनेके वाद फिरसे ८ औंस गरम पानी पिया । अितनेमें विसेनभाअीने आकर खवर दी कि झाकरिया स्ट्रीटमें चारो ओर गोलिया और लूटपाट चल रही है । अव क्या किया जाय ? मिलिटरी मस्जिदमें घुसकर लोगोंको परेशान कर रही है । वापूने विसेनभाअीको वहा रवाना किया । हमारे निवास-स्थान पर खाने-पीनेका कुछ अिन्तजाम न था, अिसलिअे वीअम्मा — हमारे खाने-पीनेका अिन्तजाम करनेवाली वहन — हमारे लिअे खाना भेजती थी । लेकिन शियालदाके पुल पर गोलिया चल रही थी, अिसलिअे मोटर लौट गअी ।

दो वजे वापूजीको डाकके कुछ पत्र पढ सुनाये । दोपहरको वदूक दागनेकी आवाज आती रहती थी ।

सवेरे फिरसे जवाहरलालजीका तार आया कि पजाव जल्दी आ पहुचना चाहिये । अिस पर वापूने कहा · "मैं मन ही मन खुश हू, क्योंकि मुझे लगता है कि मै कुछ भी तो कर रहा हू । मैं पहले अस्वस्थ था और सो भी नही सकता था ।" घीकी मालिश करते वक्त वापूजी पौन घटे सोये । ३-४५ को आर्यनायकम्‌जी आये । निर्मलवावू खवर लाये कि पुलिसवाले जैसा चाहिये वैसा काम नही करते ।

अिस वक्त खून तो नही होते, पर लूटमार जोरशोरसे चल रही है। साथ-साथ गोलीबार भी खूब चल रहा है। प्रफुल्लबाबूने अेक सूचना निकाली है कि हरअेक फिरकेके अगुआ यहा आकर मिलें। अिसमें बापूकी हाजिरीकी जरूरत नही। अिस पर चर्चा की जाय कि अब क्या किया जाय। अखबारवाले बापूके वक्तव्यकी तीन लाख नकलें हिन्दी, अुर्दू और बगलामे छापकर बाटें। अैसा करनेसे शायद यह मामला काबूमे आ जाय। अिस तूफानकी जिम्मेदारी खासकर सिक्खो पर है। ३-४५ को ६ से ८ औंस ठडा पानी पिया, जिसे पीनेमे आधा घंटा लगा।

४ बजे शरदबाबू और बक्षी हरद्वारजी आये। शरदबाबूके साथ यो बातचीत हुअी :

बापू — अब क्या हो सकता है?

शरदबाबू — (कुछ देर तक रुककर) आपको बाते करनेकी अिजाजत है?

बापू — जरूरत होने पर तो बोलना ही चाहिये न? राजाजीने दो घटे तक मेरे साथ सिरपच्ची की, लेकिन वे असफल रहे। वे बडे बुद्धिमान आदमी है, अिसलिअे अुन्होने तरह-तरहकी दलीलें पेश की। लेकिन मेरी अतरात्मा अेक भी दलीलको स्वीकार न कर सकी। आखिर राजाजीने अेक तार जवाहरलालजीके नाम भेजा। मगर मैंने कहा कि अिस हालतमे मैं बंगाल कैसे छोडू। दूसरा तार मुसलमानोका है, जिसमें वे लिखते है कि नोआखाली क्यो जाते है? पाकिस्तान

पंजाबमे जाअिये। तीसरा तार रामेश्वरी नेहरूका है कि अगर आप लाहौर आयेंगे, तो सबको तसल्ली मिलेगी। मिलिटरीसे कुछ नही होता।

शरदबाबू — मै हिन्दुस्तानके बंटवारेके खिलाफ था। मै हमेशा आपके सामने साफ दिलसे बाते किया करता हू। मै frank रहता हू और अिसीलिअे आया हू। आज तक मै नही आया था, क्योकि मै मानता था कि अब मै आपके लिअे बहुत अुपयोगी नही हू।

बापू — यहा बहुत लोग आये। सबने मिलकर सलाह-मशविरा किया। हिन्दू महासभाके देवेन्द्र मुकर्जी आये थे। जे० सी० गुप्ता, शहीदसाहब और मुस्लिम लीगके आदमी भी आये थे। वे सब मुझसे पूछते थे कि शरदबाबूको क्यो नही बुलाते? अुनको बुलाअिये, क्योकि हमे शक है कि फारवर्ड ब्लॉकवाले यह दंगा मचाते है और वे ही अिसके लिअे जिम्मेदार है। मगर मैने तो जवाब दिया कि वे किसी भी समय आ सकते है।

शरदबाबू— आपके प्रार्थना-प्रवचनोमे अैसा भाव रहता था, मानो मेरी आपको अब कुछ जरूरत नही है। आप अैसा भी मानते है कि शरदबाबू पानीकी तरह पैसे हड़प कर जाते है।

बापू — तब आपका पहला धर्म तो यह है कि आप मेरी सब शकाओको निर्मूल करें। और अैसा करनेसे ही आप मेरे सच्चे दोस्त बन सकेंगे। मै हरअेकको 'डीयर फ्रेंड' लिखता हूं। अिसका अर्थ यह है कि सच्चे मित्र अेक-

दूसरेसे साफ दिलसे पेश आते है। अिस तरह मैं 'डीयर फ्रेंड' लिखकर वादमें सब स्पष्ट रूपसे लिख देता हूं। वैसे सुहरावर्दी साहव भी कहते हैं कि आप पानीकी तरह पैसा खर्च करते हैं। अेक वक्त मुझ पर भी अिलजाम लगाया गया था कि दक्षिण अफ्रीकामें जो कुछ अिकट्ठा हुआ था, अुसमें से मैंने वहुतसा पैसा चुरा लिया था और अेक लाख रुपये वैंक ऑफ अिंडियामें जमा करवाये थे। सच पूछो तो अुस वक्त मैंने अेक कौडी भी मेरे लिअे या मेरे वच्चोंके लिअे नहीं रखी थी। लेकिन सत्यको डर काहेका? आपको भी अपने खिलाफ लगाये गये अिलजामोंका लोगोंके सामने जवाब देना चाहिये था या मुझे लिखना था तो मैं फैसला कर देता। अिसको कहते हैं सच्ची दोस्ती।

शरदवावू — अच्छा, अव हम पुरानी वातोंको भूल जायें। मैं मुख्य वात पर आअू। फारवर्ड व्लॉकके वारेमें आपको कुछ कहना है?

वापू — हिन्दू महासभाके लोग नुक्ताचीनी करते हैं कि अिन दंगोंमें फारवर्ड व्लॉकके आदमी खास भाग ले रहे हैं। अिसलिअे मुझे आपसे पूछना पडता है।

शरदवावू — आप मानते हों तो भले, मगर मैं तो फारवर्ड व्लॉकके कअी लोगोंको पहचानता हू। मेरे लिअे परिस्थिति मुश्किल है, फिर भी मैं आपसे कहता हूं कि हिन्दू महासभाके वहुतेरे लोग अिसमें जिम्मेदार हैं। मेरे पास अुनके नाम भी हैं। वे ही सिक्खोंको वहकाते हैं और कहते

है कि पंजाब तुम्हारा देश है और अुसके लिअे तुम्हे कुछ भी दुःख नही होता? अुन्होने ही बार-बार अैसा कहकर यह अुत्तेजना फैलाअी और दंगे-फसाद कराये है।

बापू — मेरे पास जो लोग आये थे, अुन सबको मैंने अेक ही नसीहत दी है कि पहले अपना अंतर शुद्ध कर लो। मुझमे तो अितनी शारीरिक शक्ति नही है। पर मैं यह चाहता हू कि मुस्लिम नेशनल गार्ड और हिन्दू महासभाके स्वयंसेवक मोटर या लारीमे अेक साथ मिलकर हरअेक मुहल्लेमे घूमे। अैसा न करना हो तो यह जाहिर कर दो कि हम लड़ने पर तुले हुअे है। लेकिन अिस तरह पीछेसे छुरा क्यो भोंकते है? फारवर्ड ब्लॉक वाले और महासभावाले अेक-दूसरेके मत्थे दोष क्यो मढ़ते है? मिलिटरीकी मददसे हम कब तक जीयेंगे?

अितनेमें चाय आअी। शरदबाबू बहुत कडक चाय पीते है। सो बापूजी मजाकमे बोले· "मैं तो अैसी चाय फेंक दू, मगर शायद strong tea is better than weak independence. — कडक चाय कमजोर आजादीसे बेहतर है।" (सब हंस पड़े)

शरदबाबू — जबसे पंजाबी आर्म्ड पोलिस आयी है, तभीसे बंगालका मामला बिगड़ा है। तो क्या सुहरावर्दी साहबको गोरे लोगोकी मिलिटरी चाहिये?

बापू — गोरे लोगोकी तो नही, लेकिन मिश्र मिलिटरी चाहिये। मैंने तो अुनसे कहा है कि मेरे और आपके विचारोमे

काफी अंतर है। अगर सब स्वयंसेवक शुद्ध और साफदिल हो जायें तो शांति कायम हो जाय। लेकिन अिससे पहले आप सब नेताओंको साफदिल होना चाहिये और आपसे स्वयंसेवकोंको शुद्ध मार्गदर्शन मिलना चाहिये। आप सब क्या करना चाहते हैं, वह स्पष्ट रूपसे अेलान कर दें और अैसा करनेके लिअे सब नेता निकल पड़ें। अिनमें से अेकाध नेता मरे भी, तो कोअी हर्ज नहीं। मैं तो यहां तक कहता हूं कि अगर वे साफ दिलसे सेवा करते-करते सबके सब मर जायं तो मैं नाच अुठूंगा। कल ही की बात है। आश्रितोंकी अेक मोटर जा रही थी। अुस पर किसी पागलने बम फेंका और दोकी मृत्यु हुअी। मनु मेरे पास थी, सो मैंने अुसको लिखकर दिया 'मेरा अुद्वेग कअी गुना बढ़ गया है।' सीतारामजी, वसंतलालजी वगैरा भी आये थे। अुनसे भी मैंने कहा कि आपको वहीं रहना चाहिये और अगर कोअी मारे तो मर जाना चाहिये। लेकिन मैं यह सूचना देता हूं कि आप प्रफुल्लबाबूसे मिलें। वे बंगाली हैं और खादी-भक्त भी। यद्यपि अब तो खादी भी जानेवाली है। क्योंकि वह देहातका अुद्योग है और आज तो देहातके अुद्योग नष्टप्राय हो रहे हैं। आज ही मेरे पौत्र (कांतिभाअी)ने खादीके बारेमें लिखा है। मैं खुद तो अुसे नहीं लिख सकूंगा, क्योंकि मुझमें अितनी ताकत नहीं है। मैंने अुसे जवाब देनेका काम मनुको सौंप दिया है। खत गुजरातीमें न होता, तो मैं आपको पढ़नेके लिअे दे देता। अगर आपको जल्दी न हो, तो अिस लड़कीसे समझ लेना। आभा तो बंगाली है ही। वह समझा सकेगी कि खादीके

बारेमे मेरे विचार कितने दृढ़ होते जा रहे हैं। खैर हम दूसरी बातों पर अुतर गये। अेक 'पीस प्रोसेशन'—शांति-जुलूस निकालना चाहिये। मगर ध्यान रखना कि अगर सच्चाओी न हो तो कुछ नही होगा। पोलिसवाले हों या न हों, लेकिन स्वयंसेवकोंका संगठन अच्छी तरह बना रहना चाहिये। अैसा हो सके तो पोलिसवाले चले जायं और कलकत्तेमें लहूकी नदिया भी बहने लगें, तो भी अिन सबका मुकाबला मैं कर सकूंगा। लेकिन अेक शर्त है कि अुसमें आपको और मुझे नंगे पैर घूमना होगा। चाहे रात हो या दिन, अुसकी किसीको परवाह न होगी। अिसको मैं कहता हूं 'पीस मिशन'। लेकिन मुझे लगता है कि अैसा सोचनेवाला मैं अकेला ही हूं। मै आपकी मददकी आशा करता हू। अगर आप मेरी मदद कर सके, तो झगड़नेसे क्या फायदा? जिसकी जरूरत थी, वह चीज मिल गयी। फिर भी दंगा-फसाद मचानेका अिरादा हो, तो शरारती लोगोंको मिनिस्टर बनानेको मै तैयार हूं। मेरे कहते ही ये लोग अिस्तीफा पेश करेंगे। सही तरीका तो यह है कि कारणोंको कभी स्थान न दिया जाय। जवाहर, सरदार, राजेन्द्रबाबू हमेशा मेरे पास आते थे और कहते थे कि तुम हुक्म दो, मगर मैं कभी किसीको हुक्म नही देता। अगर मैं वहा होता, तो अनाजका अेक भी कण या कपडेका अेक भी टुकड़ा बाहरसे न मगवाता। और मेरा काम करनेका तरीका भी अलग होता। लेकिन अिस वक्त तो मै बिलकुल अकेला हू।

अितनेमे ५-१५ हो गये और प्रफुल्लबाबू और दूसरे मत्री आ पहुचे । शरदबाबू जानेको अुठे ।

शरदबाबू — स्वयसेवको और शातिके बारेमें मैं भरसक कोशिश करूगा ।

बापू — मैंने ही यहासे मिलिटरीको विदा कर दिया था । मगर हमारी कमनसीबीसे वह वापस आ गअी है । और वह भी सुहरावर्दी साहबके लिअे, क्योंकि वे डरते है । अीश्वरकी कृपा थी कि वे यहा ३१ वी तारीख, सोमवारको नही थे । अगर वे होते तो क्या होता, यह मै नही कह सकता । बेचारे नोआखालीकी तैयारीके लिअे घर गये थे । खैर, अब आप जाय, वरना ये मत्री आपको और मुझे कोसेंगे । मै भी ३१ को मरनेवाला था ।

प्रफुल्लबाबू — कलसे आपने जो अुपवास शुरू किये है, अुनके बारेमें मै कुछ न कहूगा । लेकिन अितना जरूर कहूगा कि अगर हमें जरा खबर मिली होती तो अच्छा होता । मै तो यह भी अुम्मीद रखता था कि अपना वक्तव्य प्रेसमें देनेके पहले आप हमको दिखा देंगे ।

बापू — सो तो मै भी मानता हू कि प्रेसमे भेजनेके पहले आपको वक्तव्य बताया होता तो अच्छा होता, ताकि आपको भी कुछ कहना हो तो कह सकें । लेकिन मैंने देखा कि भयानकता बढती जा रही है । अिसलिअे मेरा क्या धर्म है, वह मै सोच रहा था । अितनेमें राजाजी आये । वे बड़े विद्वान और प्रेम रखनेवाले है । अुन्होने दो घटे तक बहस की, लेकिन मै अुनकी अेक भी दलील न मान सका ।

यरवडामें जब अुपवास किये थे, तब देवदास कितना रोया, लक्ष्मी भी रोयी, मगर मैं टससे मस न हुआ। क्योंकि अैसा करनेसे मैं अपने धर्मसे च्युत होता। साढे पांचको मैंने नलीसे पानी पिया, क्योंकि अैसा न करनेसे मैं जिन्दा नहीं रह सकता। मुझे भरोसा है कि पांच-सात दिनमें शांति हो जायगी। अैसा हुआ तब तो मैं जीना चाहता हूं। मैं यह भी मानता हूं कि अैसी अशांतिसे शांति कायम होनेमें पांच-सात दिन निकल जाते हैं। अितने दिनोंमें अगर कुछ न हुआ, तो फिर कभी कलकत्तेमें शांति नहीं होगी और यह अशांति देखनेके लिअे मैं जिन्दा न रहूंगा। अितने दिनोंमें भले अीश्वर मुझे अुठा ले। आखिर राजाजीने नींबू पीनेका आग्रह किया, लेकिन मेरी दृष्टिमें तो नींबू भी अेक फल है। (ये बातें करते-करते बापूजी बहुत थक गये थे। लेटे-लेटे ही बोल रहे थे। हमें अुनके मुंहके पास अपने कान रखने पड़ते थे, क्योंकि शरदबाबूके साथ लगातार सवा घंटे तक वार्तालाप करनेसे अुनकी आवाज धीमी पड़ गयी थी।)

प्रफुल्लबाबू — मैं कुछ भी दलील नहीं करना चाहता।

बापू — मैंने तो कहा ही था कि प्रफुल्लबाबू क्या दलील करेंगे?

प्रफुल्लबाबू — हालमें तो हिन्दुस्तानमें चारों ओर हिंसा चल रही है। हिन्दू लोग समझते हैं कि गांधी हमारा दुश्मन है और हम पर जुल्म करता है। मुझसे अगर कोअी अनुचित बात हो जाय तो आप जरूर अुपवास करें, क्योंकि आप मुझे पहचानते हैं।

वापू—ये सब दलीले निकम्मी है। मैंने तो नोआखालीमें ही कह दिया था कि मैं हिन्दुओके खिलाफ अुपवास करूँगा और आजसे मुसलमानोके खिलाफ भी अुपवास करनेका मुझे अधिकार मिल जाता है। आजके ये अुपवास दोनो कौमोके लिअे है। फिर भी अगर हिन्दू अितना समझ ले कि अिस बूढेको जिन्दा रखना चाहिये, तो अपने आप ही शाति हो जायगी।

प्रफुल्लबाबू —पजाबमे जो हुआ, अुसका बदला यहा लेनेका प्रयत्न होता है। आज मैंने जवाहरलालजीसे टेलीफोन पर बाते की। कल कृपालानी आनेवाले है। आपके अुपवासोका सबसे ज्यादा बोझ मुझ पर है।

बापू —अिसे बोझ मानेगे तो हैरान-परेशान हो जायंगे।

अितनेमें शहीदसाहब आ पहुचे, अुन्होने कहा कि यह जिम्मेदारी हिन्दू और मुसलमान दोनोकी है। सबको सब जगह घूमना चाहिये।

प्रफुल्लबाबू—कल मैंने सिक्खो, हिन्दुओ और मुसलमानोको बुलाया है। अुनको यहा बुलाअूं या मेरे घर पर?

शहीदसाहब—यहा नही, मिनिस्टर हाअुसमे।

बापू—हा, हा, भले ही आपके घर पर बुलावे और जो लोग मेरे साथ बाते करना चाहें अुन्हे चुन लें। अलीभाअियोंके घर पर २१ दिनके जो अुपवास मैंने किये थे, अुनका भी अैसा ही दृश्य था।

प्रफुल्लबाबू — कल प्रेस कान्फरेन्स भी बुलायी गअी थी और सबसे मदद करनेको कहा था। अगर कोअी अखबार झूठा प्रचार करेगा, तो मै अुसे सस्पेन्ड करूंगा। कल जितने खून हुअे थे अुतने आज नही हुअे। लेकिन लूटमार और आग जारी है।

अैसी बाते करके सब छः बजे गये। अितनेमे डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी आये।

बापू — आप भले-चगे है न?

श्यामाप्रसादजी — आप अिस तरह कब तक अुपवास करेगे?

बापू — अभी स्थितिमे कुछ सुधार नही हुआ है। मै तो मृत्युके मुहमे हू। मेरी अैसी हालत नही कि भीडके बीच जाकर कुछ कर सकू। सो मुझे कुछ न कुछ तो करना चाहिये। और मेरे लिअे यही अेक अुपाय है। मै बहुत शात हू।

श्यामाप्रसादजी — आम तौर पर लोग मानते है कि अब हमे शाति चाहिये और शातिमय जीवन जीना चाहिये। ढाकासे कुछ लोग आये है और कहते है कि वहा भी अिसका असर पडा है। गाड़ी तीन-चार घंटे लेट हो गअी। लेकिन किसी भी क्षण वहा कत्लेआम शुरू हो सकता है।

बापू — हा, अगर यहाका मामला अितना ही तग रहा तो वहां कुछ भी हो सकता है। अिसमे मुझे कोअी शक नही।

श्यामाप्रसादजी — कलसे मेरी पार्टी हर जगह घूमेगी और शाति-स्थापनाके लिअे प्रयत्न करेगी।

शहीदसाहब — पी० सी० घोष कल मीटिंग बुला रहे हैं। मेरी राय है कि बापूके अुपवासका जोरशोरसे विज्ञापन किया जाय और अैसा काम हो जिससे अुपवास दो दिनमे ही बन्द हो जाय।

श्यामाप्रसादजी — आप अुपवास कब छोड देंगे?

बापू — जब आप यह रिपोर्ट दे कि कलकत्ता बिलकुल शात है।

श्यामाप्रसादजी — आपको किसी डॉक्टरकी जरूरत है?

बापू — अिन अुपवासोमे शरीरको टिकाये रखनेकी कोशिश नही करनी है। अिसलिअे मै आखिर तक काम करूगा। मै चाहूं तो दिन-रात काम कर सकता हू। लेकिन डॉक्टर यहा हैं। अिसलिअे जरूरत नही।

शामके छ बजे फिरसे बारिश शुरू हुअी। ६-३० को प्रार्थना हुअी। 'वैष्णव जन तो तेने कहीअे' भजन हमने गाया और गाते समय हम दोनो गद्‌गद हो गअी। लेकिन हमने हिम्मतसे काम लिया। ६-४५ को बापूने पानी पिया। अुस वक्त शहीदसाहबके साथ सामान्य बाते की।

मैंने बापूजीसे पूछा "अुपवास करते-करते अगर आप चल बसे, तो देशको नुकसान नही होगा? खूरेजी बढ़ नही जायेगी?"

बापूने कहा: "सब कुछ होगा मगर मैं तो अीश्वरकी गोदमें पहुंच जाअूगा न?"

फिर मैंने कहा. "मान लीजिये कि थोड़े दिन शांति रहे और फिरसे अशांति शुरु हो जाय तो?"

बापूने कहा : "अैसा हुआ तो मैं मरते दम तक अुपवास करूंगा और अुस वक्त पानी भी न पीअूगा। जिससे शांति या अशांति देखनेके लिअे मैं जिन्दा ही नही रहूंगा। हर वक्त अैसा होता रहे, तो सत्य और अहिंसा दोनो देवोकी धज्जियां अुडानेके बराबर ही होगा न? अुस पापसे मैं किसी भी जन्ममें मुक्त नही हो पाअूगा।"

दस बजे तक मैं और आभाबहन बापूजीके पैर दबाती रही। रातभरमे तीन दफा चार-चार औंस पानी पिया और तीन दफा पेशाब की। रातको बेचैनी तो थी ही, मगर सामान्यत हालत अच्छी थी।

आजके मुलाकाती शरदबाबू, अमिय बोस, सत्यरंजन बोस और शशांकशेखर थे, जिन्होने अिस बातका विचार किया कि अिस दंगेके लिअे फारवर्ड ब्लॉक जिम्मेदार है या नही और अब आगे चलकर क्या करना चाहिये। बाकीके खास-खास मुलाकाती प्रफुल्लचंद्र घोष, अन्नदाबाबू, नृपेन बोस, श्यामाप्रसाद मुकर्जी, नलिन सी० चटर्जी, देवेन मुकर्जी, मेजर पी० बर्धन, हिन्दू महासभावाले माखनलाल विश्वास और शहीदसाहब थे। अिनके अुपरांत दर्शनार्थियोकी भारी भीड़ तो थी ही।

९

अुपवास – २

हैदरी मेन्शन, बेलियाघाटा,
३–९–'४७

३-३० को हमेशाके मुताबिक बापूजीने हम दोनोको जगाया। दातुन की। प्रार्थना हुअी। भजनमें 'तुमि बधु तुमि नाथ' गाया। प्रार्थनाके बाद थोडीसी बातचीत की। सभी साथियोसे अपना-अपना धर्म अदा करनेको कहा। नोआखालीसे प्यारेलालजी और चारुबाबू आये थे। अुनसे भी कह दिया : "कोअी मेरे खातिर मत रुकना। सब अपना-अपना धर्म सोच-समझकर अुचित कार्य करे, अिसीमे मेरी सेवा है।"

सवेरे बापूने डॉ० दीनशा महेतासे कहा : "रात बडी अच्छी कटी, अैसा कहा जा सकता है। पानी भी पी सकता हू। पहलेके प्रत्येक अुपवाससे अिस समयके अुपवासमे मै बहुत ज्यादा शात हूं। अगर अैसा ही चले तो शरीर भले क्षीण हो जाय, पर मुझे लगता है कि मै अेक महीने तक टिक सकूगा।"

डॉ० महेता अिसका हेतु कुछ और समझे। अिस-लिअे अुन्होंने कहा : "हा, अिसी तरह पानी पिया करेंगे, तो कोअी हर्ज न होगा।"

वापू वोले : "मेरा कहनेका हेतु तो यह है कि मुझे लगता है कि अीश्वर मेरे साथ हैं। अीश्वर मेरे द्वारा क्या कराना चाहता है? और अिसी तरह 'रामनाम' हृदयमें वस जाय, तो फिर पानीकी भी आवश्यकता न रहेगी।"

अितनेमें निर्मलवावू आये। शहरका हाल सुनाया। ६-१५ को वापू मालिशके लिअे गये। डॉ० महेताने वापूकी जाच की। लहूका दवाव ९८/१५४ था। हृदयकी धड़कन कल जैसी ही थी। ८ वजे मालिश पूरी हुअी। मालिशके समय वगाली पाठ किया और कुछ समय नींद ली। १० को स्नानादि करनेके वाद हमेशाकी वैठक पर गये। आज चलनेमें कुछ कमजोरी मालूम होती थी।

किसीने शहरकी खवर दी कि रातके १२ वजे तक लूट-मार चलती रही। वादमें शांति हो गअी। वापूने कहा: "सारे दिन लूट चलती ही रही तो फिर रातके वारह वजे वाद क्या करनेका था? गुंडोंको भी सोना तो चाहिये न?" फिर हम दोनोंको और अेक वार चेतावनी दी: "मेरा आधार तुम दोनों पर है। तुम्हारे विना मैं चला सकता हूं, लेकिन तुम्हारे यहा होनेसे तुम पर ही मेरा आधार है। अिसलिअे तुम अपना स्वास्थ्य विगाड़ोगी तो मैं मर ही जाअूंगा।"

९ वजे विहारसे मृदुलावहनका फोन आया। वापूकी तवीयतके वारेमें पूछताछ की और कहा: "वापूजीके अुपवासका यहा वडा गहरा असर हो रहा है।"

वापूने आज दाढ़ी नहीं वनवाअी। अुन्होंने कहा: "अुपवास पूरे होनेके वाद वनवाअूंगा।" आगाखान महलके

२१ दिनोंके अुपवासकी बात कहते हुअे अुन्होंने बताया . " अुन अुपवासोंके समय मुझे जीनेकी अिच्छा थी । वे अुपवास लिनलिथगोकी अुद्दण्डताके खिलाफ थे । लेकिन अिन अुपवासोंमें मुझे जीना ही है, अैसा नही है । हा, अगर शाति हो जाय, तो जीनेकी अपेक्षा रखूगा । ये अुपवास तो दस दिन तक भी नही चलेंगे । या तो दस दिनोंमें शान्ति हो जायगी अथवा मैं मर जाअूगा । अैसे बहुतसे गुडोंका अितिहास मेरे पास मौजूद है, जिनके दिल अुपवाससे पिघले हैं । यह मेरी अनुभवसिद्ध बात है । मैं तो गुडोंके बीच रहा हुआ आदमी हू ।"

१०-१५ को ८ औंस गरम पानी पिया । तुषारकाति घोषने खबर सुनायी कि शहरमें परिस्थिति सुधर रही है । अुन्होंने बापूसे कहा . "अगर आप अिजाजत दें तो आपका फोटो खीचना है । अुससे शान्ति-कार्यमें अच्छी मदद मिलेगी ।"

बापू बोले : "अिस तरह फोटो खिचा कर और अुसका अुपयोग करा कर मैं अपने अुपवास नही छोडना चाहता । अगर लोग हृदयसे समझ जाय कि हम यह सब गलत कर रहे हैं, तो ही अुपवास छोडे जायेंगे ।"

१०-३० को सुरेन्द्रमोहन घोष, किरणशकर राय और अुडीसाके मंत्री वगैरा आये ।

११ बजे थोडे 'हरिजन' के लेख जाचे । १२-३० को रेणुका राय आयी । बापूजीने ठडा पानी पिया । शचीन मित्रकी मृत्यु हुअी थी, अुनकी स्मशान-यात्रा निकालनेका कुछ बहनोंने कहा । अेक बहन अंग्रेजीमें बोलती थी । अिसलिअे बापूने कहा ·

"मैं अंग्रेजी नहीं जानता। तुम आज भी अंग्रेजी बोलती हो, अिसलिअे मुझे बड़ा दुःख होता है। तुम अितनी सारी दलीलें अिस जुलूसके बारेमें करती हो। लेकिन अिनकी जरूरत नहीं है, भले वह कौमी अैक्यके लिअे मर गये हों। मान लो कि मैं भी मर जाअूं और तुम मेरा जुलूस निकालो। लेकिन अगर मैं बोल सकूं, तो जरूर कहूं कि तुम मेरा जुलूस नहीं निकाल सकती। मुझे अिसी मकानमें दफना दो।" बापूजी अत्यन्त दुःख और नाराजीसे बोलते थे। आखिर हमने अुन बहनोंसे जानेकी विनती की। वे चली गयीं। फिर बापूने थोड़ा आराम किया। राजाजीका फोन आया कि शहरमें शान्ति स्थापित करनेकी कोशिश खास करके विद्यार्थी कर रहे हैं। 'गुंडाशाही नहीं चाहिये' यह अुनका नारा है।

२ बजे बापूजीने मुझसे 'हरिजनबंधु' के लेख लिखवाना शुरू किया। ३ बजे लेख लिखवाते हुअे चन्द मिनट सोये। शरदबाबूका फोन था। बापूजीकी तबीयतके बारेमें पूछते थे और कहते थे कि मैं अपनी शक्तिके अनुसार शान्तिके लिअे काम कर रहा हूं।

जुलूसकी आवाजें आ रही थीं। अेक मुसलमान भाअीने आकर कहा: "आज नौ बजे अस्पतालमें से गोली छोड़ी गयी थी, जिससे चार आदमी जख्मी हुअे हैं और ४-५ मारे गये हैं। आप अपने आदमियोंको भेजकर जांच करा लें।"

बापूने कहा: "मैं तो यही काम कर रहा हूं न? और अिसीलिअे तो मैंने अुपवास शुरू किये हैं।"

मुसलमान भाअीने कहा "अिन्शाल्लाह, अगर आपको कुछ हो गया, तो हमारी शामत आ जायगी।"

बापूने कहा "अिस बारेमे मुझे समझानेकी जरूरत नही।"

४-४५को बापू बैठे थे। हमसे पूछा "यह पेड किसका है?" मैने कहा "यह तो लीचीका है।" "लेकिन नीमका पेड यहा है या नही?" आभाबहनने कहा "हा, है तो सही।" बापू बोले "तुम दोनो नीम खाओ। बा तो अुसको खाकर ही जिन्दा रही थी। दक्षिण अफ्रीकामें अुसका डॉक्टर मै था, और कोअी नही। मै अपने हाथोसे नीम तोडकर और पीसकर अुसको पिलाता था। तेरहवें दिन बाने कहा 'अब मुझे भूख लगी है। कुछ खानेको दीजिये।' अिसलिअे मैने फल दिये। और धीरे-धीरे केले और मूगफलीकी रोटी बनाकर बाको देता था। बा वह खाती थी। फिर मै अुसे केपटाअुन ले गया। मै बा और लडकोको दूध नही देता था, क्योकि कलकत्तेमें फूकेकी क्रिया होती है। अिसलिअे मैने कहा 'बिना दूधके हम चला सकते है।' लेकिन साबरमतीमे सतोकने माग की कि अगर लडकोको दूध-घी दिया जाय, तो अुनमे तेजी आ जायेगी। बादमे दूध देना शुरू हुआ।

'बाको मै रामायण सुनाता था। गीता नही सुनाता था, क्योकि गीता तो बा कैसे समझती? लेकिन रामायण समझ सकती थी। वह जैसे तैसे पढती थी। सुरकी समझ तो अुसे थी नही, मद्दी आवाजमे गाया करती थी।" (बापू हस पडे)

अिस तरह कुछ समय बाके बारेमे बाते चली। आज बापूके पास बाके नही होनेसे बडा दुःख हो रहा है। बाके अवसानके बाद बापूके ये पहले अुपवास है।

छ बजे अेक-दो भाअियोने बापूकी सेवा करनेके लिअे ठहरनेका कहा। बापूने कहा "मेरे शरीरकी सेवा करनेके लिअे तुम्हारा यहा ठहरना आवश्यक नही है। अगर तुम्हे मेरी सेवा करनी ही हो, तो जहा दगा चल रहा है वहा निडर होकर जाओ और शाति स्थापित करनेका यत्न करो। वही मेरी सच्ची सेवा होगी।"

६-३० को अेक जुलूस बेलियाघाटा मुहल्लेसे निकला। अुसमे हिन्दू और मुस्लिम दोनो कौमें शामिल थी। वह बापूके दर्शनके लिअे भीतर घुस आया। बापूने कहा "अगर आप शाति रख सके और मुझे देखकर कोअी किसी तरहका नारा न लगावे, तो मै खिडकीके पास खडा रहता हू और लोग शान्तिसे जाय।" लेकिन जुलूसके नेताओने कहा "यह जिम्मेदारी हम नही ले सकते। अगर कोअी नारा लगा दे तो गाधीजीको तकलीफ हो।" अिसलिअे दो हिन्दू और अेक मुस्लिम नेता मिलकर बापूके पास आ गये। मुसलमान भाअी खूब रो रहा था। अुसने कहा "आप अुपवास छोड दीजिये। खिलाफतके आन्दोलनमें हमी थे। मै जिम्मेदारी लेता हू कि अिस मुहल्लेमें कोअी दगा नही करेगा।" हिन्दू भाअियोने भी कहा "हम हिल-मिलकर रहेगे।" अुपवासके दूसरे दिन शामको शान्तिकी आशाकी पहली झलक दिखने लगी,

जब हिन्दू और मुसलमान भाअियोने साथ मिलकर बापूके समक्ष प्रतिज्ञा की।

बापूने जवाब दिया "मैंने अीश्वरको साक्षी रखकर जो निश्चय किया है और जो शर्त मैंने आप सबके सामने पेश की है, वही शर्तं जब तक सारा कलकत्ता न पाले, तब तक मैं अपने अुपवास कैसे छोड सकता हू? अगर अीश्वर मुझसे सेवा लेना चाहता होगा, तो मुझे जिन्दा रखेगा और आपको सद्‌बुद्धि देगा। साथ ही जैसे विचार आपके हृदयमे पैदा हुअे है, वैसे ही अगर गुडोके दिलमे पैदा हो जाये, तभी मेरे अुपवास छूट सकते है। अिस तरह अगर आपके ही कहनेसे मै खानेके लालचमे पडू, तो मै अीश्वरको भूल जाअूगा।"

अैसा कहकर बापूने अुनको शान्त किया और अिस दिशामे और भी ज्यादा काम करनेको कहा। ७ बजे प्रार्थना की। अुसके बाद 'हरिजनबधु' के लिअे लेखोका अनुवाद करवाया। ७-१५ को राजाजी आये। अुन्होने कहा "आज शहरमे खूब शान्ति है। लोग हिन्दू और मुस्लिम दोनो कौमोका रक्षण करते है और मिलिटरी भी बिना भेदभावके अैसा ही करती है।" आठ बजे कृपालानीजी, लोहिया, प्रफुल्लबाबू वगैरा आये। दिल्लीसे कुछ डाक लाये थे। राजकुमारीबहन बापूको पजाब बुलाती है। बापूने प्रफुल्लबाबूसे कहा "मै लिखूगा कि यहाके प्रधान मत्री मुझे आने नही देते। (सब हस पडे) मै क्या मुह लेकर पजाब जाअू? लेकिन मुझे बचानेके लिअे लोगो पर यह दबाव नही डाला जाना चाहिये कि 'तुम शान्त रहो।' शान्तिसे वे समझ जाय और सचमुच

दिलसे मुझे जीने दे तो मुझे जीना है। नही तो मैं भले ही मर जाअू। मुझे मृत्यु ज्यादा प्रिय लगेगी। मृत्यु ही हमारा सच्चा मित्र है। अुसका डर क्यो?"

९-३० को बापू सो गये। सारी रातमे दो वक्त ५-५ औंस पानी पिया। आजसे खाट पर सोना शुरू किया। (हमेशा फर्श पर ही सोते थे।)

१०

कलकत्तेका चमत्कार

हैदरी मेन्शन, बेलियाघाटा,
गुरुवार, ४-९-'४७

आज बापूके अुपवासका चौथा दिन था। प्रार्थनाके नियमके अनुसार बापू ३-३० को ही अुठे थे। भजनमे 'चरण कमल बदौं' गाया गया। प्रार्थनाके बाद ६ औंस ठंडा पानी पिया। ५-४५ को सोये। छ. बजे जागे। गरम पानी पिया और मालिशके लिअे गये। ६ से ९-४५ तक अेनिमा, मालिश और स्नान वगैराका नित्यक्रम चला। मालिशके समय कुछ देर बापू सो गये थे। ९-४५ को फिर गरम पानी पिया और पौन घंटे तक सोये। आज बापू बहुत कमजोर हो गये हैं। लहूका दबाव कम है। नाडी तेज है। खड़े रहनेमे चक्कर आते हैं। कानोंमे कुछ आवाज होती है, अिसलिअे लहसुनका तेल कानोमे डलवाया। आवाज बहुत ही क्षीण हो गअी है। अीश्वर जाने कब अिस परीक्षामें से पार होंगे।

अैसी परिस्थितिमे अेक वक्तव्य निकाला गया कि कोअी बापूके पास न आवे। १०-४५ को नोआखालीके अेस० पी० अब्दुल्लासाहब आये। बापू बोले "कैसी अजीब बात है! मै सोच ही रहा था कि अुनसे कैसे मिला जाय? और देख लो वे आ पहुचे।" अुनके साथ ५-७ मिनट बाते की। ११-३० को फिर 'हरिजनबन्धु' का कार्य करने लगे।

१२ बजे ३५ गुडोकी अेक टोली आअी। डॉ० सिन्हा आये थे। अुन्होने बापूसे बाते न करनेको कहा। बापू बोले : "कामके खातिर तो मै मरते दम तक बाते करता रहूगा।" पैतीसोने स्वीकार किया कि अुन्होने खून किया है और क्षमा मागकर बापूसे अुपवास छोडनेकी विनती की। यह दृश्य कितना अद्भुत था, यह तो प्रत्यक्ष देखे बिना शब्दोमें चित्रित करना बहुत कठिन है। अेक दुबला-पतला आदमी जल्लाद जैसे भयानक गुडो पर प्रेमसे कैसे विजय पाता है, अुसका यह हूबहू दृश्य था। अेक ओर क्षीणशरीर बापू चारपाअी पर लेटे हुअे थे और दूसरी ओर हट्टे-कट्टे शरीरवाले आदमी दयार्द्र चेहरेसे हाथ बाधकर अुपवास छोडनेकी बापूसे प्रार्थना कर रहे थे।

बापू बोले "अिस तरह अुपवास नही छोडे जायेगे। तुम सब मुसलमानोमे घूमो और अुनकी सेवा करने लगो। वे लोग संख्यामे कम है, अिसलिअे अुनकी रक्षा करनी चाहिये। और जब मेरी आत्मा मुझसे कहेगी कि तुम अुनकी रक्षा करते हो और स्थायी शाति कायम हो गअी है, तो मै अुपवास छोड दूगा।" अितनेमें दो बजे गुडोका

सरदार . . . , जिसने वड़े वाजारमें दगा कराया था, आया। अिस भाओीने अपना सारा अपराध स्वीकार किया और अपने सारे हथियार वापूको सौंप जानेका वचन दिया। अपनी पार्टीके दो-दो लड़के प्रत्येक मुसलमानकी दुकानमें रक्षाके लिअे रखे। अिसके वाद फिर साढ़े तीनको तीसरी टोली आओी। अिस टोलीके सरदारने भी अपना अपराध स्वीकार करके कहा : "मुझे सजा दीजिये। मैं और मेरी सारी टोली आपकी सजा भोगनेको तैयार हैं। लेकिन आप अुपवास छोड दीजिये।" वापूने कहा : "मेरी सजा यह है कि तुम मुसलमानोंमें जाओ और काम करने लगो। मुझे यकीन हो जायगा कि अव तुममें सचमुच परिवर्तन हो गया है, तो मैं तुरन्त अुपवास छोड दूंगा। लेकिन यह काम तेजीसे होना चाहिये। क्योंकि मुझे तुरन्त ही पंजाव जाना है। और पंजावके खातिर ही मुझे जीनेकी अितनी प्रवल अिच्छा है। अगर अव तुम देर करोगे, तो मैं अधिक दिन नहीं टिक सकूंगा।"

४ वजे सर राधाकृष्णन् आये। वापूको प्रणाम करके और 'आपको ओीश्वर देशके लिअे चिरायु दे' अितना कहकर चले गये। ५ वजे तक कओी लोग दर्शनके लिअे आते रहे। ५-३० को राजाजीका खत आया कि 'शहरमें शान्ति है और वातावरण शान्त और प्रसन्न है। रातको वापूसे मिलनेके लिअे आअूंगा।' यह खत पढकर वापूजी खुश हुअे। ५-४०को वापूजी कुछ समय सोये। वहुत थके हुअे थे। अितनेमें छ: वजे सुरेंद्रमोहन घोष, अेन० सी० चटर्जी, शहीदसाहव वगैरा

हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोके प्रतिनिधियोके साथ आये। अेक सिक्ख भाअीने कहा "आप अुपवास छोड दीजिये। हम जिम्मेदारी लेते हे कि अब कुछ न होगा।" दूसरे सब भाअियोने भी वैसा ही कहा।

बादमे बापू २५ मिनट बोले "जब मै बारह वर्षका छोटा लडका था, तभीसे मुझमे हिन्दू-मुस्लिम अैक्यके लिअे प्रबल अिच्छा थी। मेरा यह काम आजका नही, बल्कि वर्षों पुराना है। मै विलायत गया, वहा भी मेरा यह काम चलता ही रहा था। तब भला आज मै अिस कामको कैसे छोड सकता हू? आपको मालूम नही कि मेरे पोतेने (कान्तिने) मुझको लिखा था कि आप रचनात्मक कार्य कीजिये। यह काम कब तक करते रहेगे? अुसको भी आज ही मैने लिखवाया है कि यह काम आजका नही है। और अगर यह काम मै आज नही करूगा, तो रचनात्मक कार्य मै कैसे कर सकूगा? आप कहते है कि यह दगा 'कम्यूनल' नही है, बल्कि गुडाबाजी है। लेकिन गुडोको बनानेवाले भी तो हमी है न? गुडे अपने आप नही बनते। मेरे पास राजकोटमे दो गुडे थे। अुनको मै दक्षिण अफ्रीका ले गया था। अन्तमे वे समझकर सुधर गये और जब साबरमतीमे मुझसे मिलने आये, तब अुन्होने कहा कि अब हम गुडे नही रहे। अिसलिअे गुडोको बनानेवाले और अुनको मिटानेवाले हमी है। गुडे खुद कुछ नही कर सकते। आप सब प्रेमसे अुपवास छोडनेको कहते है। दगाअी लोग भी मुझसे माफी माग गये। मुझे अुपवास छोडना ही है। और वह भी जीनेके

लिअे नही, वल्कि पजाव जानेके लिअे। क्योंकि मेरा दिल वहा है। मेरे पास जवाहरके तार आये हे। लेकिन यहाकी आगको जलती छोडकर मै क्या मुह लेकर पजाव जाअू? लेकिन मै आपसे दो सवाल पूछूगा: (१) आप कह सकते है कि अव कभी कलकत्तेमे अशान्ति नही होगी? (२) और अगर होगी तो आप सव मुझे अुसकी रिपोर्ट देनेके लिअे नही आयेगे, वल्कि मै सवकी मृत्युके समाचार सुनूगा, यानी ज्यो ही दगा होगा, त्यो ही आप कहेगे कि पहले हमे मारो फिर दूसरोको? नही तो मैने जैसा विहारमे कहा है, अुसी तरह आमरण अुपवास करूगा। मै किसी धोखेमे पडना नही चाहता। अगर आप साफ नीयतसे मेरी मदद न करेगे, तो मेरा खून करेगे। अिसका जवाव दीजिये।"

शहीदसाहवने दलील की· "समझ लीजिये हम मर जाये, तो फिर आपको आमरण अुपवास करनेकी जरूरत क्यो होगी? आपकी यह प्रतिज्ञा ठीक नही है।"

वापू वोले "क्योंकि सफेद गुडे ही सव कुछ करते है। वाकी अितने वडे शहरमे चोर-डाकू तो वहुतसे होगे। अभी तक अीश्वरने मुझे अैसी ताकत नही दी कि मै अुन पर विजय पा सकू। लेकिन हिन्दू-मुस्लिम अैक्य मेरे वचपनका रसप्रद विषय है। अिसलिअे कहनेका मतलव यह है कि भले ही सारी दुनियामें आग भडक अुठे, लेकिन कलकत्तेमे कभी हिन्दू-मुस्लिम झगडा नही होना चाहिये। अिस वातकी अगर आप सव जिम्मेदारी ले और मुझे अैसा लिख दे, तो मै अुपवास छोड़ दूगा।"

अितना कहनेमें बापूजी खूब थक गये। राम-राम करने लगे। सिरमें चक्कर आते थे। बहुत बेचैन मालूम होते थे। में और आभाबहन बापूको पकडकर बैठी थी। बापू कभी सोते तो कभी बैठते। माला फिराते थे। बाकी सभी लोग दूसरे कमरेमें गये और 'अब क्या किया जाय', अिसके बारेमें चर्चा करने लगे। अुनमें राजाजी, कृपालानी, प्रफुल्लबाबू और शहीदसाहब मुख्य थे। करीब अेक घंटेकी चर्चाके बाद पहले निर्मलबाबू आये। अुन लोगोंने लिखकर दिया कि "अब कलकत्तेमें संपूर्ण शांति बनी रहेगी और अगर कुछ भी होगा तो अुसकी जिम्मेदारी हमारे सिर पर है। हम पहले मरेंगे।" प्रतिज्ञा पर अेन० सी० चटर्जी, सुहरावर्दी साहब, सुरेंद्रमोहन घोष, शरदचन्द्र बोस, सरदार निरंजनसिंह, देवेन्द्रनाथ मुकर्जी, श्री आर० के० झुंडका वगैरा लोगोंने दस्तखत किये।

"We the undersigned promise to Gandhi that the peace and quiet have been restored in Calcutta once again We shall never again allow communal strife in the city And shall strive unto death to prevent it"

अिस असली लिखावट पर अूपर लिखे व्यक्तियोंने दस्तखत किये। अितना होनेके बाद बापूने प्रार्थना करनेको कहा। 'जीवन जब सुकाअी जाय' भजन और रामधुन गाकर रोजके मुताबिक प्रार्थना की गअी। और ठीक ९-१५ को अेक औंस मोसंबीके रसका प्याला सुहरावर्दी साहबने बापूके हाथमें रखा और हिन्दू विधिके अनुसार पाव पड़कर रो

अुठे। रस पीनेके पहले बापू थोड़ा हिन्दीमे बोले

"यह फाका तोडनेके पहले आपको कुछ कहना चाहता हू। मै यह फाका तोडता हू, क्योकि मै पजाबके लिअे कुछ कर सकू। यह फाका छूटता है सिर्फ आप लोगोके अेतबार पर। और कुछ मै नही जानता हू। अगर अिसमे कोअी भी अैसी बात होगी, जिससे मुझको पछताना पडे तो बहुत ही बुरी बात होगी। मुझको जीना पसन्द है। बहुत लोग कहते है जीना अच्छा है, क्योकि तुम और खिदमत कर सकोगे। मेरेमे जीनेकी शक्ति है, मुझको जीना अच्छा लगेगा। लेकिन जान-बूझकर मै धोखेमे नही पडना चाहता हू। यहा जितने हिन्दू-मुस्लिम खडे है, अुनसे मै आशा रखता हू कि मुझको दुबारा फाका नही करना पडेगा। मुझको पहले दिन राजाजीने कहा था, 'क्या तू कोअी आशा रखकर फाका करता है?' मैने कहा था, मुझको कोअी ज्यादा फाका करने नही देगे। ३ दिन हुआ। ३० दिन भी हो सकता था।

"फिर भी आप लोगोको सावधान करना चाहता हूं कि यह होनेके बाद आप लोग सोना नही। अिसका असर नोआखाली और पजाबमे पडेगा। नोआखालीमे तूफानी मुसलमान पडे है। अगर यहा कुछ गोलमाल हो जाय, तो वहा मै किस तरह रुक सकता हू? कलकत्ता ही सारे हिन्दुस्तानकी शातिकी चाबी है। कुछ कमाना है या महल बनाना है तो बनाअिये। लेकिन सारी दुनिया जल जाय, तो भी कलकत्तेको नही जलना चाहिये। अीश्वर सबको सन्मति दे। अिन लडकियोने अभी ही सुनाया 'अीश्वर अल्लाह तेरे नाम,

सबको सन्मति दे भगवान।' बाकी आपके और मेरे बीचमे भगवान तो पडा ही है।"

अितना हिन्दीमे कहकर बापूने रस पीना शुरू किया। अुस समय सब अेक ही आवाजसे 'नारायण नारायण' बोल अुठे। वायुमडलमे अेकदम आनन्दकी लहर दौड गअी। मैं दौडकर सबको फोन करने गअी। किसी भी जगह फोन खाली न मिला। मुश्किलसे आधे घटे बाद फोन हाथ आया। मणिबहन पटेल, राजकुमारीबहन वगैराको मैंने खबर दी। सब यह खबर सुनते ही खुश हो गये।

बापूने राजाजीसे कहा "मै तो कल ही यहासे पजाब जानेका सोच रहा हू।" कृपालानीजीने कहा "कल तो आप नही जा सकते।" अन्तमे शहीदसाहबने अच्छा रास्ता ढूढ निकाला "आप जब तक अेक प्रार्थना सार्वजनिक रूपमे न करे, तब तक कैसे जा सकते है? अगर कल आम प्रार्थना करनेके लिअे जाये, तो लोग आपको कुचल ही डालेगे। परसो सोचेगे।"

जिन लोगोके पास बदूके, कारतूस, बम वगैरा हथियार थे, वे अुन्हे लेकर रातके साढे दस बजे आये। बापूने यह सब अुत्साहपूर्वक देखा। और फिर अुनके मालिकोसे कहा: "अिन्हे देनेमे जरा भी दुःख न होना चाहिये।" अुन लोगोने कहा . "हमे जरा भी दुःख नही है।"

बापूजी ११-३० को सो पाये। ७३ घटोके अुपवासके काले बादलोके बिखर जानेसे हमने मुक्तिकी सास ली और अीश्वरका अपार अुपकार माना।

११

कलकत्ता छोड़ा

हैदरी मेन्शन, वेलियाघाटा,
शुक्रवार, ५–९–'४७

रात अच्छी तरह बीती। ३-३० को बापू प्रार्थनाके लिअे अुठे। प्रार्थनाके बाद बापूजीने तकमरिया (अेक औषधि), गरम पानी और ग्लुकोस लिया। फिर सो गये। ५-४५ को जागे। बापूने थोडे खत पढे। आज मैं और आभाबहन दोनों बडी भारी जिम्मेदारीमें से मुक्त हो गअी थी, अिसकी खुशीमें पुरानी आदतके मुताबिक सुबह कॉफी पीनेके लिअे हम दोनों साथमें ही गयी। बापू अकेले ही रह गये थे, अिसका खयाल हम दोनोंको कॉफी पीनेके बाद आया। हम कमरेमें गयी तो बापूने हंसकर कहा "तुम अैसा न मान लेना कि मुझमें अब पहले जैसी शक्ति आ गअी है। अभी भी तुम्हें बारी-बारीसे ही मुझे छोडना चाहिये। और अब मेरी अिच्छा है कि मैं तुमसे जितना ज्यादा काम ले सकूं लूं। नोआखाली और बिहारमें डाक, हिसाब, मेरी व्यक्तिगत सेवा वगैराका काम मैं मनुसे लेता था। अब तो तुम दो हो, अिसलिअे तुम दोनोंकी ही मदद लूंगा।"

६-३० को मालिश, स्नान वगैराका नित्यकर्म हुआ। ९-३० तक यह सब चला। ९-३५ को सूप और पीसा हुआ साग लिया।

अितनेमें तूफानी लोग अपने हथियार बापूको सुपुर्द करने आये। जिन तूफानियोंको पकड़नेके लिअे हजारों रुपयेके कर्मचारी सरकारने रखे होंगे, अुनको सिर्फ प्रेमके बलसे बापूने पकड़ा और अपने पास खींच लायें। हथियारोंमें स्टेनगन, बदूकें, भाले, छुरियां, तीर, कारतूस, बम वगैरा बहुतसे बड़े-बड़े हथियार थे।

दोपहरको 'हरिजन' के लिअे निर्मलबाबूने अुपवासके बारेमें जो लेख लिखा था, अुसको बापूने जांचा। अितनेमें शहीदसाहब आये। अब वे क्या करें, अिसके बारेमें अुन्होंने बापूसे सलाह मांगी। बापूने कहा "अगर आपको प्रायश्चित्त करना हो, तो सत्ताके लालचमें मत फंसना।" फिर कुछ विद्यार्थियोंके लिअे रेणुका रायने संदेश मांगा। "My life is my message" (मेरा जीवन देखो, अुसीमें मेरा संदेश है।)—अिसका बंगालीमें अनुवाद कराकर बापूने दिया। ४ बजे बापूने मिट्टी ली और सोये। बादमें आर्यनायकम्‌जीके साथ आश्रमके विषयमें बातें की। अितनेमें दिल्लीके अेक अग्रवाल भाअी, जो कलकत्तेमें मिलस्टोरका काम करते हैं, आये। अुन्होंने बापूसे कहा "आपने अुपवास छोड़े हैं, लेकिन आपको धोखा दिया गया है। शहरमें किसी भी जगह शान्ति नहीं है। अभी तक कोअी अेक-दूसरेके मुहल्लोंमें नहीं जा सकते और न ट्राम-बस ही चलती हैं। तब कैसी शान्ति?"

बापूने कहा "मुझे सब लिख दो और अगर अैसा ही होगा तो मैं खुश होअूंगा। मेरे आमरण अुपवास शुरू

होंगे और कल जिन्होंने दस्तखत दिये हैं, वे सब झूठे ठहरेंगे। मुझे तो क्या होनेवाला है?"

प्रार्थनाके बाद कृपालानीजी आये। अूपर लिखी हुअी बात अुनसे कहकर बापू बोले "सभी नेताओंसे (जिन्होंने दस्तखत दिये हैं) कह दो कि अगर यह मुझे बचानेके लिअे किया गया होगा, तो अिस तरह मैं जिन्दा नहीं रहूंगा। अिसलिअे नेताओंको होशियार रहनेकी पूरी जरूरत है। अब अगर कलकत्तेमें दगा होगा, तो मैं जहां भी रहूंगा वहां अुपवास करूंगा और मरूंगा।"

अुसके बाद सी० आर० दासकी पुत्री आयी। बात-बातमें अुनसे भी बापूने कहा "अब मेरी जिम्मेदारी ज्यादा बढ़ जाती है। अगर कलकत्तेमें कुछ भी होगा, तो तुम सभी मेरे खूनी बनोगे।"

बापूने आज दिनभर खूब काम किया है। अुनका वजन ११३ पौंड निकला। अुपवासके पहले भी ११३ था। अिसलिअे पेटमें पानी भरा हुआ लगता है।

जवाहरलालजीको दिल्ली पहुंचनेका तार भिजवाकर बापूजी ९-३० को सो गये।

हैदरी मेन्शन, बेलियाघाटा,
शनिवार, ६-९-'४७

३-३० की प्रार्थनाके बाद बापूजीने हम दोनोंको बरबस लिटा दिया। बापूजीने अंडीका तेल लिया था, अिसलिअे 'कमोड' पर जानेके लिअे हमको जगाये बिना वे अकेले ही अुठे। अभी पूरी ताकत तो आअी नहीं है, फिर भी

हमको जगाया नही । जब चक्कर आने लगे, तब अुन्होंने आभाबहनको जगाया । अितनेमें बापूजीको अत्यन्त बेचैन देखकर आभाबहन चिल्लायी और यह सुनकर मैं अुनके पास दौड गअी । बिसेनभाअी और डॉ० महेता भी आ पहुचे । हम सबने मिलकर बापूजीको बिछौने पर लिटा दिया । अुस समय बापूजीने कहा "अगर मैं रामनामसे सराबोर हो जाअू, तो अिस तरह मुझे किसी सहारेकी जरूरत न रहेगी । अभी तक मुझमें कुछ अपूर्णता है, यद्यपि मैं भरसक कोशिश करता रहता हू ।"

आठसे दस तक स्नान वगैरा रोजमर्राका कार्यक्रम रहा । १०-३० को साग, सूप और दो महीन खाखरे खाये । अभी तक दूध लेना शुरू नही किया है ।

अेक बजे डॉ० सुशीलाबहन नय्यर दिल्लीसे आअी । अुन्होंने पजाब और वाह केम्पकी खौफनाक हालत सुनाअी । डेढसे दो बजे तक बापूने आराम किया । दोसे चारके बीच मुलाकाती आने लगे और दर्शनार्थियोकी भी खासी भीड जमा हो गअी ।

४-४५ को मॉन्युमेन्ट मैदानमें प्रार्थनाके लिअे गये । वहा भी बहुत भीड थी और अूपरसे बारिश भी बरस रही थी ।

प्रार्थनामें बापूने कहा "मेरे अुपवास छूट गये है, अिसलिअे मैं मानता हू कि हम सबको ज्यादा होशियार रहना चाहिये और अीश्वरका डर रखकर कार्य करना चाहिये । भले सारा हिन्दुस्तान आगमें तबाह हो जाय, तो

भी बगाल तो शान्त ही रहे। अगर आप पागल न बने, तब तो मै चमत्कार दिखा सकता हू। जिस आजादीसे बगालके हिन्दू गीता, गायत्री, सध्यावदन आदि करते है, ठीक अुसी तरह मुसलमान कुरान पढ सके, मस्जिदमे बेरोक-टोक जाये और पारसी भी बिना हिचकिचाहटके जद अवस्ताका पाठ करे, तभी कहा जायगा कि अेक भारी चमत्कार हुआ है। चौदहवी अगस्तकी रातको जो चमत्कार हुआ था, वह आपने दिखाया है, न कि मैने या शहीदसाहबने। हम तो परोसी हुअी तैयार पत्तल पर आकर बैठ गये थे।

"मै तभी जिन्दा रह सकूगा, जब आप शान्तिको जिन्दा रहने देगे। आज मै आपसे विदा मागने आया हू। पजाबसे कअी लबे-लबे तार आये है। मुझे कहना चाहिये कि मै अैसे कामोमे (बापूका शब्द यहा देती हू) अेक्सपर्ट (निष्णात) हू। यह मै गर्वके साथ नही बोलता, लेकिन अिस कामकी लगन तो बचपनसे ही मुझमे है। लेकिन याद रखिये कि मेरे जानेके बाद अगर आप फिर पागल हो अुठे, तो हमारा किया कराया सब मिट्टीमे मिल जायगा। मै तो आपसे यह अुम्मीद करता हू कि आप मुझे राजी-खुशीसे अिजाजत दे और कहे कि हम शातिकी खबर आपको भेजते रहेगे। मेरा जीवन तो 'करो या मरो' के सूत्रसे ओतप्रोत है।

"और अब फिर अगर यहा दगा होगा, तो अेन० सी० चटर्जी, शहीदसाहब और सुरेन्द्रमोहन घोष, जिन्होने मेरे अुपवास छुडानेमे दस्तखत किये है, वे सब पहले मरेगे। बाकी

मेरा तो यह दावा है कि आज तक मैंने न तो किसीकी खुशामद की और न मै किसीसे डरा। हा, अेक अीश्वरसे जरूर डरता हू, क्योकि न्याय या अन्याय करनेवाला वही है और वह हम सबका है। जो आदमी अीश्वरसे न्याय मागता हो, वह किसी मिनिस्टरके पाप या अन्यायके बारेमे नुक्ताचीनी करनेकी झझटमे क्यो फसे?

"मान लीजिये कि कभी आप यहा लडे भी तो किससे लडेंगे? आपके भाअियोके साथ न? मै आप सबसे विनती करता हू कि जिनके पास हथियार हो, वे सब सौप दे। हिफाजतके लिअे हथियार बेकार है, सिर्फ अीश्वर ही हमारी रक्षा कर सकता है। अिसलिअे हम अुससे रक्षाकी प्रार्थना करे।"

अिसके बाद प्रार्थनामे शहीदसाहबने कहा "हम खुश-नसीब और बदनसीब दोनो है। बदनसीब अिसलिअे कि १४वी अगस्तसे लेकर सत्रह-अठारह दिनो तक मिल-जुलकर रहते हुअे भी हम फिर पागल हो अुठे। और हमारे खातिर महात्माजीको अुपवास करना पडा। लेकिन खुशनसीबी अिस बातकी है कि सिर्फ ७३ घटोमे हम फिर अेक हो गये और महात्माजीके अुपवास छुडवा सके। फिरसे यहा अेक पवित्र वायुमण्डल पैदा करके वे आज यहासे जा रहे है।"

अतमे शान्ति कायम रखनेका अनुरोध करके शहीद-साहबने जाहिर किया कि 'आजसे मै महात्माजीकी फरमाअिशके मुताबिक चलूगा।'

वहासे हम ८-३० को लौटे। राजाजी और अेक दो दूसरे भाअियोके साथ बापूजीने कातते हुअे बाते की। दस बजे सो गये।

शामको प्रार्थनासे लौटकर बापूने चार औंस दूध सेवके साथ लिया।

हैदरी मेन्शन, कलकत्ता,
७–९–'४७

३-३० की प्रार्थनाके बाद बापूजी डाकके कुछ पत्र देखने लगे, पर आख लग जानेसे सो गये।

६-१५ को जागकर थोडा घूमे।

कलकत्तेमे आज बापूजीका आखिरी दिन होनेकी वजहसे दर्शनार्थियोका ताता लगा रहता था और अुनको रोकना बडा कठिन था। ९ और १० के बीच बापू मालिश और स्नानसे मुश्किलसे फारिग हुअे कि बाहर अुतनी ही भीड फिर अिकट्ठी हो गअी। धूपमे सब लोग तपते थे, सो बापूजी दरवाजे तक गये। १०-१५ को खाखरा, साग, दूध, फल सब थोडा-थोडा लिया।

मै और आभाबहन सामान जुटानेमे लग गअी। अेक तो छोटीसी जगह और हजारोकी भीड-भाड। अिस हालतमे बापूजीकी छोटी-छोटी चीजे याद करके रखनेका काम जरा मुश्किल था। अगर अेक भी चीज हम गवा दे, तो हमारी शामत आ जायगी, यह हम जानती थी।

११ से १ तक मौन रखकर वापूने 'हरिजनवन्धु' का काम किया। डेढ वजे मत्री लोग, शकरराव देव और कृपालानीजी आये और करीव तीन वजे गये। अुनके जानेके वाद वापूने कुछ आराम किया। फिरसे दर्शनार्थियोके लिअे अेक वार वाहर गये। आजकी प्रार्थना मकान पर ही ४-१५ को हुअी। प्रवचन भी छोटा था। वापूने लोगोसे शान्त होनेके लिअे अनुरोध किया, लेकिन तग जगह और हजारोंकी भीड होनेके कारण शोर वैसा ही रहा। फिर, वापूजी भी वहुत थके हुअे थे।

रातको ८-३० वजे विदा देनेके लिअे कुछ लडकिया माला लेकर आअी। अुनमे से अेक छोटी लडकी वापूकी आरती अुतारने लगी। अिस पर वापूने कहा "अिस आरतीको वुझाकर अुसमे जितना घी हो अुतना गरीवको दे दे। अिस तरह मेरे लिअे घी वरवाद करना क्या ठीक है? आज गरीवोको घीका दर्शन भी नही होता।"

नौ वजे हम वालीपुर स्टेशन पर आये। गाडी आनेमे थोडी देर थी, अिसलिअे वापूजी टहलने लगे। वापूको रवाना करनेके लिअे शहीदसाहव और अन्य मत्री लोग आये थे। जाते वक्त सवने प्रणाम किया और गाडी छूटनेके समय शहीदसाहवकी आखे डवडवा आअी। किसीको शायद शक होगा कि शहीदसाहव जैसे आदमी कभी रो सकते है? दगेमे छुरी लगनेसे घायल हुआ आदमी हाय-हाय करके वेदनासे रोने लगता है, लेकिन वापूकी अहिंसा और सत्यकी प्रेममय छुरीने सुहरावर्दी जैसे सगदिलोंको भी [illegible]

वना दिया था। यह दृश्य देखकर हमें सचमुच अैसा लगता था कि वापूके शस्त्र अमोघ हैं।

ठीक साढे नौं वजे हमारी गाडी छूटी। हम दिल्लीको रवाना हुअे और वापूने मौन लिया।

कलकत्तेसे दिल्ली जाते हुअे
सोमवार, ८-९-'४७

सवेरे ३-३० को प्रार्थनाके लिअे हम सव अुठे। अिस वक्त पार्टी वड़ी थी। अखवारके प्रतिनिधि भी वडी तादादमे थे। हरअेक स्टेशन पर भीड़ तो रहती ही थी। लेकिन वापूजी तो मौनकी वजहसे लिखा-पढी किया करते और जव थक जाते तव सो जाते थे।
